GRUDA PURANA BHASHA TIKA

1864

G. K. V.

HARDWAR

Bhagavata - Purāṇa.

60p.

Language --- Sanskrit, Hand Written.

Size --- 35x20 Cm.

(परमहंस के स्वादित कीयाँ ----------

भगववान् शुक देवजी सोवेल नमए)

Gruḍa Purāṇa Bhāshā Tīkā

1864

गरुड़ पुराण
भाषाटीका

ग॰पु॰
टी॰
२

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथगरुडपुराणसटीकलिख्यते ॥ टीका ॥ श्रीभगवान्सोईसंसार विषें वृक्षसरूपीसदां विराजे हैं कैसो नामवृक्षकोधर्मस्थूलहै वेदस्कंद हैं पुराणशाखा हैं कृत फूल हैं मोक्ष फल है ऐसो वृक्ष सरूपी भगवान हैं तिनके चरणारविंदकी सहूंजयरहो १ हे वैकुंठनाम तुम्हारे प्रसादकहेतें कृपातें तीनों लोक देखे हैं उत्तमस्थान भूर्लोक १ भुवलोक २ स्वर्गलोक ३ महलोक ४ जनलोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ अधमनीचेके लोक अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ रसातल ५ महातल ६

॥ श्रीगरुडउवाच ॥ धर्मदृढबद्धमूलोवेदस्कंदपुराणशाखाढ्यः क्रतुकुसुमोमोक्षफलोमधुसूदनपादपोजयति ॥ १ ॥ तार्क्ष्यउवाच ॥ भगवत्प्रसादाद्धि कुंठ त्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ मयाविलोकितंसर्वमुत्तमध्यममधमं ॥ २ ॥ भूर्लोकात्सत्यपर्यंतंपुरंयाम्यंविनाप्रभो भूर्लोकात्सर्वलोकानांप्रचुरंसर्वजंतुषु ३ मनुष्यंसर्वभूतानांभुक्तिमुक्तिफलंशुभं अतिसुकृतिनांलोकेनभूतंनभविष्यति ॥ ४ ॥

पाताल ७ मध्यम ८ मनुष्यलोक ते सर्व देखे हैं २ पृथीतें लेकर सत्यलोकताईं हे प्रभु मैं सर्वलोक देखे एक यमपुरी विना मनुष्य लोक के प्रचुरः कहभांति यमलोककूं जाताहै ३ मनुष्यदेह सर्वयोनिसें श्रेष्ठ है भुक्तिमुक्तिकादाता है पुण्यात्माजीव हैं जिनें मनु [illegible] मनुष्यसमान न भूत न प्राणी कोई न हुवो न कोई होनहार है ॥ ४ ॥ २

ग॰पु॰
टी॰
३

[illegible] मनुष्यजन्म [illegible] नहीं अनेकजन्मके पुण्यके प्रभावकरिकें मनुष्यदेह पाइ [illegible] हैं [illegible] देह [illegible] ऐसो मनुष्यदेह है ५ सो गरुडजी पूछे हैं हे महाराज मनुष्यदेह पुण्यकीके [illegible] और [illegible] कहांभांति सो छूटे मृत्यु हुये पीछे जीव कहां जाय है ६ और गरुडजी पूछे हैं महाराज देह छूटे पीछे [illegible] नहीं [illegible] कहा और इंद्रियनके [illegible] कहा गयो प्राणी पापपुण्यको कहां जाय के भोगे हैं सो कहो ७ हे महाराज

[illegible] स्वर्गापवर्गस्य फला [illegible] पुरुषपुर [illegible] ॥ ९ ॥ श्रीभगवानुवाच [illegible] ॥ १० ॥

[illegible] कोन भांति होय सो कहो ८ श्रीभगवान [illegible] देह [illegible] सो [illegible]

ग॰पु॰ टी॰ ४

संसार विषे वृषोत्सर्ग समान पृथ्वी पर और कोई नहीं है या कारण हे गरुड जीवतो करे अथवा मृत्यु हुए पीछे करे तो स्वर्गलोक को दा
ता है २१ हे गरुड दान व्रत यज्ञ विना प्रेत योनि ते छूटवे को उपाय वृषोत्सर्ग है २२ गरुडजी पूछे हैं अहो महाराज वृषोत्सर्ग क
ब कीजे जीवतो करे कि मृत्यु हुए पीछे करे ता को फल होय सो कहो और षोडशाकः अर्थात् सोलहे श्राद्ध को फल कहो
श्रीभगवान कहै हैं हे गरुड शाईकांडा श्राद्ध करै शाईकांडा पिंड भरै परंतु एक वृषोत्सर्ग किया विना सर्व निस्फल है ताते वृ

वृषोत्सर्गहृते नान्यत्किंचिदस्ती महीतले जीवन्वापि मृते वापि वृषोत्सर्गं करोति यः २१ प्रेतत्वं न भवेत्त
स्य विना दानव्रतैर्मुखैः २२ गरुड उवाच कस्मिन्काले वृषोत्सर्गो जीवन्वापि मृतोपि वा कुर्वे किं फल
माप्नोति प्रेतश्राद्धश्च षोडशो २३ श्रीभगवानुवाच अकुर्याच्च वृषोत्सर्गं कुरुते पिंडपातनं त्वपतिष्ठ
तिन तत्श्रेयो दातु प्रेतस्य निस्फलं २४ एकादशाहे प्रेतस्य यस्य नोत्सृज्यते वृषः प्रेतत्वं सुस्थिरं तस्य
दत्तैः श्राद्धशतैरपि २५ जीवन्वापि मृतस्यापि वृषोत्सर्गं करोति यः पितृलोकगतास्तेन पितरो मानिताः खग २६

षोत्सर्ग करनो योग्य है निश्चै करिके २४ हे गरुड एकादशा के दिन वृषोत्सर्ग करै भली विधि सों करिके करै और वृषोत्सर्ग
किये विना शाईकंडा श्राद्ध करै तो सर्व थाह थाहै वृषोत्सर्ग किये विना २५ हे गरुड जीवतो करै अथवा मृत्यु हुए पीछे वृषो
त्सर्ग करै तो वह प्राणी पितृन की गति कों प्राप्त होय नहीं तो पितृ की मुक्ति को भागी नहीं होय ॥२६॥

४

ग॰पु॰ टी॰ ५

हे गरुड अनेक दान करै तीर्थ विषै मृत्यु होय ब्रह्मचारी होय [illegible] भागी होय तोहू वृषोत्सर्ग किये विना नर्क गामी होय
२७ हे गरुड जो मनुष्य वृषोत्सर्ग करै अपनी जाति को सम्मान धर्म पावै तथा गावे तो प्राणी सदा मुक्ति गामी होय २८
हे गरुड जो प्राणी अशुभ कर्म करै और आचार करि के हीन होय और वृषोत्सर्ग कियो होय तो वह प्राणी यमलोक न

दत्वा दानान्यनेकानि सुतीर्थे म्रियते यदी ब्रह्मचारी पतिर्भूत्वा न गच्छति शुभां गतिं २७ वृषोत्सर्गादिकं
कृत्वा जाति धर्म समाश्रयेत कृत्वा वै मृत्युमाप्नोति स गच्छेद्ब्रह्म शाश्वतं २८ विकर्म कुरुते यस्तु सि
ष्टाचार विवर्जितं वृषोत्सर्गादिकं कृत्वा न गच्छेद्यम शासनं २९ पुत्रो वापि पिता चैव पौत्रो वा बांध
वास्तथा योऽन्यस्यार्थभागी च मृतो कुर्याद्वृषोत्सवं ३० पुत्र पुत्री थवा शिष्यो दैहिंचो दुहितापि वा ॥
पुत्रेषु विद्यमानेषु नान्यं वै कारयेत्स्वयं ३१ गरुड उवाच न पत्नी न च भर्ता च नैव संबंधिनस्तथा ॥
केन मुक्तिमवाप्नोति नरा नार्यास्तथापरे ॥ एवमे संशयो जातः तस्य पलं समाचर ॥३२॥

[illegible] २९ हे गरुड पुत्र तथा पौत्र वृषोत्सर्ग करै अथवा बांधव अथवा ऋणी अर्थ को भागी होवे सो वृषोत्सर्ग करै ३० हे ग
रुड बेटा की स्त्री वृषोत्सर्ग करै अथवा शिष्य तथा दोहितो अथवा बेटी वृषोत्सर्ग करै ३१ गरुडजी पूछत हैं हे भगवा
न जिन के स्त्री नहीं होय पुत्र नहीं होय स्त्री के भर्ता नहीं पुरुष के स्त्री न हो होवे तो वृषोत्सर्ग कैसे करै सो कहो यो मो संदेह उपजो है सो महारा

ग॰पु॰ टी॰ ६

हे गरुड भगवान कहे हैं जो जो दान करै सो अपने हाथ करै जो जीवतो करै अथवा मरे पीछे करे सो दान अर्थ हे आगे प्राणी कों प्राप्ति होय निश्चय करिकें २४ हे गरुड विविध भांति के भोजन तथा साग अपने हाथ ब्राह्मणन कूं भोजन करावे सो सर्व अर्थ पुण्य होय है २५ हे गरुड गौ धरती सोनों कपडा भोजन पुण्य करे कटोरा थाली जो जो दान करै सो सूर्व जहां जीव जाय तहां सर्व प्राप्ति

यानियानिंच दानानि स्वयं दत्तानि मानवै तानि तानि च सर्वाणि ह्युपतिष्ठंति चाग्रतः २४ व्यंजनानि विचित्राणि भक्ष्यभोज्यानि यानि च स्वयं हस्तेन दत्तानि देहांते चाक्षयं फलं ॥ २५ ॥ गोभूहिरण्यं वासांसि भोजनानि यदानि च यत्र यत्र च संजातस्तत्र तत्सर्वमाप्नुयात् २६ यावत् स्वस्थं शरीरस्त्वं तावत् धर्मं समाचरेत् अस्वस्थाः प्रेरितोन्यैश्च न किंचित्कर्तुमुत्सहे २७ जीवतस्य मृतस्येह न भूतं चौर्ध्वदेहिकं वायुभूत क्षुधाविष्टो भ्रमती हे दिवा निशम् ॥ २८

हे गरुड जितने ताईं अपनो शरीर स्वस्थ रहे है सावधान हालते चालते जितने ताईं एक धर्म को उपाय करनो और परवश भये पाछें कोई वात होने की नहीं २७ हे गरुड ना प्राणी की ऊर्ध्व देह की क्रिया न हुई होय तो पवन रूप ह्वैकें रात दिन भ्रमतो रहे क्षुधा तृषा वंत भ्रमतो डोले है सो अर्थ के बीच में कहा है सो सुनो सावधान ह्वैके ॥ २८ ॥ ६

ग॰पु॰ टी॰ ७

हे गरुड जो जा प्राणी की क्रिया कर्म न भयो होय तो कर्मिन के विषय होय सो कीट पतंग योनिन विषे जन्म धारण करै फिर मरि जाय पेले उत्पन्न २९ हे गरुड जब लाईं अपने शरीर में सामर्थ्य होय वृद्ध अवस्था नहीं होय इंद्रियन में शक्ति होय तब ताईं प्राणी जीव को उद्धार करनो योग्य है कैसें कारिकें अपने घर में आग लगी होय सो कोई कहे अब कूप खोद के जल लाय अग्नि बुझाय सो कैसें ह्वै मनुष्य की सामर्थ्य नहीं शरीर हालते चालते धर्म पुण्य कियो नहीं ने मनुष्य बहुत करिके भूले हैं ऐसो जन्म फेर पावे नहीं ॥ ३० ॥

जन्म कीट पतंगेषु नानायोनिषु पुनः पुनः हिस्र गर्भो विस्तारो पिजातस्य यौवनस्य निःश्रेयः ३९ यावत्स्वस्थमिदं शरीरमरुजं यावज्जरा दूरितो यावच्चेंद्रियशक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्नो महान् संदीप्ते भुवने कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः ३० ॥ इति श्री गरुड पुराणे प्रेत कल्पे ऊर्ध्व देहिको नाम प्रथमोध्यायः १ गरुड उवाच स्वहस्तेन किं फलं दैवं परहस्तेन च तद्दत्तं स्वस्थावस्थे रसं जैवा विधिहीन मथापिवा १ श्रीभगवानुवाच एकाग्रेण स्वस्थचित्तस्य स्वस्य चिन्तयाग्निद्वारे ॥

इति श्री गरुड पुराणे टीकायां प्रथमः १ गरुड जी पूछे हैं हे भगवान अपने हाथ अथवा औरके हाथ जो क्रिया कर्म करै तो ता को कहा फल होय सो कहो और चैतन्य में अथवा अचेतन में और विधि सहित या विधिहीन [illegible] की महिमा कहो १ श्री भगवान कहे हैं हे गरुड तू सावधान ह्वैकें सुनि जो प्राणी हालते चालते में एक गोदान करै और पर वस होय के दान करै ७

ग. पु.
टी.
८

तोभी प्रथम एक गऊकी तुल्य नहीं २ हे गरुड मृत्यु हुए पीछें लक्षणोविधि संयुक्त दान करैतो तथा तीर्थविषें भले सुपात्रकूं देइ तोभी वा प्राणिकूं अक्षय फल प्राप्ति होय ३ हे गरुड भले सुपात्र ब्राह्मणकूं देखिकें नित्यको नित्य पूजन करै दान देय युक्तिसों सो पुर्ष अपनो कल्यान करै ४ हे गरुड कुपात्रकूं अपनो भलो चाहे तो हे गरुड गऊको दान न करै दाता नरकमें जाहै ५ हे गरुड एक

महत्त्वं म्रियमानस्य दत्तविनविवर्जितं २ मृतस्यैव पुनर्लक्षं विधिपूर्वं च तत्समं तीर्थयात्रा समायोगादेकावेलस्य पुण्यदा ३ पात्रं दृष्ट्वा खगश्रेष्ठ अहन्यहनि पूजयेत् दातुदानं सुपायोयं ज्ञानिना प्रतिग्रहः ४ मंत्रहीन विषं दत्तं मुक्ताजीवति तत्समं पात्रं दत्तं न दाः स्वर्गं कुपात्रेन नरकं व्रजति ५ एक एकस्य दातव्या न वहुनाकदाचनः प्राविक्रितां विभक्तातोहन्यते सप्तमं कुलं ६ अतः संप्रणीतायां तिवृषोत्सर्गकृते प्राती तस्मात्सर्व प्रकर्तव्यं येन त्वं मुक्तिमिच्छति ७ मोक्षकाम खगश्रेष्ठ वृषयज्ञं समाचरेत् अकृत्वा म्रियते यस्तु पुत्रान्न च मुक्तिभाक् ॥८॥

गऊको दान एक ब्राह्मणकूं देय घनेनकूं देय तो विभक्त करें अर्थात् वेचकें वट करै वह दाता नरकमें जाहै अपने कुल सहित करिकें ६ भगवान कहैं हे गरुड वृषोत्सर्ग कियेते समस्त दोष दूर होय सो हे गरुड परलोकको साधन निश्चै करिकें
[illegible] हे गरुड मोक्ष वांछा करै तो वृषोत्सर्ग करै विना नरकगामी होय ८ ॥

८

ग. पु.
९

वृषोत्सर्ग कीयेते मार्गमेंसुख सेंजाय है ९ अग्निहोत्र करै यज्ञकरै दान करै परंतु हे गरुड वृषोत्सर्ग किये विना सर्व निष्फल है वृषोत्सर्ग कीयेकें समान और कछु नहीं है १० गरुडजी पूछैं हैं हे महाराज कृपा करिकें कहो कहूं देह की क्रिया कोनसे मास कोनसी तिथि कोन विधि सूं करै सो विधि कहो ११ वृषोत्सर्ग कियें सेंकैसो फल है सो सब कहो १२ कार्तिकमासआदि लैकें शुभ मास में उत्तरा

[illegible] पुत्रोपि वृषं कुर्यात् सुखं यांति सचाध्वनि ९ अग्निहोत्रादिभिर्यज्ञैर्दानैश्च विविधैरपि [illegible] प्राप्नोति वृषोत्सर्गो कृतेन वा १० श्रीगरुड उवाच ॥ कथयस्व प्रसादेन क्रियाचैवाद्य देहकं कस्मिन् मासे [illegible] कस्यां विधिनाकेन तद्वदेत् ११ कृत्वा किं फलमाप्नोति तन्मे कथय सर्वतः १२ श्रीभगवानुवाच कार्तिकादिशुभेमासि [illegible] शुक्लपक्षेथवाकृष्णे तिथिस्तु द्वादशी शुभा १३ शुभलग्ने मुहूर्ते वा शुद्धे देशे समाहितः ब्राह्मणांस्तु समाहूय विधिवत् शुभलक्षणः १४ जप होमै स्तथा दानै प्रकुर्याद् देहशोधनम् ॥ ग्रहान् देवान् समर्चयेत् १५

[illegible] होय शुक्लपक्ष अथवा कृष्णपक्षतिथि द्वादशी मेंकरणो निश्चैकरिकें १३ शुभलग्न होय शुभमुहूर्त पवित्र ब्राह्मण सावधान होय ब्राह्मण बोलिकें विधिसंपूर्ण करै प्राणीके निमित्त १४ जप होम दान इनसूं देह शुद्ध करै और शुभ दिन शुभनक्षत्र ग्रह देवन की पूजा [illegible]

९

ग॰पु॰
टी॰
२४

यम के किंकर कंठमें फांस डारकें चलावें मार्गविषें विलाप करै है ऐसो पापिष्ट मनुष्य हैं ते अपनों ग्रह छोडकें यम के लोक कूं जाय है ४१ हे गरुड प्रेत पापी रूप होय कर शुभ अशुभ कीजात भी मार्ग में पुर हैं तिनसव नें कै विषें मुक्तिकोंजात है ४२ हेगरुड इतनेपुरमार्गमें आवेंहै सोकहैहैं यमपुर १ सौरिपुर २ वरे भवन ३ गंधर्वनागालय ४ क्रौरपुर ५ क्रूरपद ६ विचित्र भवन ७ वहवापाद ८ दुखद ९ नाना कंद १० सुतप्त भवन ११ रौद्र १२ पयोवर्षण १३ सीतास्य १४ बहुभीत १५

16

यम्यापापी धृतः पोहा हा हेति पिदुयान्यापि स्वगृहं तु परित्यज्य पुरं याम्यं शनीयता ४१ क्रमेण याति सद्वेतो पुरं याम्यं शुभाशुभं अतिभ्यतानि नाम्यैव मार्गे पुरचराणि च ४२ याम्यं सौरिपुरं द्रुद्र भवनं गंधर्वनागालयं क्रूरं क्रूरपदं विचित्रभवनं वह्वापदं दुःखदं नानाकंदपुरं सुतप्तभवनं रौद्रं पयोवर्षणं शीताढ्यं बहुभीति धर्मभवनं योग्यं पुरं चायनः ॥४३ त्रयोदशेऽन्हि सप्रेतो नीयते यमकिंकरैः तस्मि न्मार्गे व्रजत्येयो ग्रहीत इव मर्कटः ॥४४॥

धर्म्मभवन १६ योग्यपुर १७ इतने पुरमार्गविषें आवेहै सो खर्च विना बहुत दुखी है ४३ हे गरुड मृत्यु हुये पीछे त्रयोदश के दिन या प्राणी कूं यमराज के दूत जैसें वानर कूं वाजीगर लें चले हैं ऐसें ही याकूं वांधकें ले चले हैं त्रास दैकें ॥४४॥

२४

ग॰पु॰
टी॰
२५

हे गरुड तामार्ग विषें वह प्राणी हाय पुत्र २ हाहाकार शब्द करै है ऐसी दीन वाणी बोले है ता मार्ग में जेको या ठौर कोई नहीं है बार बार पछितात है ४५ हे गरुड मोटे पुण्य के प्रताप करिकें मनुष्य देह पाई है ता पुरुष नें माया जोर कें दान पुण्य कियो नहीं ते प्राणी वार वार पछितायगो ४६ हे गरुड वह प्राणी ऐसो वचन बोले है हाय मेरो धन पराधीन होय गयो है ४७ हे गरुड मार्ग में प्रेत ऐसी वाणी कहै हैं मैंने दान कियो नहीं अग्निहोत्र कियो नहीं तपस्या करी नहीं देवतानकी पूजा करी नहीं तीर्थ-

17

तये व्रजन्मार्गे पुत्र पौत्रा इति ब्रुवन् हा हेति कंदते नित्यं कीदृशं हा भया कृतं ४५ मानुष्यं महाभाग लभते भूमिभारते तं प्रानमदं भाव्यान् सुरसद्यहं ४६ पराधीन कृतं तत्र भूतेत्यं विवशाश्रने किंकरैः पीड्यते त्यर्थो स्मरन् स्वं पूर्वदेहकं ४७ नपानदत्तं न हुतं न हुमाधानं न धानदत्तं नियुक्तानपूजितं नसेवितं स्वर्गं नहीं महाजलं शरीरभीयानभयाकृता नि ४८ जला श्रयो नैव कृतो हि निर्जले मनुष्यहेतो पशुपक्षिहेतवे ॥

गंगाजी स्नान कीयौ नहीं केवल अपने शरीर कौ पालन कियो ४८ हे गरुड प्राणी कहै है ऐसो निर्जल वनमें मैनें जलकौ आश्रय कीयो नहीं अर्थात् पशु पक्षीन के अर्थ बावडी प्याऊ कुआ तलाव आदि बनवाये नहीं गो वरन के लीयें और-कोडी नहीं गो ब्राह्मण की सेवा कीनी नहीं ॥

एक अपने पालन कियो अब वारंवार पछितात है ४९ नित्य स्नान कियो नहीं वेद दान कियो नहीं शास्त्र पूजन कियो नहीं को ई भय कौ मार्यो भयो ताकी रक्षा करी नहीं एक अपने शरीरको पालन कीयो ऐसें वारंवार विलाप करिकें पापी च लो जात है रस्तामें ५० इतिश्री गरुडपुराणे प्रेतकल्पे मरणादिसंस्कारो टीकायां द्वितीय २ हे गरुड आकाश मार्ग विषय

गोत्पत्तिहेतोर्न कृतं हि गोचरे शरीरभोगा निभयाकृतानि ४९ नैत्यस्नानं न गवादिपूजनं न वेददानं न च शास्त्रपूजनं न रक्षितं ना भयातुराणां शरीरभोगा निभयाकृतानि ५० इतिश्री गरुडपुराणे प्रेतकल्पे मरणादिसंस्कारो नाम द्वितीयोध्यायः २ श्रीगरुड उवाच एवं विलापनं तस्य प्रेतस्यैव विपत्तु रः कंद मानस्य कुर्वन्ति क्षुधितस्य विकिं करा १ ततः याम्य प्रेष्यको वायुमार्गे प्रकम्प्यते अष्टादशाग्रहो रात्रेव लधामं पुरं व्रजेत् २ नसिन्मुरव रे रम्ये प्रेतानाम्‌च गणा महान् पुष्पभद्रा नदी तत्र: निग्रोधा प्रियदर्शनः ३

मके दूत प्राणीकूं ली ये जात हैं सुधा तृषामें दुःखी बहुत होरहा है प्राणी जहां १ हे गरुड तापाछें ग्यारमे दिन बल धामपुर जात है २ हे गरुड प्राणी पहुंचत है तापुर विषे प्रेतनके गण बहुत आवे है एक वट के वृक्ष के सुंदर पुष्पभद्रा नदी है वहां ३

हे गरुड तापुर विषें विश्राम करे है और पूर्वके सुख यादकरी है [illegible] हे गरुड [illegible] प्राणी बोलत है रुदन करे है [illegible] धन पुत्र [illegible] पाप ये [illegible] अब मेरो कोई नहीं है अब मेरी सहाय को करन वारो कोई नहीं मैं [illegible] ४ अपनो [illegible]

पुरे तत्र स विश्रामं प्राप्य नेयम किंकरैः अथा पुत्रादिकं सुःख स्मरते नत्र दुःखितः ॥४॥ रुदितेन च करुणैर्वाक्यैः तृषार्तः श्रम पीडितः स्वधनस्य कलत्राणि पद पुत्रसुखानि च ॥५॥ भृत्या मित्रास्तथा मान्या सर्वं भवति वै नराः क्षुधार्तोयपु रे यस्मिन् किंकरै श्रोच्यते नदा ॥६॥ किंकर उवाच क्व धनं क्व सुता भार्याभृत्या मित्रास्सन्मोहरः क्व धर्मोपार्जितं भक्ष्यं मूढ गच्छ चिरं पथि ७ गन्तानं यमसा र्गं च परलोक हितायच पाथेयकी हशांपापैर्गंतव्यं तव निश्चितम् ॥८॥ २॥

मको देखा दे नहीं सुधा तृषा दुःख आवे को ऐसा होइके विलाप करे है फिर यमके दूत बोलत है इ दूत कहे है अब तेरो धन कहां है पुत्र स्त्री मि त्र चाकर कहां है तेरो धर्म कहां गयो अरे मूढ अरे शठ अब चल तूं ७ अरे मूढ तेने यम को मार्ग जानो नहीं परलोक कपने दूसरे लोकजाणे है सो विना खर्च [illegible] मार्ग [illegible] कोई नहीं है वहां ॥८॥

अरे मूंढ यमगीता तैंनें सुनी नहीं अरे मूंढ अरे मूर्ख ऐसो वचन यम के दूत कहे हैं और मुद्गरन की मार देय हैं ९ तापाछें स्नेह करिकें मोह करिकें दया करिके मासिक कौ श्राद्ध करे सो प्राणी ताकौं या ठिकाने आय के प्राप्ति होहै ताके पीछे शौरि पुर कूं जात है १० तहां के राजाको नाम जगम कहिये सो कैसो है साक्षात् काल कौ स्वरूप है ताकूं पापिष्ठी देख कें डरे हैं फेर विश्राम करै है तापुर विषें ११ श्री भगवान कहे हैं हे गरुड त्रिपक्ष की अन्न जल या प्राणी कौं वहां प्राप्ति होहै पिर

यमगीता मवं वाक्यं नैव स्नेहाच्छलत्वया एव मुक्तः स्तनः सर्वे हन्यमान समुद्गरे ९ अन्नं दत्तं सुतैमे हि स्नेहाद्दाहा कृपा थवा मासिकं पिंड मास्नाति तत शौरि पुरं व्रजेत् १० तत्रनाम्नातु राजा वै जगामं काल रूप धृक् तं दृष्ट्वा भयभीत स्तु विश्रामं कुरुते मति ११ उदकं चान्न संयुक्तं भुक्ते तस्मिन्पुरे गतः त्रिपक्षं कंप वै दत्तं ततः पुर मति क्रमेत १२ वेरेंद्र नगरे रम्ये प्रेतो याति दिवा निशं प्रेतो घनारिरौ द्रिणि दृष्ट्वा क्रंदति नित्य शः १३ भीषणैः क्लिश्यमानस्तु रुदते च पुनः पुनः मासद्वयावश्य नेनं तत्पुरं

वा पुर कूं त्याग कें अगाडी कूं चलत है १२ हे गरुड फेर नरेंद्र नगर कूं जात है एक रात दिन में करिकें चलत है सो वह महा भयानक घन है ताकूं देख कें प्रेत कूं भय उपजे है बार बार पुकारे है १३ तहां राक्षस कष्ट देत हैं दोय मास पीछे तापुर कूं त्याग करत है ॥१४॥

२०

ताके पाछे चित्र नगर कूं जात है या नगर में विचित्र राजा है यमराज को छोटो भैया है सो ताविषें राज करत है २२ तव कहिये ते ईं षण्मास को पिंड भोजन करि के तृप्त होत है क्षुधा तृषा करिके बहुत व्याकुल है रह्यो है २३ ताके पीछे प्रेत ऐसो विचार करे है हमारो भाई पुत्र पौत्र पत्नी संबंधी कोई कष्ट मेरो निवेरो में सोक स्वरूपी सागर में पडो हूं सो मोकूं काढे ऐसो कोई न

ययाति चित्रनगरं विचित्रोनामपार्थिवः यमस्यैवानुजः शौरीर्यत्रराज्यं करोति हि २२ तत्र षाण्मासिपिंडेन तृप्तियमकिंकराः मार्गेपुनः पुनस्तत्र क्षुधातृषापीडिय त्फलं २३ चिंतनोनरश्चेतो नादीयनेकोपिबांधवाः सौख्यंमेयांजनायातिपतितः शोकसागरे २४ एवं विलाप्यतेमार्गे वर्यमाणस्तु किंकरैः आयांतिसस्तु खास्तत्र केवर्तास्तुसहस्रकं २५ नीयंतलभूर्कामायमाहाय तरणीनदी शतयोजनविस्तीर्णा पूपसोनितसंकुला ॥ ६ ॥

हीं २४ ऐसा विलाप करत है मार्ग के विषें और प्रेत यम के किंकर पालन करत है तासमें सहस्र कैवर्त कहते मल्लाह स्तु खआवे है प्रेत कू मारे है २५ ॥ वहां एक वैतरणी नदी आवे है सो कैसी है शत योजन २०० विस्तार है वा नदी को रुधिर की सलिता है नाना प्रकार के पंछिन करि के संयुक्त है ॥ २६ ॥

जिनने गोदान कियो है ते पुरुष वैतरणी तिरे हैं जो प्राणी अपने कल्याण चाहे तो वैतरणी को दान करे निश्चय करिके २७ गौ को दान करे सो विष्णुलोक को जात है ऐसी वैतरणी नदी तामें पापिष्ठी लोग पहुंचे है २८ इति श्री गरुडपुराणे प्रेतकल्पे भाषा टीकायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ श्री भगवान् कहत हैं अपनो शरीर हालते चालते में वैतरणी को साधन करे गो दान करे अच्छे सुपात्र कूं

ददाति गां यथा यांति सुखेन हि जनारयेन मनुष्यानां हितार्थाय दानं वैतरणीस्मृतम् ॥ २७ ॥ दत्वापापहरे सर्वं विष्णुलोकं सुखानयेत ददत्वा वैतरणा कुर्वं प्राप्य दुःखात्समन्वितम् २८ इति श्री गरुडपुराणे प्रेतकल्पे पातको नामतृतीयोऽध्यायः ३ श्री भगवानुवाच स्वस्थावस्था शरीरस्य वैतरण्या व्रतं चरेत् देयांचविदुषोधेनुस्तं नदीं नत्तुं मिच्छता १ अदत्तेमज्जमानस्तुनिंदत्याननमश्वरः पात्रे दानं मया किंचिन्न दत्तं च हि जायते २ नदत्तं नहुतंजप्तं न स्नानं नकृतं श्रुतं यातयांकं संसारिं स्तु हीमार्गचत्ताहृताः ३

दान देना नदी वैतरणी के अर्थ १ विना दान किये वैतरणी के विषें डूबे है तब वह प्राणी मन में पछितात है देखो मैंने भले सुपात्र कूं दान दीयो नहीं २ ऐसें विचार करे है मैंने दान होम जप स्नान कीयो नहीं शास्त्र सुनो नहीं मैंने कर्म न किंचिन्मात्र कियो ऐसें विलाप करत है ॥ ३ ॥

क प्रकार कहते हैं कोई बांधव दुख काटै यातन के किंकर कहै हैं अरे मूढ तेरो धर्म पुण्य कहां गयो तैनें आजन्म कों पाय कें पाप कोड-
पाप कीयो धर्म को कीयो नही १६ ऐसौ वचन सुनिकें हाय देव कहिकें बोलत है बहुत करिकें पछितावै है देवो में खर्चे विना पंथ में
कैसें निभूंगो यह पंथ धर्म विना कटै नहीं १७ ऐसो विलाप करै फेर धीरज उपजावै है ताके पीछे फेर यम राज के नगर में जाय पहुंचे

तिष्ठते बांधवः कोपि यमो दुःखव्यपोहति किंकरास्ते वदंत्येवं कृतं पुण्यमहि कीदृशं ११ श्रुत्वा तेषां
हितं वाक्यं हा देव इति भाषिते हा देव सर्व सुकृतं पाथेयं नैव संचिति १७ एवं संचिंति बहु शोधेय
मालंबते पुनः चत्वारिंशत् योजनानि चतुर्युक्तानि चेतनः १८ धर्मराज पुरं दिव्यं गंधर्वाप्सरसंकुला
चतुराशीति लक्षेस्तु मूर्तिमद्भिरधिष्ठितं १९ त्रयोदश प्रतिहारा धर्मराज मतस्थिता। शुभाशुभं
तु यत्कर्म्म ते विचार्य पुनः पुनः २०॥

है सो वह पुर कैसो है सो १०० योजन तो चौडो ७४ लक्ष लंबो ऐसो धर्म राज के पुर को विस्तार है और वह पुर अति दिव्य है गं
धर्व अप्सरा गान किया करत हैं ८४ चौरासी लक्ष जोनिके जीव मूर्ति वंत विराजत है १९ छड़ीदार रहत है शुभ अशुभ कर्मको
विचार करते हैं धर्मराज के आगे खडे हैं ॥२०॥

[illegible]

हेगरुड पदार्थ सर्ववस्तु इकठोरी करै तेरह वस्तुन कोएकपद होत है सो जीवतौ करै अथवा मरे पीछे दानकरै सो सुख सूं जात है ४ सो पुर्य पुण्यके प्रतापकरिके गगनमें जात है ऐसो व्यवहार है ५ उत्तम होय मध्यम होय अधम होय तेसो कर्म करै तैसो फल प्राप्ति होय है ६ आपके हाथसूं दान कियो होय सो अखै फल होय और पीछे बांधवननें दानदीनों है सो भी प्राणी कूं प्राप्ति

पदानि सर्ववस्तूनीव रिष्टानि त्रयोदश यो ददाति मृते मेहजीवन्या यात्महेतवे ४ यदस्थितो महामार्गे वैन तेनसगच्छति एवं चैवास्ति सर्वत्र व्यवहार खगाधिप ५ उत्तम ध्यमम ध्यं तु तदा भवति निश्चितं या वज्ञागवं भवेतस्य तावं तत्रसुखं भवेत् ६ स्वहस्तेन दत्तनन्त सर्वस्य चाक्षयं भवेत् मृतेय वांधवै दत्तं हृदा श्रिस्य सुखी भवेत् ७ गरुडउवाच कस्मात दानि देयानि किं विधानि जनार्दनः दीयते कस्य हेतव्यतन हृदं चय थान था ८ श्रीभगवानुवाच छत्रोपानह वस्त्राणि मुद्रिका च कमंडलु आसनं भाजनं चैव देयसम्यक् द्विजातये ९ सुखेन भोजने नैतः पथि गच्छत्यनेश्रीन बहु धर्म वह धर्मा॥ कीर्णोनिवीसेनो

होत है ताको भोजन करत है ७ अब गरुडजी प्रश्न करत हैं अहो वैकुंठनाथ पदार्थ कौन कारण देत हैं और अर्थ कैसो होत है ८ श्रीभगवान् बोले हे गरुड छत्र जोडी वस्त्र मुद्रिका थाली लोटा आसन भाजन ये सर्व वस्तु प्राणी के निमित्त देनी ९ सुखपूर्वक प्रेत भोजन करे है सुख सूं जा

[illegible] १० [illegible] तथा मृत्तिका को नाम लेके दान करै तो मार्ग विषे सुख सूं जात है ११

हे गरुड वस्त्र आभूषण के दान सूं यमराज प्रेत कूं आयुधन की पीड़ा नहीं करै दूत दुख नहीं देय हे गरुड हजार बावडी बनायवो चाहे एक लोटा दान करनों कमंडल के दान के समान और पुण्य नहीं १२ दूत पीड़ा करै नहीं कपड़ा आभरण दान किये हैं जे सुख सूं जाय हैं आयुद की पीड़ा करै नहीं कपरा के दान सूं १३ दूत पीड़ा करै नहीं मुद्रिका अथवा अंगूठी के दान करे ते यमराज प्रसन्न होत है भाजन मिष्टान्न अन्न सें

कमंडलुप्रदानेन सुखी भवति निश्चितं मृतोद्देशेन यो दद्यात्तद्दुपात्र तु ताम्रज ११ प्रपायदान सहस्र स्य तत्फलं सोश्रुते ध्रुवं यमदूता महारौद्रा कराल कृष्ण पिंगला १२ नैव पिंडा प्रवर्तिं धास्त्रभारणदा नतस्यायुधवधक तारौ नाभोगाय हृणोचरा १३ त्रयालियमसंख्याने मुद्रिकाया प्रदानतः भाजनासन दानेन आत्मनं भोजनेन च १४ आज्यपक्वोपवीतेन नूनकर्णानावजेत् एवं मार्गे गच्छमानस्तु पार्तश्र मपीडितः १५ श्रीगरुडउवाच मृतोद्देनेन यद्दत्तं दीयते स्वगृहे प्रभो मार्ग गच्छतिम हा मार्गे न दत्तं केन गृ ह्यते १६ श्रीभगवानुवाच गृह्णाति वरुणो दानं मम हस्ते प्रयच्छति सोहं भास्करो देवाय भास्करो सा स्तुने पलं

प्राप्ति होत है प्राणी कूं १४ महिषी रथ गादान मुनि ध्वं करिके सुखी होय घृत जनेऊ को दान सूं सर्व पूर्णता होत है ऐसी भांति मार्ग विषे गाय भैंस रथ को दान करै तो सुखी होत है १५ हे महाराज जो मृतक को नाम लेके देय सो कैसें प्राप्त होय १६ तब हे सेवकरूप देत हे और वरुण ले के श्रीभगवान कूं देत हैं और भगवान लेके श्री सूर्यनारायण कूं देत है और सूर्य लेके प्राणी कूं प्राप्त करै है १७॥

इतिश्रीगरुडपुराणेप्रेतकल्पेयमलोकगमनोनामपंचमोध्यायः ५॥ श्रीभगवानकहैहैं हेगरुडपवनरूपीदेहहोतहैसोक्षुधा तृषाकरिकेंबहुतदुखीहैं कर्मकेप्रभावकरिकैयमलोककूंजातहै १ चित्रगुप्तकेमंदिरकूंजातहै सोमंदिरकोवीस२०योजन कोप्रमाणहै चित्रगुप्तकायस्थहै सोपापीधर्मात्मासबकूंदेखतहै २ हेगरुडभलेदानकेप्रतापकरिकेजाठौरसुखीहोतहैयमरा

वायुभूतःक्षुधाविष्टोकर्मनंदेहमाश्रयेत् नंदेहंसमासाद्यःयमेनसहगच्छति १ चित्रगुप्तंपुरंतत्र योजनानांतुविंशति कायस्थंतत्रपश्यंतिपापपुण्यस्यसर्वदा २ महादानेनदत्तेनगत्वातत्रसुखी भवेत् योजनानांचतुर्विंशपुरंचैवशुभाशुभं ३ लोहवर्णकपासंवातिलपात्रंचवेक्षनम् तेनदत्तेन तुष्यंतियमस्यपुरचारिणः ४ गत्वाचतत्रतेसर्वेप्रतिहारवदंतिहि धर्मध्वजप्रतीहारास्तत्रति ष्ठंतिसर्वदा ५ सप्तधान्यस्यदानेनप्रीतोधर्मध्वजोभवेत् तत्रगत्वाप्रतीहारोव्रततस्यशुभाशुभं ६

जकेपुरकोचौवीसयोजनकोप्रमाणहै महाशोभायमानहै ३ लोह लोन कपास तिल पात्र या दानसूं यमराजकेदूततृप्तिहो तहैं हेगरुड छडीदारहै जिनमेंधर्मध्वजमुखहैमेधर्मराजकेआगेंसर्ववार्तासुनावतहै ५ सप्तधान्यसूं धर्मध्वजप्रसन्न होतहैं यमराजकूंजायकें शुभअशुभजैसोदेखें वैसोई सुनावेहै ॥६॥

३०

धर्मराजकूंधर्मात्मापुरुषदेखेहैं जिनकूंसाक्षात् विष्णुकोरूपहै औरपापीनकूं [illegible] हैं यमदेनाकूं देखकेंडरतहै ७ यमकूंदेख केंपापीपुरुषहाहाकारशब्दकरतहैं औरधर्मात्माकूंभयनहीं औरमहासुखकोदेनाहै ८ धर्मात्माकूं देखिकें धर्मराजउठिआय केमिलेहै फिरऐसीवाणीबोलतहै हमारोमंडलछोडकें ब्रह्मलोककूं जाओ धर्मात्मामनुष्यकूं सुगममार्ग औरपापीनकूं भ

धर्मराजस्ययद्रूपंसंतमुकृतियोजना [illegible] यमरूपंसुभीषणं ७ तद्दृष्ट्वाभयमा [illegible] तिवदने जनः कंददानवयेमर्त्यास्तेषांतुनभयंक्वचित् ८ धर्मंसुकृतिनां [illegible] चलतिसर्वजः ममैवमंडलंभि त्वाः ब्रह्मलोकंप्रयास्यति ९ दानेनमृगामोमार्गोपापिष्ठानांभयप्रदः येषमार्गेविनासेनहकेननैवगम्यते दानपुण्यविनावत्सनगच्छेधर्ममंदिरं नास्तिमार्गेनिर्वाहंवैभोपणायमकिंकराः ११ पापिनांमार्गम ध्ये [illegible] निचयोद्र शाःगकेकस्यपरस्यायेरौद्राःश्विविकृताननाः ॥१२॥

यकोदातहैं ओरोविषममार्गहै धर्मसोमनुष्यसुखपावतहैं १० दानपुण्यविनाहेगरुड धर्मकेमंदिरजायनहीं तामा र्गमेंयमकेदूतभयानकहैं ११ हेगरुडपापीनकूंदुःखदेतहैं मारि मारिकरतहैं ऐसेहजारदूतएकदूसरेतेंआगेदोडतहैं महाभयानकहैमुखजिनके १२ औरपापीनकूं पानहै सो [illegible] भोजनकरतहै १३

३१

ऊर्द्धदेह कहत हैं परलोक कूं जानो है सो दान पुण्य विना कष्ट है ता कारण अपने वित्त प्रमान दान करनो योग्य है २४ देव योनि मनुष्य योनि पित्र योनि और नर्क में पहुंचत हैं इतनी योनी धर्मराज के वचन सूं पावत हैं और सुकृति किये ते मोक्ष पावत है २५ मनुष्य देह पायो है भले वंशमें सो जैसो कर्म करै तैसो जन्म पावत है २६ त्रिलोकी के विषे विचरत है २६ मनुष्य बुरे कर्म के करने हारे जा जा योनि में जन्म पावत हैं २७

ऊर्द्धदेहिकदानानि यत्र दानानि कश्यप महाकष्टेन तेयानि तस्माद्देयानि शक्तितः २४ देवत्वं किं पितृत्वं किं योनिमानुष्यचाप्यनारकिं धर्मराजस्य वचनात् मुक्तिर्भवति दानतः २५ मानुष्यं यदा प्राप्य सुपुत्रो पुत्रनात्र जेत यनाथा यथा कृत्कर्मतां तां योनि व्रजेन्नरः २६ विचरे सर्वलोकेषु जंतुर ज्ञान कर्म कृत आसाद्य यं परिज्ञाय सर्वलोकां नरं सुखं २७ यदा भवति मानुष्यं तदा धर्म समाचरेत् कामिविष्ठ भस्मा विष्टा देहिमा प्रकृतिसदा २८ अंधकूपमहारौद्रे दीपहस्त पतत्यहो महा पुण्य प्रभावेण मानुष्यं जन्म लभ्यते ॥ २९

तासमें मनुष्य देह पायो है धर्म को जतन करनो योग्य है या देह के तीन गुण होत हैं प्रथम तो कीड़ा भय दूसरे स्वान अथवा कोई जीव भखै विष्टा होय और जलावै तौ भस्म होय ले पुरुष नारायण कूं गावत है जिन की मुक्ति होत है २८ हे गरुड अंधकूप या संसार में आय के साहस्त्र रूपी दीपक सदा विराजत है ते पुरुष पाप कमावत हैं सो अनुष्य रीपक होत अंधकूप में पड़त हैं और मनुष्य देह है सो मोटो पूर्व पु

३४

ण्य के प्रताप करि के पायो है २९ देह पाय के धर्म करै धर्म किये ते यह प्राणी अच्छी गति कूं जात है और जो मनुष्य पाप करै और धर्म न करै सो यह प्राणी अनेक प्रकार के दुःख पावे है और बहुत भ्रमतो फिरै है ॥ ३० ॥ तो गरुड़ दान करै जा-

३५

यत्नं प्राप्य चरेद्धर्मं सगच्छेत्परमां गति अकृत्वैव यदा धर्मं दुःखमाप्नोति सा वित ३० काव्य योगो गोप्तेन लभते किल मानुषत्वे तच्चापि दुर्लभतरं खलु भो द्विजत्वं य त्नेन पालय निलालय निंद्रियाणि तस्यामृतं हरति हस्तगतं प्रसादात ३१ ॥ इति श्री गरुडपुराणे प्रेतकल्पे प्रेत कथनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

जाके प्रताप करि कें मनुष्य देह पावत है सो पुरुष इंद्रियन के वश हो गये हैं जिन के हाथ में अमृत आयो है सो ऐसो जन्म पाय कें तृष्णा गमाय दीयो है ३१ इति श्री गरुड पुराणे प्रेत कल्पे टीका यां प्रेत कथनो नाम षष्ठोऽध्याय

ग॰ पु॰ टी॰ ३६

हे गरुड भैया बंधुन ते वैर राखे मन में शांती होय नहीं दयाउपजे नहीं क्रोध कबहुं जाय नहीं १८ हे गरुड पश्च द्रव्य को नाश क
रे मकान कहिये वाडी को नाश करै बाई बंधु को नहोय भाई सूं वैर रहे सो प्रेत पीडा जानियें १९ हे गरुड अचानक धन को नाश
होय आत्म मान नहोय लोभ अधिक परानन दिन कलह जाय नहीं सो प्रेत पीडा जानियें २० हे गरुड माता पिता कूं मारे देवता ब्राह्मण

विरोधी बंधुभिः सार्द्धं येन दोषास्त्विमे स्वगाः संतदीर्यन्ते नैव समुत्पन्ना विनश्यति १८ पश्च द्रव्यवि
नाशस्यासापीडा प्रेत संभवा प्रकृते परिवर्त स्याविरोध सह बंधुभिः १९ अकस्मात् व्यसनास्य सा
पीडा प्रेत संभवाः नास्तिको हानि लोपश्च महा लोभ स्तथैव च: २० जन्मांत काले नित्या सा पीडा प्रेत
संभवाः पितृ मातृ हनं चैव देवे ब्रह्मण निंदकः हन्या देसमवाप्नोति सा पीडा प्रेत संभवाः २१ नित्य
कर्म विमुक्ता स्तु जप होम विवर्जिता हरताच पर स्व्याणां सा पीडा प्रेत संभवा २२ सुभस्य स्य स्वभा
वस्यात् विवहारो विनश्यति लोके कलहकारी च सा पीडा प्रेत संभवाः २३

की निंदा करै वडो दोष लगावे सो प्रेत पीडा जानियें २१ हे गरुड नित्य कर्म कूं छोडे जप होम करै नहीं चोरी करै पराये
धन में जीव रहे सो प्रेत पीडा जानियें २२ हे गरुड सम्वत में खेती निर्फल जावे व्योहार में टोटा आवे रात दिन कल
ह करै सो प्रेत पीडा जानियें ॥२३॥ ३६

ग॰ पु॰ टी॰ ३७

[illegible] सो प्रेत पीडा जानिये २४ हे गरुड नीच जाति संप्रीति करे नीच
जाति के कर्म [illegible] सो प्रेत पीडा जानियें २५ [illegible]
[illegible] सो प्रेत पीडा जानियें २६ हे गरुड [illegible] दुखी होय ॥

[illegible] सत्यं वचो मम: २४ हीन जन्मा च संबं
धी हीन कर्म करोति वा अधर्मो [illegible] सा पीडा प्रेत संभवा: २५ व्यसनैर्द्रव्य नाशस्या [illegible] कांतं विन
श्यति [illegible] सा पीडा प्रेत संभवा: २६ श्रुति स्मृती पुराणेषु धर्म शास्त्रेषु नित्यदा अभा
वो जायते [illegible] सा पीडा प्रेत संभवा २७ देव लोके [illegible] प्रेत योनिं व्रजन्ति ये [illegible] दुःखपे
प्रेत संभवा: २८ स्त्रीणां गर्भं विना [illegible] यथा बालानां मरणं यत्र सा पीडा पीड्यते सुभ
२९ [illegible] सा पीडा प्रेत संभवा: ॥३०॥

[illegible] पुरुष के दुःख होय सो प्रेत पीडा जानियें २७ हे गरुड वेद पुराण शास्त्र विषें भाव उपजे नहीं सो प्रेत पीडा जानियें २८ देवता
[illegible] निंदा करै सन्मुख सुख उपजावे सो प्रेत पीडा कहिये २९ स्त्रीन को गर्भ नाश होय
अथवा फूल नहीं होवे जिन के बालक जीवे नहीं सो प्रेत पीडा जानियें ॥३०॥ ३७

ग॰पु॰ टी॰ ३८ | 40

हे गरुड फूल दीसे पत्ता फल दीखै नहीं स्त्रीको विरह सदां रहे सो मन पीडा जानियें ३१ हे गरुड वियोग विषें चित्त रहे उच्चाटन बहुत रहे हे गरुड अपनो क्षेत्र निर्फल रह जावे सो प्रेत पीडा जानियें ३२ हे गरुड पिता के वचन माने नहीं अपनी स्त्रीसूं वैर राखे पराई सूं सुख करे सदां निर्दया राखे है सदां खोटी मति रहे सो प्रेत पीडा जानियें ३३ बुरे कर्म करे जब प्रेत होय है द्रव्य कूं कुसंग में खोवे

न पुष्पं दृश्यते यत्र फलं तत्र च दृश्यते विरही भार्यया सार्द्धं सा पीडा प्रेतसंभवा ३१ वियोगे जायते चित्तं सदोच्चाटकरं नृणाम् स्वक्षेत्रे निखिलं नाश्यं सा पीडा प्रेतसंभवा ३२ पित्रोर्वा कानकुरुते स्वपत्नीं न च सेव्यते सदा क्रूरमतिर्यस्य सा पीडा प्रेतसंभवा ३३ विकर्माण्यथने प्रेतो विभवे नाप्यसेवनात् वापी कूप तडागाश्च आरामं स्वरमंदिरं ३४ पितुः पितामह धर्मं विहीनाः सपाप कृतं मृतो प्रेत भवा ज्ञाति यावदा हुत संप्लवं ३५ गोचरं ग्राम सीमाश्च तडागारामगह्वरं कंपयंति च ये ज्ञात्वा प्रेतास्ते संभवंति हि ३६ चांडाला दुंदुकात्सर्व्यो ब्राह्मण हैहय भाग्नितः दंष्ट्रिभ्य स्वपशुभ्यश्च मरणं पाप कर्मणः ॥३७॥

बावडी कूप तडाग वा देवमंदिर बनावै नहीं ३४ बडेनको धर्म कीयो ताहि बेचे सो मरे पीछे प्रेत होय । जब नाईं ब्रह्मा प्रलय होय तब नाईं प्रेत रहे ३५ गौनके चरवेकी ठौर ग्रामकी सीव बहुत घास को वन वेचे तो वह मनुष्य प्रेत होय है ३६ हे गरुड चांडा

३८

ग॰पु॰ टी॰ ४४ | 41

[illegible]

ग. पु.
टी.
४० | 42

हे गरुड बिना देखे दोष लगाय कें छोडे सो प्रेत योनि में होत है ४४ हे गरुड घात करे मित्र सों द्रोह करे परापवाद आप करे ठगाई करे सो मरिकें प्रेत योनि में होत है ४५ भाई सं द्रोह करे गौन की हत्या करे गुरुन की स्त्री कूं बुरी नजर देखे सुवर्ण की चोरी करे अथवा पाट चोरे ते मनुष्य मरिकें प्रेत होत हैं ४६ कुल ग्राम छोडे पराये धर्म विषें रति करे विद्या व्रत छोडे सो मरिकें प्रेत होय ४७ हे गरुड मृत्यु समय प्रेत है कैसें

अदृष्टदोषां सत्यजति स प्रेतो जायते ध्रुवं ४४ न्यासापहर्ता मित्रध्रुक परवादरतस्तथा विश्वासघाती धूर्त्तश्च स प्रेतो जायते ध्रुवम ४५ भ्रातृध्रुक ब्रह्महा गोघ्नः सुरापो गुरुतल्पगा हेमक्षौमहरस्तार्क्ष्य प्रेतत्वमवाप्नुयात् ४६ कुलग्रामं तु संत्यज्य: परधर्मरत: सदा विद्यावृत्तविहीनश्च स प्रेतो जायते खग: ४७ मरणे दुष्टसंसर्गाद्वृषोत्सर्गमृते तथा दुष्टमृत्युवशाद्वापि आदाह्यवपुषस्तथा ४८ एवं ज्ञात्वा खग: श्रेष्ठ: प्रेतमुक्तिं समाचरेत् यो वै न मन्यते प्रेतो: मृते प्रेतत्वमाप्नुयात् ४९ प्रेतदोषं कुले यत्र समसतत्र न विद्यते ॥

जाको वृषोत्सर्ग होय नहीं दुष्ट मृत्यु हुये पीछे शरीर कूं दाग होय नहीं सो प्रेत होय ४८ हे गरुड ऐसो विचार करिकें प्रेत की मुक्ति को साधन करे और जो प्रेतन कूं मानें नहीं सो मनुष्य प्रेत होहे ४९ हे गरुड जिनके कुल में प्रेत देखे सो मति हीन प्रीतहीन राति

४

ग. पु.
टी.
४१ | 43

हे गरुड [illegible] जिनके प्रेत होय [illegible] जिनके वंश [illegible] होय अपवाद [illegible] होय निर्धन होय जिनके प्रेत दोष होय [illegible] ४९ इति श्री गरुड पुराणे प्रेतकल्पे टीकायां तार्क्ष्य [illegible] नाम सप्तमोऽध्याय: ७ [illegible] हे गरुड प्रेत [illegible] अपने गोत्र कूं पीडा करे है

मति प्रीति रति [illegible] लक्ष्मी [illegible] ५० [illegible] दरिद्रो निर्धनश्चैव पापकर्मा भवेन्नर: ५१ इति श्री गरुड पुराणे प्रेतकल्पे [illegible] सप्तमोऽध्याय: ७ [illegible] उवाच [illegible] प्रेत [illegible] बान्धवा [illegible] [illegible] सपापं [illegible] प्रेत दोषा [illegible] धर्म [illegible] २

[illegible] ८

आपकी [illegible] रूप धारिकें भ्रमतो फिरे संसार विषें कष्ट देत है [illegible] तुम्हारो वंश छेदन करेंगे [illegible] मनके वस पडे पूर्व को पाप बाद का नहीं महा २ हे गरुड [illegible] प्रेत दोख [illegible] धर्म की बुद्धि को [illegible] सकें नहीं ॥२॥

अन्य देवता अदृष्ट हैं और भाव करिके हैं और मनुष्य देह के मनुष्य के नरक स्वर्ग के दाता है ३० अन्य देवता नही है पूजे नमस्कार करे पिता कूं ऐसे चित में विचार करिकैं ब्राह्मणन कूं संतोषे ३१ हे गरुड सर्व अपने पाप पुण्य आयु भुक्ते है सो वा नर कूं पुन्नाम नरक सों तारे ता कारण पुत्र कहिये ३२ पिता कौ आप मृत्यु होय तो वे दोऊ धारकरणी के हेत श्राद्धादिक साधन करै ३३॥

अन्यास्ता देवता लोके नानदेहस्य भावका शरीरमेवनंतुता निर्णयः स्वर्गमोक्षदं ३० देवन्योमास्ति केकास्मि न्पूज्यो वैद्य नित्यशः इतिसंचिंत्य हृदये पितृणां प्रयाश्चिच ३१ तत्सर्वमात्मनाप्रोको दान विदो विदुः पुन्नाम्नो नरकात्पुत्र तस्मात्सिरं नायत्सुनः तस्मात्सुः इति प्रोक्ता इहलोके परत्रच ३२ अप मृत्युवसा चैवम स्यद्दिन मसः तेषांसुद्धारणार्थाय सुतः श्राद्धादिकं चरेत् ३३ इतिश्री गरुड॰पु॰प्रे॰ अष्टमोध्यायः गरुडउवाच तदुक्तं ब्रह्मणा पूर्वं नानृतं तत् हि दृश्यते वेदेरुक्तं तुयद्वाक्य शतजीवंति मानवा १ जीवंति मनुष्य लोकेस र्वे वर्णा द्विजातय अंडजा स्वेदजा श्चापि खंडे भारत संज्ञके कलौ तत्र प्रदृश्येत कस्माद्देशाधनान्मृत्युमाप्नो ति किं वस्तः स्पृविरोयः पुचास्तथा

इतिश्री गरुड पुराणे प्रेत कल्पे टीकायां अष्टम ८ गरुडजी पूछे हैं अहो महाराज ब्रह्माजी आगें कह्यो सो संसार विषें मनुष्य सौ वर्ष जीवै है १ मृत्यु लोक विषें सर्व वर्ण सौ वर्ष जीवे हे गरमी सूं उपजे है पसीना सूं अंडा सूं जिव भरत खंड विषें सर्व युग विषें

[illegible] देवतालोके राक्षसं कविदे सब्बी हैं [illegible] पीड़न हैं [illegible] सर्व [illegible] मलीन [illegible] कैसो कारण कहा है कृपि कहो तुम २ श्रीभगवान कहत हैं हे गरुड तूं सुनि प्रसन्न भयो तू भक्त है हमारो वचन सुनि सर्व देह दूर होजाय जो

सधर्मी निघनो [illegible] कुमार [illegible] सर्व भूत हृदजंतु [illegible] वसुधातले कस्मा न्मृत्युमवा [illegible] पिता २ श्रीभगवान उवाच साधु साधु महाप्राज्ञ यत्त्वं भक्तोसि से हर्दं श्रृणु [illegible] नाना संदेह नाशन ३ [illegible] गच्छति [illegible] वेदांतस्य [illegible] कुलोचारं न सेविते आलस्यात्कर्मणां त्यागो नीच संगी निषिद्ध भुक् [illegible] स्वाति पर सेव रन [illegible] महादोषै आयुर्क्षयः २०॥

१ [illegible] सो तुरत आवे है सो कहूं हूं पक्षिणा के राजा सो सुणा तेरे आगें कहूं हूं २ वेद के मत हूं त्यागे कुल के धर्म कूं त्यागे आलस सूं कर्म त्यागे नीच संगी निषिद्ध भोजन करै ३ हे गरुड जाता और जीव पर स्त्री सूं गामी होय ऐसो दोष [illegible] होय ॥२०॥

ग॰पु॰ टी॰ ५२

प्रकृतेकर्मकीफांसीतेमनुष्यतुरतमरैहैपांचवर्षतलकअल्पभावलगतहै२५ पांचवर्षतेअधिकमहापापकरविनाशकूंप्राप्ति होतहैऔरफेरकर्मकैरतवमरैसोउपजैवारवार२६हेगरुडमनुष्यपुण्यकेंप्रतापकरिकेंचिरंजीवहोतहैं२७ इतिश्रीगरुड पुराणेप्रेतकल्पेटीकायांनामनवमोध्यायः९ गरुडजीपूछतहैं अहोमहाराजगर्भमेंमरेअथवामरेतिनकसेजिनकीकैसी

प्रकृतेःकर्मपाशैस्तुमृत्युमाप्नोतिमानवःआधानात्पंचवर्षाणिस्वल्पपापैर्विपच्यते२५पंचवर्षाधिकेभूत्वामहापा पविनश्यतियानिह्रस्यतेयस्मात्मृत्यौध्यायातिच२६मृत्वोपुण्यप्रभावेनजीवेनमृतश्चिरंविभु२७ इतिश्रीगरुड पुराणेप्रेतकल्पेनवमोध्यायः९ गरुडउवाच गर्भमध्येमृतायेनमृतगर्भाचविस्मृता कथंकिंकेनदातव्यंतेषांचै वाविधिस्मृताः१गरुडस्यवचनंश्रुत्वाविष्णोवाक्यमथाब्रवीत्यदिगर्भेविपेद्येतकर्तव्येस्वजनंतदा२या वन्मासास्थितोगर्भस्तावद्दिवससूतकंतस्यकिंचिन्नकर्तव्यंआत्मनेश्रेयगच्छता३ततोज्ञातोविपन्नोपि आचूडाकरणागुरुदुग्धंभोज्यंतथासक्तावालानांतुदीयते४॥

विधिकीजेसोपुण्यकहो१ गरुडजीकीवानीसुनिकेंभगवानकहतभयेजेगर्भमेंमरतहैंतिनकूंधरनीमेंगाडे२ जितने [illegible] तिनमेंकछकार्यकीजैनहीं३ तापाछेंतुरतमरगयोहोयतोवालकनकूंदूधदही

53

ग॰पु॰ टी॰ ५९

आचूडपांचवर्षकोहोयकेंमरिजायतौदाहादीजेवपाछेंवालककूंभोजनकरावे४हेगरुडपाछेंमृतककेकर्मजैसीआपनीजाति होयतैसोई दानकरैजलकेघटदूधसहितदेइ६ गरुडजीऐसोदानकरैसतासंबंधिकाहिंयेजन्मलियाहैलोभवाभिकोरे कैमरगौमृत्युभयोहैसोनिश्चैकरिकेंजन्मलेयगोकुछसंदेहनहीं७ हेपक्षिराजमेंफेरकहूंवालककोमरनोमरकेलिनकूं

आचूर्णं पंचवर्षेतुदेहदाहोयथाविधिः५ देहेचमतस्य [illegible] दुग्धंवालानांभोजनंशुभंभक्ततोमृतस्यकर्मस्य कर्मणास्वजातिविहितानिचकुर्यात्मिष्टान्नमं[illegible]कुंभादिपायसं६ दानंचलतुरतआयुषस्तासंवंधि कर्यसःजातस्यहिध्रुवोमृत्युध्रुवंजन्ममृतस्यच७ कर्तव्यं [illegible] पुनर्देहक्षयावर्षेतस्माद्दोपचनेदेयंस दत्वानिर्धनेकुले८स्वल्पायुर्निर्धनोभूत्वाभावविवर्जितःपुनर्जन्मविनाआयतस्मादेयंधनोशिशोर्दपुराणेपी यतेगाथासर्वेषामभिमाषित मिष्टान्नभोजनंदानंगतिस्वात्मपरंफलं१०भोज्यभोजनआकिंचरणिशक्ति वरस्त्रियंविभवोदानशक्तिश्चनाल्यस्यतपसफलं॥११॥

रूचेसोयदेयतोनिर्धनकुलपजै८ अल्पआर्वलहोयनिर्धनहोयभाववर्जितहोयफेरिजन्मदूरकरणेवालेदानकरे९ हेगरुड पुराणकहहैंसर्वमिष्टान्नभोजनअन्नदानइतनेमतेउपजैसोलपरायाको [illegible]हे१० भोज्यभोजनपाशक्तिरातिभीति

ग॰ पु॰ टी॰ ५२

दानके प्रतापभोजन लीजे महापुरुषकी सेवाके प्रतापसुख प्राप्त होय मीठे बोलके प्रतापपंडित होतहै और पालनाके प्रतापसे धर्मलाहोतहै २२ हे गरुड बिनादान दरिद्री होय और दरिद्रके प्रतापकरिके पापकरै पापके प्रतापकरिकै नरकमें पडै फेरजन्मे फेरदरिद्री होयजा कारणहे गरुड पुण्यकरनेसे मुक्तिपावै २३ श्रीभगवानकहतहैं हे गरुड पुरुषस्त्रीको निर्णय कहुं जीवतो

टी॰

दानान्भोजनमाप्नोति सौख्यं सज्जनसेवनात् सुभाषणाद्भवेद्द्वान्पालनाधर्ममुत्तमं २२ अदत्तदानात्भवेद्दरिद्रो दरिद्रभावात्प्रकरोति पापं पापप्रभावान्नरकं प्रयाति पुनर्दरिद्री पुनरेव पापी २३ अतः परं प्रवक्ष्यामि पुरुषस्त्रीविनिर्णयः जीवन्व्यापि मृतो वापि पंचवर्षादिको यदि २४ पूर्णे तु पंचमे वर्षे पुमांश्चैव प्रतिष्ठितः सर्वेंद्रियाणि रूपाय रूपरूपविनिश्चयः २५ पूर्वकर्मविपाकानः भणिनां वंधुवांधवाः वालभावेतु मरणं च पूर्वकर्मविपाकतः २६ एकादशं द्वादशंच वृषोत्सर्गविधिं विना महादानं विहीनं तु स्त्वनमाचरवा वा थवाः कुमाराणां च वालानां भोजनं वस्त्रवेष्टनं वालेवानरुणे हृद्वे घटदानं प्रसस्यते ॥२८॥

यद्यामृत्युभयेपीछे पंचवर्षउपरांतकहुं २४ पुरो पंचवर्षको पुरुषहोयसवइंद्रियनकरिकेउपजायो रूपअरूपकी पडिसुधि ५२

ग॰ पु॰ टी॰ ५३

एकवर्षकोमरेतौ धात्री अगाडि ये नयारे [illegible] कोमरैतौ भूमिखनवानादुपे रखे [illegible] कुंनानीवंधनदै [illegible] गर्भ विषै मयममाभले सोवालकमोलेमास ताईं शिशु कहिये २८ हे गरुड वालकके वास्तै भोजनसताईसदिन [illegible] कूंपंचवर्ष ताईं कुमार है उपरांत पापपुण्यलगतहै २९ हे गरुड [illegible] गरुड

भूमौ निखननं वाले [illegible] दंतजननात्परात् स्याद्या वदा [illegible] सर्वशास्त्रेषु कुमारो [illegible] २० वालस्यार्थे भोजनीया [illegible] २१ [illegible] २२ पूर्वेतु [illegible] २३ [illegible] २४ [illegible] २५ इति श्रीगरु॰ प्रेत॰ [illegible] नाम दशमोध्यायः १०

प्रथम कहाँ सो कौ रदशपिंड और अंत्य कर्मके प्रतापआत्ममोहके प्रतापकरिकै २३ अल्पवयशुक्रियापापा अल्पकौर जिननेवारु वेलथामनुष्यकि जितनो विषकूं रोवतहै २४ जितनोसुफलाईजीवैसो देवइच्छा मनुष्यप्रसवकोद्वैहसो उपजायोसो देवतन कोप्यारोहै इतिश्रीगरुडपुराणे प्रेतकल्पे भाषाटीकायां दशमोध्यायः ॥१०॥ ५३

श्रीभगवान कहते हैं हे गरुड यमके दूत पापीन पास मां गत हैं वालक होय तथा ज्वान होय तथा वृद्ध होय कुंभकी चाइ नास
र्व करत हैं १ सुखसदां नहीं है देही सर्व जोनि विषें जव जैसें सर्प कांचली उतारे ताप्रभाव सुं जीव देह छोडत है २ हे गरुड अंगु
ष्टमात्र पुरुष होत है वायु कौ स्वरूप भूष तृषा लागत है जा कारण मृतु कौ नाम लेके दान कर्नो योग्य है ३ हे गरुड जन्म ते पंच वर्ष

श्रीभगवानुवाच यमेन यम दूतश्च सा स्यन्ते निश्चयं खगः वालो वा तरुणो वृद्धो यदेह्या सर्व देहिनां १ सुखं दुः
खसदा नैव देही सततं स्त्विहै परित्यज्य तदात्मा नां जीर्णं स्वंच मिवोरगः २ अंगुष्ठमात्र पुरुषो वायुभूतस्तु धादि
नः तस्मा देहावि दानानि मृतेलस्मिन् सुनिश्चित ३ जन्मतः पंचवर्षाणि भुक्ते दत्तन संस्मृतम् पंचवर्षाधिके वाले
विपति यदि जायते ४ वृषोत्सर्गादिकं कर्म कर्तव्यं सुद कं ततः अहन्यहनि संध्या न्नेकुर्याद् हुतनि षोडशः पाय
शेन गुडे नैव पिंडान् दद्यात् पृथक् पृथक् ५ घटदानं मासिकं तु श्रयो दशाय दाने च भोजनं ब्राह्मणानां च स्वश
क्त्यनुखगेश्वर ६॥

होय सो अपनी दीयो भुक्ते है और पांच वर्ष सुं अधिक होय और घर में पति होय तौ भी वृषोत्सर्ग कीजे अंगुली दीजै ४ नि
त्य के नियम ते लिखाइ कौ पांड तथा गुड में पिंड भरे ५ हे ग॰ ह मास मास [illegible]

हे पक्षिन में अशार्दूल वरस दिन पीछे पितृन में मिले है सो पिंड प्रवेश करि के घट दान नित्य करे निश्चें करि कें ७ पिंड में मिले पीछे प्रेतप विन्न होत है शुभ गति कूं जाय है पिंडी स्वरन के गण में वास करे है ८ अपने गोत्र में विवाह हुद्द होय तो त्रिपक्षी को छमासी को पिंड भरे ९ भिखारी भिक्षा लेय न हीं जितने नाईं पिंड मेलन होय नहीं जितने आप के कुल में अशुचि हैं १० पिंड मेलन भये पीछे प्रेत

62

पिंड प्रवेश विधि ना नस्य नित्यं घटादिकं निश्चिनं पाक्षेशार्दूलं पितृ वत्से मिलेन तु ७ सह पिंड कृते प्रेतः पूतो याति परां गतिं नदा मल परित्यज्य तत पितृ गणो वशेत् ८ षण्मा शेवा त्रिपक्षे वा मेलयत्स्वतिमहे ज्ञात्वा हुद्दा विवाहा दिस्वगोत्रे विहिता निच ९ भिक्षु भिक्षां न गृह्णाति पान्न पिंड मेलनं स्वगोत्रेण शुचिस्ता वद्या वत्पिंड मेलयत् १० मेलना न्वेन पिंड स्तु निवर्तेत स्वगेश्वरः अनत्या कुल धर्माणां पुंसां चैवायुषः क्षिपात् ११ अस्थिते च शरीरस्य द्वादशाह प्रशास्यते संवत्सरे त्रिपक्षे वा सपिंडी करणं विधिः १२ सपुत्रस्य न कर्तव्यं एकोद्दिष्टीक दाचन : सपिंडी करणादूर्ध्वं यत्र यत्र प्रदीयते ॥ १३ ॥

योनि तें छूटत है मलेकुल में जन्म पावत है आयु बल बहुत पावत है मृत्यु भये पीछे द्वादशा के दिन शुद्ध है पीछे त्रिपक्ष को पिंड भरे १२ स पुत्रा को दिष्टन करे सपिंडी किये पीछे जा जा ठौर पिंड देवे ॥

63

हेगरुड़ बहुत वर्ष पुत्रि होय मनुष्य कह्यो है समस्ता हीन होय तौ सर्व क्रिया स्त्री करै है २२ रित्विज करै तथा पुरोहित करै है भलीविधि जनेऊ पहरिकें पिताको श्राद्ध करै २३ स्वधाकार कहत वेद अक्षर कहे नहीं भर्तार ते ति निपिंडी को नाम लेकें पिंड भरै २४ पितासंग्र थ-वाभाई के पुत्र संतथा छोटे भाई करि पिंड भरै पीछें क्रिया पण सोई करै २५ पिंड भरै सोई वत्सक्रिया करै दूसरो करै तौ पित्र

सर्वेंतेमेव पुत्रेण पुत्रिणो मनुमब्रवीत सर्वेषां पुत्र हीनानां पत्नी कुर्यात्सपिंडनम् २२ ऋत्विज्यो कारयेद्वापि पुरोहितमथापि वाकृत्नकंठोपणोनश्च पितुश्राद्धे समारभेत् स्वउदरेतव धाकार णंतु वेदाक्षरन्यसौ भर्तादिभिः कार्या सपिंडी करणोक्रिया २४ पितृभ्य भ्रातृपुत्रेण सादरेण कनिष्ठयः श्रायेस पिंडी कृत्वा तेषां नास्यात् पृथक क्रिया २५ सपिंडनै कृतेवत्स पृथक्केन च व हिंतस य स्तु कुर्यात् पृथक पिंड पितृहा सोभिजायते २६ सपिंडी करणे कृत्वा एकोदिष्टं करोतियः आत्मानं वात थाप्रेतं सनयेद्यमसादनं २७ वर्षायाव क्रिया सर्वा प्रेतत्व विनिवृत्तये नाम सर्वा ये कृत कार्या नामगोत्रकरं परम् २८ घटादि भोजनं नित्यं दीपदानानि यानि च सपिंडी करणे कृते एके नैव समापयेत् २९॥

इत्यारो कहिये २६ सपिंडी कीये पीछें एको दिष्ट करै तो अपने प्रेतन कूं नरक में गेरै २७ वरस दिन तांई क्रिया करै तो प्रेतयोनि ते छूटै सो सवरो कनाम गोत्र करिकें पिंड मेले २८ घटदान करै नित्य अन्नदान करै दीपक करै नित्य

स्त्रीपुर्ष एक दिन जले होंय तो क्रिया एक करै पिंड न्यारे न्यारे भरै ३७ एकादशा करै वृषोत्सर्ग करै सोलह श्राद्ध न्यारे न्यारे करै कुंभ दान महादान पदारथ दान करै ३८ वर्ष दिन ताईं न्यारे २ पिंड भरै तौ भेल त्रय प्रि होय एक गोत्र में जो स्त्री तथा पुर्ष जो मरै तौ ३९ स्थापना एक करै होम न्यारो करै एकादशा के दिन श्राद्ध भोजन करै तो भलो ४० एक पाक सं स्त्री पुर्ष का करै और भेला जोम्य

एकचित्यां समारूढौ दंपती निधनं गतौ । क्रियां प्रकुर्वीत पिंडान्दद्यात्पृथक्पृथक् ३७ एकादश्यां वृषोत्सर्गं पृथक्श्राद्धानि षोडश । घटांश्च प्रददानानि महादानानि यानि च ३८ पृथग्वा वत्सरं यावत्कुर्यात्सेतत्रयं प्रि(यं) ... एक गोत्रे मृतानां तु स्त्रियो वा पुरुषस्य च ३९ स्थंडिलं चैककं कुर्यात्तु होमं कुर्यात्पृथक्पृथक् एकादशे क्रियेत श्राद्धं न कुर्यात्पृथक्भोजनं ४० पाकेनैकेन पतिस्त्रीणां अन्येषां वै वपार्हिणं (?) एकेनैव तु पाकेन श्राद्धानि कुरुते वहु ४१ विकरं चैककं कुर्यात्पिंडान् दद्याद्बहून्यपि तीर्थे चापरपक्षे वा चंद्रसूर्यग्रहे यथा ४२ नारी भर्तारमासाद्य कुणपं दहने यदा । अग्निर्दहति गात्राणि आत्मानं चैव गीयते ॥ ४२

नहीं एक पाक सं श्राद्ध वहुत करै ४१ हे गरुड विकर पिंड करि पिंड भरै और घणा पिंड भरै तीर्थ विषे पिंड भरै दूसरे पक्ष में चंद्र सूर्य ग्रहण होय तो पिंड भरै ४२ नारी भर्तार मासाद्यं कुणपं दहन यदा जे स्त्री भरतार पीछें देह कूं जलावै सो सुख सं भलो गति

भले सुखसु भर्तार संसार है ऐसी भांति न करै सो स्त्री भली नहीं धर्म की व्या हीन है ऐसी भांति तारै है पति कूं ५० हे गरुड पति संग जले नहीं सो स्त्री सात जन्म विषे दुःखी होय ५१ हे गरुड दूसरे जन्म दुर्भागनी होय सत्य जानों ताकार देवता पितृन ते अधिक सेवा भर्तार की है ५२ ऐसी स्त्री भर्तार में जाको चित्त सो जाको आधो पुण्य है हे गरुड भर्तार को ले है ऐसी भ

महत्व तिमवा प्नोति भा ना सह पति व्रता एवं न कुरुते नारी धर्मे रा प ति सं गमे ५० पति जन्मा निदुःखा निदु शीला भय वादिनी वल्गु गृह गोधा च सुकरी हसु खी भवेत् ५१ सं भर्ता सं परित्यज्य पर पुंसानुवर्तिनी तस्मात्सर्व प्रयत्नेन स्वपुंससेवनं शुभम् ५२ तस्यापृष्ठ्र नान्य चिंता नारी भुंक्ते स्वर्गेन मम एवं याक्रिय ते नारी भर्तृ लोके वसेच्चरम ५३ यावदादित्य चंद्रो च ताव देवसमा दिवि पुनिश्च रां पुषे भूत्वा जायते पिपु ले कुले ५४ पतिव्रता च या नारी भर्तुर्दुःखं न विंदति सर्व मे तद्ह कथितं मया तव खगेश्वर ॥५५॥

लोक के लोक वसे है ५५ हे गरुड जितने ताई सूर्य चंद्र जितने ताई स्वर्ग में वास करै है फेर पृथ्वी में आवे तौ भाग्यवान होय॥ बड़े कुल में जन्म पावे ५६ अहो गरुड पति व्रता स्त्री भर्तार को दुःख करै नहीं ऐसी मनों तसर्व म ताऊं ॥५५॥

68

[illegible] कियेपीछे [illegible] करै [illegible] मृत्यु भये पीछे फेर करै तौ पूतक [illegible] होय [illegible] जलकुंभ सर्वे [illegible] नहीं होय ६० इति श्री ग॰ पु॰ [illegible] सपिंडी [illegible] महिमा वर्णनो नाम [illegible] हे जगत [illegible]

[illegible] कर्णं ना [illegible] [illegible] मृत [illegible] पुनः कुर्यात्सुतो [illegible] इति श्री ग॰ सपिंडी [illegible] महिमा वर्णनो ॰२२ [illegible] सर्व [illegible] [illegible] ॥५॥

69

[illegible] हे गरुड मनुष्य के [illegible]

[illegible] हमारो [illegible] ॥ ७ ॥

ग॰पु
६८

हे गरुड त्रेता में आगे करुवाहन राजा होतो भयो यज्ञदान को करने वालो ब्राह्मण साधु वत्सल होत भयो ५ भलो सील आचार गुण
दया दाक्षिण्य सं संयुक्त प्रजा कूं पुत्र के समान पालतो भयो ६ हे गरुड एक समें राजा मृग परसिकार खेलत भयो गह्वन वन में
नाहर पक्षि वहुत हैं तहां राजा जात भयो ७ हे गरुड सिंह चीते वहुत पक्षी वोले हैं ऐसे वन में दूर ते राजा नैं मृग देख्यो ८ ताकुं राजा

पुरा त्रेतायुगे तार्क्ष्य राजासीद्बहुवाहनः यज्वा दानपतिः श्रीमान् ब्रह्मण्यः साधुवत्सलः ५ शीलाचारगुणोपेतो दया
दाक्षिण्यसंयुतः प्रजापालयते नित्यं पुत्रानिव महाबलः ६ स कदाचिन्महीपालो मृगयां गंतुमुद्यतः वनं विवे
श गहनं नानापक्षिसमन्वितम् ७ शार्दूलव्याघ्रसंजुष्टं नानाविहंगनादितः वनमध्ये तदा राजा मृगं दूराच
दृष्टवान् ८ तेन विद्धो मृगस्तावत् बाणेनाशुद्रदेन च मनमादाय तत्रस्य वने दर्शनमेपिवा ९ कुक्षो सोणित
लग्नस्य राजा तं जलद्रुमहे ततो मृगप्रसंगेन वनमन्यं विवेश ह १० क्षुधामकंठो नृपतिः श्रमसंतापमूर्छितः
जलाशयं समासाद्य स्वयमेवावगाहनः ॥११॥

निं बान करि कें भेद डार्यो सो यह मृग बान कूं लैकें अंतलोप होय गयो ९ कुक्ष में लोहू निकस्यो सो राजा ता मृग के पीछैं अकेलो ही
गयो दूसरे वन में प्रवेश होत भयो १० क्षुधा लगी तृषा लगी राजा कूं श्रम संताप उपजो एक श्रम शरीर पाई जो राजा घोड़े में तन

६८

ग॰पु
टी
६९

[illegible] होहैं [illegible] ओरकी [illegible] राजा वेठत भयो आश्चर्य की वडी शाखा है
[illegible] वडो वन में जहां [illegible] सघन में [illegible] रूप है [illegible] वट के व [illegible] नीचें राजा वै
ठत भयो १४ तव राजा नें [illegible] इन्द्री

[illegible] १२ [illegible]
[illegible] नलसमन्वितं म
[illegible] मालीनं कुजं
कुजं निर्मासि [illegible] तं सम नमरि
वारितम् १६ [illegible] १७ तदा [illegible] कु
[illegible] ॥१८॥

[illegible] हे १५ [illegible] १६ हे गरुड
[illegible] वन में आयो है १७ ता समें [illegible] राजा
[illegible] ॥१८॥

६९

चेतनकौराजाकहेहै प्रेतकौभाव छोड़ि कैं तुमारे पास आयो १८ जिनकुं तुम्हारो दर्शन पायो है सो धन्य है १९ हे गरुड बभ्रुवाहन राजा कहे है तुम कहा कर्म करि कें प्रेत भये हो सो सम्पूर्ण वारता हम सूं कहो २० ताकूं राजानें वान करि कें भेद डास्यौ सो वाम गहे राजा प्रेतन कों कारण कहूं सो प्रेत योनि ने दया करि कें छुटायौ २१ वैदश नाम नगर है एक तामें सर्व ठकुराई बहुत है रत्नम

प्रेतभावमयत्यक्त्वा तव तिकस्तुपागतः त्वत्संसर्गान्महाबाहो नास्त्यधन्यतरोऽपरः १९ बभ्रुवाहन उवाच प्रेतत्वकारणं तावत्तद्ब्रूहि सर्वमशेषितः येनकर्मविपाकेन प्राप्नेयं विकृतिस्त्वया २० प्रेतराजोवाच कथयामि नृपश्रेष्ठ सर्वमेवादितस्तव प्रेतत्वे कारणं श्रुत्वा दयां कर्तुमिवार्हसि २१ वैदशं नाम नगरं सर्वसंपत्समन्वितं नानाजनपदाकीर्णं नानारत्नसमाकुलं २२ तत्राहं निवसन् तात देवताश्च नरा तथा वैश्याजात्यां तु देवेशनाना विहितं सुतेः २३ हव्येन तर्पिता देवा कव्येन पितरस्तथा २४ विविधैर्दानयोगैश्च विप्रसंतर्पिता मया २५ भ्रासाश्च विवाहाश्च महियावैश्युनिवेसिता नमास्ति संतति तात न सुहृत् न च बांधवः २५॥

णि करि कें सोभायमान है सब सम्पति करि कें आरूढ है २२ ता नगर में मैं रहतो देवपूजा बहुत करी ज्ञात को वैश्य हौं सुदेव मेरो नाम हो २३ हव्य करि कें देवतान की पूजा करी कव्य करि कें पितरन की पूजा करी भले प्रकार के दान करे ब्राह्मणन कूं संतुष्ट किये २४ भले ठिकाने बनाये कुवारी कन्यान के विवाह कराये दीनानाथ कों अन्न को दान कियो ॥२५॥

[illegible]

नमस्ते वैविक [illegible] बांधवाः २६ न च मित्रो [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] इति श्रीगरुड॰ प्रेत॰ प्रेतराज [illegible] नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥

[illegible] तुम कहो हे वीर हमारो भलो [illegible] इति श्रीगरुडपुराणे [illegible]

राजा पूछै है ऐसी उई वेह की क्रिया किस भांति करिकें कैसी विधि है सो कहो मोसूं १ एकादशा संलैकें वरसीता ई कार्य करे औ
र फेर विशेष कहूं सो सुनि २ हे गरुड दोमासि सो नेकी प्रतिमा श्रीनारायण की बनावै सर्वआभरण पहरावै भलो पीतांवर पहिरावै
चंदन अगर सूं पूजा करै दूध जल सूं स्नान करावै ब्राह्मण कूं बोलकें ३। ४। पूर्व में श्रीधरजी बनावै दक्षिण में मधुसूदन प-

बभ्रुवाहन उवाच तत्कथं च मया कार्य्यं ईदृशे कमात्मनः विधिना येन तत्कार्यं सर्वमेव दयस्व मे १ प्रेत राज
उवाच। एकादशाहे दाराभ्य कार्य्या यावत्सरं बुधैः तत्राचान्यै विशेषोयं वतत्वं च निबोध मे २ सुवर्णरूपमा
श्रस्याय चंतास्यं प्रकयेत। नारायणस्य देवस्य सर्वभार विभूषितां ३ पीत वस्त्र युग छन्नां चंदनागुरु चर्चि
तं सुस्नानां विविधैस्तोयैः धस्य द्विजो नमः ४ पूर्वे तु श्रीधरं देवं दक्षिणे मधुसूदनं पश्चिमे वामदेवं तु उ
त्तरे तु गदाधरं ५ मध्ये पितामहं देवं तथा देवमहेश्वरम् ततः प्रदक्षिणं कृत्य वन्हो संतर्पे देवता ६ घृतेन
दधिक्षीरेण विश्वेदेवांस्ततो र्चयेत् ततः स्नात्वा विनितात्मा यजमान समाहितः ॥७॥

श्चिम में वामदेव उत्तर विषैं गदाधर बनावै ५ मध्य विषैं ब्रह्माजी महादेवजी ता पीछैं प्रदक्षिणा करै अग्नि विषैं संतर्प

रूइभयानकहैसोदेवतानमेंश्रेष्टहै २६ श्रीभगवानकहतहैं हे गरुड जे ब्राह्मणको द्रव्य असंदेवालकनकोधनस्त्रीनको चुरावैसोमरिकेंप्रेतहोतहै २७ ब्राह्मणीकूंबुरीनजरदेखेसोप्रेतहोतहैतापीछैंपशुकीयोनिपावतहै २८ मागिमूगाकीचोरी कौरएमेंसंभागेश्रौरकीयेगुणमानेनहींनास्तिकहठी इतनेप्रेतयोनिपावैहैं २९ गरुडजीपूछतहैं महाराजसमस्तजीवनकी

सभवंतिसुरश्रेष्ठकतोरण्योर्हदेहिकैः २६ श्रीभगवानुवाच ब्रह्मस्वंदेवद्रव्यंतुस्त्रीणांवाधनकंचितवहाति खगश्रेष्टकतोरण्योहदेहिनैः २७ ब्रह्मणीयेभिगछंतिदुहियोहान्वतानरातेभवंतिमहाप्रेतापशुयोन्यहृजंनिते २८ अवलावज्रहस्तारोमखुंजेयपराङ्मुखाकनघ्नानिस्तिकारौद्रास्तथासाहसिकामदा २९ गरुडउवाच सर्वेषांम नुकंपार्थंब्रूहिमेंमधुसूदनः प्रेतत्वान्मुच्यतेयेनदानहतःभयापिवा ३० साधुपृष्टखगश्रेष्ठवाच्यथामिमेचो धसेप्रेतत्वंनभवेयेननेदानेनशुभेनचदानंचपापघटकंसर्वाशुभविनाशनंसंतमहटकंमयंतुघटकंविधायब्र ह्मेशकेशवयुनंसहलोकपालैक्षीरज्यदर्भसहितांप्रतिपत्यभक्त्याविप्रायदेहिनवदानसतैःकिमन्यैः ॥ ३२ ॥

स्याकेवास्तेकहोदानहततेंश्रैसोवनावोतातेप्रेतयोनितेछूटे ३० प्रभुकहतेहैं हे गरुड भलीवार्ता इछीसर्वहतांतसुना उंजापुण्यतेप्रेतयोनिछूटे ३१ हे गरुड दानपापघटकोसर्वश्रशुभकौनाशकरैतातेसोनेकाघटवनावेब्रह्माविष्णुमहेश

एकवस्त्र सूं जल देना क्यों सूर्य सन्मुख देखे सो क्यों देखै जव सरसों पत्थर ऊपर क्यों लिखे ३१ ना पीछें घर आय कें आप अन्न-
भोजन क्यों करे नव पिंड पुत्र कौन कारण भरे ३२ माटी को पक्को पात्र तामें दुग्ध डारकें तीन लकडी सूं बांधिकें मार्गमें धरे सो
कहा कारण है ३३ दीपक वर्ष दिन ताईं करे सो क्यों दाहा किये पीछें एक ठौर होय कें जलांजली देत हैं सो कारण कहो ३४ हे भग-

पाणीयमेकवस्त्रेण सूर्यबिंबनिरीक्षणं जवसर्षपदूर्वा च पाषाणे निंबमेव च ३१ अन्नं गृहमागत्य न भोक्त-
व्यं समज्जनेन नवकानि च पिंडानि किमर्थं ददते सुतः ३२ किमर्थं चतुरे दुग्धं पात्रे पक्के च मृन्मयः काष्ठत्रयगुणे
बद्धा कृत्वा शनो चतुष्पथे ३३ दीपकं चानिशा नित्यं [illegible] यामि दिने दिने दाहोदकं किमर्थं च किमर्थं च जनो ग्र
ह ३४ भगवानग्निवाहश्च नपिंडो कथं भवेत् कथं ते यंत्र पीडश्च वाहश्च वहनं कथं ३५ अस्थिसंचयनं चैव
सैय्यादानं किमर्थकं द्वितीयेऽह्नि कुतः स्नानं चतुर्थे चाह्निके दिने ३६ दशमे च जनस्नानं किमर्थं स्वजनैः सह तैलमु
द्वर्तनं चैव दीयते च जलाश्रये ३७ दशमेऽह्नि तथा पिंडं मद्घादा भिषणात् पिंडमेकादशं कस्मात् वृषोत्सर्गे तु पूर्वकम्

वान् मृतक कूं क्यों जल दीले जावें हैं नव पिंड क्यों भरें हैं आगे के कंधा लगाने वाले पीछें क्यों होंय है पीछे के आगें क्यों होन हैं सो
कहो ३५ फूल क्यों वीनें सय्या दान कहा है सो कहो ३६ दशमे दिन सब बांधव स्नान क्यों करे तेल क्यों लगावे सो कारण कहो ३७
दशमे दिन सत्री पिंड मास को भरे पीछें एकादशा वृषोत्सर्ग में आगें पिंड भरे सो कौन कारण है सो आप कहो ॥ ३८॥

78

७९

ग॰पु॰

४१

भोजन [illegible] क्यों [illegible] जल तिनमें [illegible] को दे
हहें सो कारण कहा है ४० [illegible] जीव कहा
[illegible] पंच महाभूत कहां जात हैं [illegible] पृथ्वी वायु [illegible] आकाश पंच [illegible] इन्द्री सर्व कहां जात हैं

भोजनो [illegible] कथं ३८ [illegible]
[illegible] ४० दिने दिने [illegible]
[illegible] ४१ [illegible]
[illegible] ४२ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] संवत्सरे पिवा ४७॥

पंच वायु कहां जात हैं [illegible] सो कहा जात हैं ४४ [illegible] कहां जात हैं ४५ [illegible]
पीछें दान कियो सो कहां जात है [illegible]

प्रेतनकुं पितस्वरनकूं मेले ताकी विधि कहो मूर्छा आवे पडे विपतितो ४७ वेद पाठमें योग्य है ऐसे मध्य संग्रंत समे कैसो फल भुक्ते है ४९ पापरति रहे दुष्टपुरुष आत्मघाती ब्राह्मणको ऽसम चोरे विश्वासघात करे ४९ कपिला को दूध सद्र पीवे वेद केअक्षर पक्षेय ज्ञोपवीत धारण करे तिनकी कैसी गति होय सो कहो ५१ इति श्रीटीकायां चतुर्दश १४ श्रीकृष्ण कहत हैं हे गरुड तैनें भलो प्रश्न पूछो मनुष्यनके क

प्रेतस्य मेलनं केषां किंधिकारयेनत: मूर्छितात्यतनदवापि विपतिय द्विजाय ते ४८ वेदाध्याये ग्रजोवाथ्य पतितावैन रासु वियानिचान्यानिभृतानिनेषां भवेतन्क थे ४८ पापकर्मा दुराचारा गाचान्येगीतपुश्चलीआत्मघाती ब्रह्म हाचस्तेच विस्वासघानकः ५० कपिलाया पिबेच्छूद्र यः पठेद्वेदमक्षरं धारयेद्ब्राह्मणंसूत्रं कागतिनस्य माधवः ५१ इति श्रीग.पु.१४ गरुडजेमप्रश्न करनो २५ श्रीभगवानुवाच साधुपृष्टंत्वया वत्स: मनुष्यानां हितायवे श्रृणुस्वावहितो भूत्वा सर्वमेव द्धदेहिकं २ समकवंतेदृष्टा हितं श्रुतिस्मृतिसमुद्भतं यत्र दृष्टं सुरैः मद्वे योगिभियो गोविचकैः ३ गुह्यगुह्यतरं वत्सना ख्यातं तस्य चित्कश्चित् भक्तं स्त्वं हि महाभागे तेन ते कथयाम्यहं ४ अपुत्रकागति र्मो ऽस्ति स्वर्गे नैव च नैव च ।। का कांसा व्यपायेनकार्य्यं जन्मसुतस्य च ॥ ५ ॥

त्यानके वास्ते सो सावधान होयकें सुनो ऊर्द्ध देहकी क्रिया कहुं १ सब शास्त्र वेद भलो है देवता योगेश्वर सुनो नहीं सो कहो २ हे गरुड गुह्य नाम छिपी प्रसंग है आगे मैंने कह्यो नहीं सो तू मेरा भक्ति है

ब्रह्मा विष्णु लक्ष्मी अग्निमंडलचाकमेंसब हैं १४ बालक वृद्ध तरुण वायुभूत होयके भ्रमें है सो गतिकूं नजावे १५ हेगरुड मिथ्या मकेमार्गमें वायुभूत होय तिनकूं अंजलीकिया नहीं १६ हेगरुड हमारे पसीनेते उपजे तिल तासूं पवित्र हैं हेगरुड नासत्र असुर दानव दैत्य तिलदेखके भाग जात हैं १७ तिल उज्जल तिल कृष्ण तिल धूमरा सोनेसर्व पापनकूं काटे हैं १८ तिलनकोदानहोण

ब्रह्मविष्णुश्च रुद्रश्च श्रीहुताशनमेवच मंडलेचोपतिष्ठंति तस्मात्कुर्वीत मंडलं १४ अन्यथा मृत्यवे यस्तु बालो वृद्धो युवापि वा योन्यं तरं नरागच्छेत् क्रीडते वायुनाश्रय १५ तामिश्रं लोहितामिश्रं तदेवयमयातनात स्यैववायुभूतस्य नश्राद्धं तोयकं क्रिया १६ यमस्वेदसमुत्पन्नाः तिलाः पवित्रकाः असुरा दानवा दैत्या विद्रवंति तिलायतः १७ तिलाः श्वेततिलाः कृष्णा तिलागोमूत्रसा लिवा नमेदहंति पापानि शरीरेण कृतानिच स्याकएकतिला दत्तो हेमद्रोण तिलसमः नर्पणं दानहोमाभ्यां दत्तोभवतिच क्षय १९ दर्भलोमसमुत्पन्नाः तिलाः स्वेदान्यथा नरा स्त्रिदेवता दानेवासनेपि पूर्ं स्तथा २० आम्नेन विधिना ब्रह्मा विश्वस्यास्य यजीवनात् सव्य यज्ञो पवीतेन ब्रह्मात् प्रीतिश्च मानुषुः अपसव्येन तृप्यन्ते पितरो देवदेवता २१॥

सोनें समान लेतर्पण दान हैं मैं तिलन संकौं तो अक्षयफल हो

पर्व हेगरुड दर्भमेरे परवानते उपजी हैं तिलपसीनाते उपजो है दानसों देवतानृप्ति होत है और स्वायते पितृतृप्ति होत है २० ब्राह्म[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] संसारसागर २९

[illegible]

ग॰पु॰ टी॰ ८४

हे गरुड आप शरीर डोलत फिरत में जो दानकरे और पुत्रकी तरुणा न करै तो सुखी होय और पुत्र तो पिताकूं तारे है २२ हे गरुड और बहुत दान का कहा करै केवल एक पिता की सेवा करै तो अश्वमेध यज्ञ को फल होत है २३ धर्मात्मा पुत्रकूं देवता सराहत

स्वस्थेन चलितेस्वासे कल्यो नो घातु रक्षणेपुत्रैः। तृष्णानकर्तव्यं पितरंतारयंतितै २२ किंदत्तैर्बहुभि र्दानैः पितुरेषं समाचरेत् अश्वमेध महायज्ञा कलांनार्हंति षोडशीं २३ धर्मात्मा सच पुत्रो वै देवतैः ॥ रपि शृज्यते दापयेघस्तु दानानि पितरं यांतितं भुवि २४ लोहदानं तु दातव्यं भूमियुक्तेन पाणि ना यमसीमान चाप्नोति नागच्छेत्तस्य वेश्मनि २५ कुडारोमुशलो दंडो खङ्गश्च छुरिका स्तथा यतानियमहस्ते च विग्रहे पापकर्मणा २६ तस्मालोहस्य दानं तु रेविडतमोदद्यात् यमायुदानापि ध्येन दानं मेतुदीरितं २७

हे सो पिताकूं धरतीपै देखकैं दानकरै सो फल्यो है संसार विषें २४ लोहेके दान ना करै धरतीपै पडो देखकैं दानकरै सो यम के निनजावै नहीं २५ यम राज इतने आयुध धारण करै हैं कोन से कुहाडी मूशल खड्ग छडी पापीन केवास्ते २६ ताकारण लोह

ग॰पु॰ टी॰ ८५

आतुर समें लोह दान करै ता सुं यम के आयुधकी पीडा होय नहीं २ वालक होय तथा युवान वृद्ध तिन समस्त कुं ऐसो दान भलो है आप के दान कियेहैं सो सबन कूं जलावे है २८ यम राजके सेवक पाखंडी हैं अर्क इं ... सर्व लोहे के दान सूं प्रसन्न होत हैं ॥२९॥

गर्भस्यो शिशिधोजंतु जुवानस्य विरेस्तथा येभिदान विषेजंतु निर्दहेत् स्वपाकजं २९ यमस्या नुचरा यत्र पाषंडी र्कस्य दुंबरा स्वबलस्य यमादूता लोहदानेन प्रीणिता २८ पुत्रपौत्रवांधवा श्च स्वगोत्रा सुहृदयः स्त्रियः नदेदत्यातुरेदानं भ्रूणहत्यानसंशय ३० पंचत्वंभूमिदु ... भ्रमण नस्यचया गतिस्तिवाहस्तथाप्रेतो वर्षानिसुकृतां लभेत ३१ अग्नित्रयं त्रयो वेदास्त्रयो लोका स्त्रयो मया कालत्रयंत्रिसंध्या च यो वर्णास्त्रि शक्तयः ३२ पादादौ च कटियावत्तावद्ब्रह्मा च ति ष्ठति ग्रीवा यावाद्धुधेनाभे शरीरे मनुजस्य तु ३३ मष्टके विष्णुरुद्रोव्यक्तोमहेश्वरः ॥

पुत्र पौत्र वांधव गोत्री आतुर समें दान न देय तो गर्भ हत्या लगे है ३० धरती पीदावै ना गति कहा अतिवाहसल प्रेत वर्ष के अंत सुफल पावे है सो कहू कौसो ३१ तीन अग्नि है तीन काल हैं त्रिशक्ति है ३२ पादन मूलैं के कटि नाई ब्रह्मा बसे है ग्रीवा सूं ले कें नाभि ताई श रीर में प्रत्यक्ष है ३३॥

८५

धर्मपापकी मतिमेंही देतहूं जैसे पूर्वजन्ममें कर्म करै तैसी बुद्धि मेंही देतहूं १४ हे गरुड धर्ममें चित्त मेंही राखूं और अधर्म विषै
चित्तमें ही राखूं नाम करे है १५ पापीनकूं भ्र धर्मविषै मतिमेंही देतहूं मनुष्यनके कल्याणके अर्थ अंतसमें वैतरणीको दान
सर्वपापनकूं दूर करेहै १६ बालक अवस्थामें करे तथा कौमार यौवनमें अथवा जन्मान्तरमें पाप करे सो होय सो १७ रात्रिकों तथा

धर्माधर्ममतिं दक्षं कर्माभिस्वं शुभाशुभौ यत्कर्मा कुरुते कामी पूर्वजन्मार्जितं खगः १४ धर्मे चिंतामहं कर्ता
अधर्मे यमरोण वच पापनां कुरुते सोपि धर्ममतिं ददाम्यहं १५ मानुजानां हितादानं अंते वैतरणी स्मृतं तदा
पापं दहेत् सर्वं विष्णुलोके सगच्छति १६ बाल्याभावेतु कौमारे यत्पाप यौवने कृतं वयस्य परिणामे च पश्चजन्मा
न्तरेष्वपि १७ यन्निशायां तथा प्रातर्मध्यान्हे च पराह्णिके संध्ययो पकृतं पापं कर्मनाशान्नथागरी दत्वा गां शुभगा
सेका कपिला सर्वकामदा उद्धरे सर्वकालेतु यानंतकाल्विपातत: २९ गावो मे कायतेसंतु गावो मेसंतु पृष्टतः गावो मे
हृदयं संतु गावो मध्ये वसाम्यहं २० लक्ष्मी सर्वलोकानां या च देवी व्यवस्थिता धेनुरूपेण सादेवी मम पापं विपोहति २१

गाय एक कपिला भले लक्षण सहित अंतके समें उद्धार है १९
दिनको मध्यान्ह संध्या पीछले पहर कर्म करै मन करी वचन करि १८
... मैं मेरे पृष्ठके सदा मेंवसहुं गो मेरो स्वरूप है २० हे गरुड जो ल

ग.पु.
टी.

कोघोडे रथहाथीब्राह्मणकूं दान देत हैं अपनीयथाशक्ति करिकें सो सुखउपजै ८ नानाभांतिन के लोकनमें विचरे है ने भैंसकोदान
करे हैं यमनकी असवारीप्रसन्न होत है २० तांबूलपुष्प दान करे तो यम के सव चाकर प्रसन्न होत है २१ गऊ धरती सोनो मृत्युककोना
मलेकें जैसी शक्ति होय तैसो ई दान करे यथाजलपात्रदान करे सुतिका कोमेत की निहनी २२ जलको पात्रदान करे तो हजारघर

योऽश्वरथं गजं वापि ब्राह्मणे प्रतिपादयेत् स्वमहिम्नानुसारेण तत्र सुखमवाप्नुयात् ८ नानालोकान्विचरति
सो हीषी वद्दाति यमवाहस्य यामातामहिषीं सुगति प्रदा २० तांबूलपुष्पदानं यो याम्यानां हर्षवर्द्धनं तेन
संप्राणिनां सर्वेन सिन्दाने प्रवर्तते २१ गो भूतिलहिरण्यादि दानं स्याजश्च शक्तितः मृतो देशे न यो रथात्जल
पात्रां श्च सन्मय २२ उदकपात्रसहस्रं च फलमाप्नोति मानव यमदूता महारौद्रा करालाः कृतिपिंगलाः २३ न भीषयंति
तं नाऽस्त्रवस्त्रदानेनकृतेमति मार्गे विगच्छमानस्य तत्पातं शमपीडितः घनदानप्रभावेन सुखीभवति निश्चितम् प्राप्यात्
स्मीपति छत्रां सुखश्री पेथधावकाः पाप्या च दक्षिणपुक्ताश्च याधाम्या भरणानि च हेमभीपतिपुक्ताश्च दत्वा द्विजातिपेतेनवे
नस्यभुक्ते समाप्स्ते दैवतैः सदा २६

कोफल पावे यम के दूत महाभयानक विकराल काल हैं ताकारण कपडादान करे सो ईमार्ग
विषंसुखी होय सीत लगे नहीं कपडा के दान ते २४ सय्याके समें के विछोना भला ऊशीसा नाम गेंडुआ से स्या दक्षिण संज्ञाय धान्य
[illegible] रेवेसो प्रेत योनि ते छूटे ॥ २६॥

ग.पु.
टी.

हेगरुड ऐसो वृतांत मैंने सुनायो अव फेर दूसरो देह में जीव जावे है सो कहूं २७ उपज्योजो वनाकूं मृत्यु अवस्य है मृत्युकूं जन्मपीछें
आपके धर्मकरिकें जन्म है २८ पूरेदिनन को मनुष्य होय कें पीछे देहगत [illegible] है पीकें निकसे है ये हम तें २९ नव द्वार है २९
रोमहैं योगेश्वरन को जीव कपाल में हैं कें निकसे है सो पापिन को जीव नीचे [illegible] निकसे है ३० पत्र [illegible] हैके निकसे है पीछे कालवश

एतानेकानि तं नार्त्त्यदानमेनेष्टकर्मवच्छ नाकथयस्येदमन्य देहमेवस्तु ने २७ जातस्य मृत्युर्लोके तु प्राणिनां मरणं
फ्रवं मृत्युकृदात्व धर्मेण जायते ना पसंशयः २८ पूर्वकालेन तानांतु प्राणिनां नरवगोतम सप्तसोमु लड़ा वायुर्नि
र्गच्छ स्य मुखलात् २९ नवद्वारे रिंद्रोभिश्च योगिनां तालुरंध्रके पापिनां मधी मार्गे जीवात्मा काम तेऽऋजे ३० मुद्रलेप
तते पश्चान्निगतेमरुदि श्वोकालहत पतत्येवं निराधारो यथा द्रुमः ३१ तपश्चांलीपते मश्वीआपश्चैव तथा सु वने ज्ञ
सिलीयंते शरीरेचरमीरिणः ३२ आकाशे चैव आकाशं सर्वे व्यापितु शांकोतत्र कामस्तथा क्रोधः कायेंद्रियपाणि च
एतानेनाख्यं विख्यातं देहे विष्टं तिनस्करा काम क्रोधो ह्यहंकारो मन स्तै समायकाः ॥३४॥

सो रोप्राणी रविन्द्र जात हैं ३१ कें मिधातो में धरनी समाय जात है जल में जल समाय जात है पवन में पवन समाय जात है ३३ आकाशमें
आकाश समाय जात है काम क्रोध शंकर में समायजात हैं इंद्री जहां ते पैदा भई जहां जात हैं ३३ ऐसो हवाल हे गरुड जो मैंने कह्यो
देहमें इतने वैर हैं तीन से काम क्रोध मद लोभ अहंकार इतने सवन में जाय कहे हैं ॥३४॥

ग. पु. टी. ८२

हे गरुड काल करिके संहार होय जात है पुण्य पाप संग होत हैं अपने करे जो कर्म तिन करि के उपजे है कुरूप स्वरूप जगत विषें २५ फिर देह पाप पुन्य के वस पडे है पंचेंद्रिय समायुक्तः सकलै रहित हि देवतन सहित २६ वेगीस दूसरी देह में प्रवेश करे है ग्रहस्थी आपके ग्रह में पडे ताते शरीर में जीव वसे है असे ही उपजे देखिये हैं २७ या शरीर में छै कोश हैं सो मातापिता के स्वभाव करि के उपजे है हे ग

संहारश्चैव काले तु पुण्येपापेन संयुतः जगत् श्च स्वरूपं तु निर्मितं स्तेन कर्मणा २५ गच्छेदेहं पुनः सोपि सुकृतैर्दुष्कृतैः सह पंचेंद्रियसमायुक्तः सकलैर्विबुधैः सह २६ प्रविशेत् वेगेन ग्रहीव स्वायग्रहं यथा शरीरे ये प्रमाशोना संभवेत्स वैधा नवः २७ षट्कौशिको ग्रहं कासौ मातापित्रोः स्वभावतः संभवेयुस्तथा नाड्यः सर्वदेहाश्च देहिनां २८ मूत्रं पुरूषं नयो गात्रो चान्ये व्याधियस्तथा पित्तश्लेष्मा तथा मज्जा मांसं चैये स्य वच २९ अस्थिशुक्रं च स्नायुस्व देहेन सज्जायते एतत्ते कथितं तार्क्ष्य विनाशः सर्वदेहिनां ३० चतुराशीति लक्षाणां निर्मिता योनयः पुरा कथयामि पुनस्तेषां शरीरं च यथा भवेत ३१ एकस्थंभं समाख्यातं स्थूणाद्वयसंवृतं इंद्रियैश्च समायुक्तं नवद्वारं शरीरकं ३२

रूद सर्व देह में रोगी विधि सूं उपजे है २८ मूत्र पुरीष व्याधि पित्त श्लेष्मा तमज्ज मांस सर्व उपजे है २९ हाड विर्य षाल देह सूं उपजे है असे ही जनावत है हे गरुड जो तो पे वा समस्तको नाश है ३० चौरासि लाख योनि हैं तिनमें शरीर के से उपजे है सो कहूं ३१ एक स्थंभ है जा ८२

94

ग. पु. टी. ८३

विषया [illegible] बंधो है काम क्रोध संयुक्त हो है [illegible] [illegible] मोह स्वरूपी [illegible] बंधी याके [illegible] अहंकार [illegible] सो अहंकार [illegible] ३५ समस्त देवता [illegible] या शरीर में रहत हैं संसार विषें [illegible]

विषयी [illegible] काम क्रोध [illegible] मोह जाल समा [illegible] ३६ [illegible] [illegible] श्लोक [illegible] इति श्री गरुड [illegible] शरीर [illegible] काम क्रोध [illegible] ३

[illegible] [illegible] जीव [illegible] भांति उपजे है [illegible] ८३

95

हाड विषें जंबूद्वीप है मज्जा विषें साकद्वीप है काठि जंघने ऊपर लक्षद्वीप है सिर विषें क्रौंचद्वीप है १७ चमडी विषें शाल्मलीद्वीप है
रोम विषें गोमदद्वीप है नखन विषें पुष्करद्वीप है इतने पीछें समुद्र है १८ मूत्र में षारो समुद्र है और दूध में क्षीरसागर है और दधि
कौ समुद्र श्लेष्म है और मज्जा में घृत कौ समुद्र है १९ रस में दधि समुद्र है लंविका में सलिल समुद्र है गरुगर्भोदय समुद्र है वीर्यस्था

अस्थिस्थाने गते जंबु साकं मज्जासु संस्थितं १७ त्वचायां साल्मली द्वीपं गोमये रोमसंचये नखस्य पुष्करं द्वीपं सागरा
स्तदनंतरं १८ क्षारोदंच तथा सूत्रे क्षीरोक्षीरोदश्चापुरं सुरोदधि श्लेष्म संस्थं मज्जायां घृतसागर १९ रसं दक्षं रसंत
स्थं शोणिते दधिसागरं सलिलं लंविकास्थाने गर्भोदं शुक्रसंस्थितो २० नादचक्रे स्थितं सूर्यो विंदचक्रे तु चंद्रमा
लोचनाभ्यां कुजो ज्ञेयो हृदये बुद्धि संस्थितं २१ विस्नुस्थाने गुरुं विद्यात् शुक्रो शुक्रेष्ववस्थिता नाभिस्थाने स्थि
तो मंद सुखे राहुर्व्यवस्थिता २२ वायुस्थाने स्थितो केतु शरीरे देहमंडले विभक्तं च समाख्यातं आपदानियलपदे॥
उत्पन्ना हे म संसारे मृयते तेन संशयः पूर्णकाले तु जायंते जायते सर्वदेहिनां ॥२४॥

नमें है २० नादचक्र विषें सूर्य है विंदचक्र में चंद्रमा है लोचन विषें कुज है हृदय विषें बुध है विस्नुस्थान में वृहस्पति है वीर्य
विषें शुक्र है नाभि विषें शनिश्चर है मुख विषें राहु है २२ वायुस्थान केतु है शरीरमंडल देह है यामें न्यारे न्यारे यह बसे है आपदा
कोै है सो बताये २३ हे गरुड संसार में ते निश्चे मृत्यु होयगे यामें संदेह नहीं पूरे दिन करिकें अवश्य मृत्यु होयगे॥२४॥

फिर यमलोक के जानेको मर्यादे है धारणा करै है भूष प्यास लगे है दाह बहौत उपजे है २५ आमा रामें धीकुरै मनातो सर्वे अग्नि जले
है ऐसी मार्ग है २६ कैसन कूं पकरिकें यमके दूत लेजात हैं पाप भागके रखनेवाले दया धर्म सुं रहते हैं रोग पापी है तिनकूं २७
यमके लोक दूतने बसे हैं कुवड़ा जन्म निंदक ऐसी भांति हे गरुड जीव कर्म करि जावै है २८ आयुसकर्म धन विद्या मरण ये

नवं चक्राणि तेदेह यमलोकं गतस्य वै सुभुक्षा च तृषा रौद्रा धोडूनाचसुक्षितानश्च पन्थं पीडासमारी द्रासंपौ त्वग
ह्नि कासनमवालुकामध्ये प्रजलं पश्च वह्निना २६ केशग्रहसमाकृष्टा नीयंते यमकिंकरैः पापिष्ठा मध्यमा सा
हिंदया धर्मविवर्जिता २७ यमलोके वसंत्येते कुब्जा धाजन्मनिंदकाः तदसंजायते तत्र स्वे स्वे ज्यां तु स्वकर्मभिः २८ आ
युः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च पंचैतानि हि सृज्यंते गर्भस्थस्यैव देहिनः २९ कर्मणा जायते जंतुः कर्मणैव प्रलीय
ते सुखं दुःखं भयं क्षेमं कर्मणैवाभिपद्यते ३० अधो मुखं च ऊर्ध्वपादं गर्भो ह्यधश्च प्रकर्षितः आत्मनो वैसमवीमायातनवो
हृपतिसर्वं स्वकर्मकृतसंबंधो जंतुर्जन्म प्रपद्यते सुकृतात् दुर्लभो भोगी भाग्यवान् सकुलो भवेत् ॥३२

सो है पांच वस्तु गर्भ में पावै है प्राणीकूं २९ कर्म करिके जीव उपजे है कर्म सं मरे है सुख दुःख कर्म सुं लगे है ३० नीचे मुख ऊंचा
पाद कर्म में सुवाय खेंचे है परमेश्वर की माया को मोह उपजे है ३१ अपने कर्म के वस पड़े है जो सुकृति होय तो भाग्यवान कुल
में जन्म लेहै ॥३२॥

जो नीच कर्म करै तो नीचकुलमें जन्म पावे है दरिद्री होय रोगी होय मूर्ख होय है और बहुप्राणी दुःख बहुत पावत है ३ हे गरुड तुमसु
नो जीव को उपजनो कह्यो अब फेर तुम कहो सो प्रसंग कहूं ३४ इति श्री गरुड पुराणे प्रेत कल्पे जंतोत्पत्तिलक्षणं नाम विंशोऽ
गरुडजी पूछत हैं अहो महाराज यमलोक को प्रमाण कह्यो १ कौनसे पापसूं कौनसे बुरे कर्मसूं मनुष्य यमलोक में जाय है

यथा यथा दुष्कृतस्य कुलहीनो प्रजायते दरिद्र व्याधितो मूर्खः पापकृत दुःखभोजनं ३३ उत्पत्तिमरणं जंतोः कथितं नव पुत्रकः अतः परं किमन्यं ते कथयामि खगोत्तम ३४ इति श्री गरुड पुराणे प्रेत कल्पे जंतोत्पत्तिलक्षणं नाम विंशोऽध्यायः २० तार्क्ष्य उवाच यमलोके कियन्मात्रं त्रैलोक्ये सचराचरे विस्तार तस्य किं देव मध्ये किं जनार्दनः १ कश्चि पापे कृतै देव केन वा शुभकर्मणा गच्छंति मानवास्तत्र कृपया ब्रूहि मे हरे २ श्री भगवानुवाच षडशीति सहस्राणि योजनानां प्रमाणतः यमलोकस्य चाध्वानं मंतरं मनुषस्य च ३ धातुताम्र सहात प्रैज्वलदुर्गं महा यथा तत्र गच्छंति पापिष्ठा मानवा मूढचेतसा ॥४॥

सो कृपा करिकें कहो २ श्री भगवान कहे हैं हे गरुड तुम सुनि छ्यासी हजार ८६००० योजन यमलोक के मार्ग को प्रमाण है ३ धाततामतातौ है प्रज्वलत है अग्नि समान मार्ग है तामार्ग में पापी मनुष्य हैं ते जाय हैं ॥ ४ ॥

काटे तो गंब महा भयानक है मार्ग विषे अग्नि समान [illegible] है ५ हे [illegible] छाया नाहीं [illegible] विश्राम करे परा छाया नहीं का
स्की पानी में [illegible] बांधे हैं [illegible] कर्म भोगे है [illegible] मार्ग विषे अन्न जल नहीं [illegible] सो पैसो नहीं ७ [illegible] मार्ग विषे
[illegible] जाने जैसो पाप [illegible] देत है जिन नो दान दीनो नहीं सो तो दुःख पावत है निश्चे कु

[illegible]

नानि पापनिष्ठं विचायत: ॥१२॥

[illegible] जीने अपने दान कीयो
सो सुख सूं जात है [illegible] सो रहत है ॥ १२ ॥

ग.पु.
टी
१०४

पापी हैं जिन कूं श्राद्ध अंजुलीन हूं दे सो लाभ नहीं वा पुरुष रूप होय के भ्रमे हैं पापके मतापमं महादुखी हैं १३ अैसो रौद्र कर्मक रैतो फेरय मलोक की जितनी स्थिति हैं सो कहुं १४ दक्षिण नैरूतु कोण विषें यमलोक है वर्षवज्रमय है देवता दानव मं जीत्यो जाय नहीं १५ चा रजाके खाई है चार दरवाजे हैं सात द्वारण पे तें तोरण शोभा देत हैं ताके भीतर यमराज दूतन सहित वसे है १६ हजार जोजन प्रमाण है

पापी नानो पतिष्ठंति दानश्राद्धजलांजली भ्रमते वायुरूपेण ये भ्रमा पाप कर्मणा १३ ईदृशा कर्म वै रौद्रं कथितं नवसुव्रत पुनश्च कथयिष्या मियमलोकस्य यास्थितः १४ याम्य नैरूत योर्मध्ये पुरं वैवस्वतस्य च सर्व वज्रमयं दिव्यं अभेद्यं तत्सुरैरपि १५ चतुरस्रं चतुर्द्वारं सप्तप्राकार तोरणं तस्य मध्ये यम तिष्ठेत स्वदूतैश्च समन्वितः १६॥ योजनानां सहस्रेण प्रमाणेन हितद्भवेत सर्व रत्नमयं दिव्यं विद्युज्ज्वालार्क वर्चसी १७ तद्गृहं धर्मराजस्य विस्ती र्णं कांचनप्रभं पंचाशच्च प्रमाणेन योजनानां समुस्थितं १८ न्यस्तं स्तंभसहस्रैस्तु वैडूर्य मणिमंडितं सुक्राज्वालग वाक्षं तु पानकाध्वज भूषितं १९ चित्र कर्म समाजुक्तं वस्त्रैश्च परिवारितां चामरैर्बहुभिश्चैव हेम दंडैश्च शोभितं २०

रत्नमय है दामनिसर्षी समान प्रकाश है कांति है १७ तहां धर्मराज को मंदिर है पचास योजन ऊंचो है सुवर्ण को है १८ हजार स्थंभ हैं वैडूर्य मणी स शोभित है तहां धर्मराज को मंदिर है ध्वजापताकान सों शोभायमान है १९ चित्रकारी अनेक प्रकार के चित्र शो भित हैं [illegible] शोभित है चमरण की डंडी सुवर्ण की शोभा देत हैं ॥२०

ग.पु.
टी
१०५

घंटा [illegible] प्रकार के बाजन हैं तोरण शोभायमान है सर्व सुखों भोगने की देर त्न मणि का शोभित है २१ तहां बैठो शोभित है धर्मराज को सिंहासन दश योजन प्रमाण [illegible] सिंहासन के ऊपर धर्मराज बैठे हैं मनुष्य के सह का सिंहासन प्रकाश है २२ धर्मी कूं जाने है भलो शीलवं ते है पापिन कूं भयानक है धर्मात्मा कूं सुख को दाता है २३ पुरके मध्य में चित्रगुप्त कायस्थ को घर है पचीस योजन को विस्तार है ताको

घंटाशत निनादाढ्यैस्तोरणं च सतैर्बृतं सदैव हेमजा भूमि रत्न माणिक्य मंडितं २१ तत्रास्ते भगवान् धर्मस्त्वासने परमे शुभे दशयोजन विस्तीर्णे नील जीमूत सन्निभं २२ धर्मज्ञो धर्मशीलश्च धर्मयुक्तो हितोत्तमः भयदः पापयुक्तानां धर्मात्मा च सुखप्रदः २३ पुरस्य मध्यतश्चित्र गुप्तस्य तद् गृहं पंच पंचाशसंख्यानं वै नीलानां सुविस्तरं २४ शोभनं तद् गृहं दिव्यं लोभप्रकारं वेष्टितं स्वैर्लोहैस्तथस्य संचारं पताका शत शोभितं २५ दीपकाधानसंशोभितं गीतध्वनी समाकुलं विचि त्रचित्र कलशादिभिश्च मेन वासितं २६ कीडनानां समृद्धिश्चैवा [illegible] विचित्राचित्र गुप्तामात्तु व्यानां यथाविधि २७ वसुतानि [illegible] कीर्ति समुद्भवैरुपैः रविपर्यंतः [illegible] जितं पद्य धर्मो वा धर्म मेव च २८

२४ शोभायमान है [illegible] अनेक हरवाज तोरण सों शोभायमान है २५ अनेक दीपक हैं भली भांत ध्वनि होती है विचित्र भांति के कलश शोभित हैं चित्रगुप्त कायस्थ के २६ कायस्थ के [illegible] आवादो होत है आकाश ऊपर बैठो है मनुष्यन को पाप पुण्य विचा रत है २७ पाप धर्म मनुष्यनके कहां सो जाने जैसो जामें होय तैसे कहत है ॥२८॥

एकादशेकी क्रियाकरिके फेरस्नान करैब्राह्मणकुं शय्यादान करै पदनसहितसोशेत १०६ कीमोक्षकीदाता है ८ कोई गोत्रीन
होयतौ औरपै भुविधि करावैं स्त्री होयत था पुरुष होय विचारकें क्रियाकरनी योग्य है ९६ प्रथम दिनजो कोई पिंड भरै सो पूर्व
विधिकही जैसें अन्नसु आदिलेकैं सर्वश्राद्ध सो ल्है करै भली विधिसंकरिकें १० दश दिनताईं मन्त्र विनागोत्रउच्चारविनाकछपिंड

कृत्वाचैकादशाहं तु पुनस्नात्वा सुभं भवेत् द्विजाय चददेत्सय्यां यथोक्तं येन मोक्षदम् ८ नभवेत्सयदा गोत्रीपरोपि
विधिमाचरेत् स्त्रीवापिपुरुषश्चित्तविमृश्यकुरुते क्रियां ९ प्रथमेहनियात्पिंडो दीयते विधिपूर्वकम् अन्नाद्यैनैव
तेनैव सर्वश्राद्धानिकारयेत् १० अमंत्रकारयेश्राद्धं दशाह नामगोत्रजं श्राद्धं कृतं युवैर्वस्त्रं नानित्यक्त्वा देहवशात् ११
असगोत्रस्यगोत्रो वा नरो नार्यथवापि वा प्रथमेहनियः कुर्यात्तेनतान् सर्वान् समापयेत् १२ चतुर्नामापि वर्णानामेकमे
वविधिस्मृतः यत्र त्रिरात्रिमाशौचनावदेवाशुचिर्भवेत् १३ चतुरस्राद्वितीयेन्हि तृतीयेचतथैवच पृथक्पिंडप्रदात
व्यंपयवान्नक्षीरसंपुतं १४ एकोद्दिष्टं तवे श्राद्धं चतुर्थेहनिकारयेत् प्रथमेहनियः पिंडे तेनमूर्द्ध चजायते १५

भरैजिनकपरानसंपहरकेंश्राद्धकियोहोयसोकापडासर्वउतारकें घरमेंजावे ११ गोत्री होयतथा औरहोयस्त्रीतथा पिताकुसपिंड
भरैसो दोषनहीं पिंडसोई भरै औरदूसरो भरै नहीं १२ चारोंवर्णकी एसी विधिहै तीनरात्रिताईं सबसुचिहै पीछें शुचिहोतहै चारोंवर्ण १३॥

नेत्रकर्णनासिकाकोसो पिंड संउपजेहैं अन्नको शुक्रयोनावतीय पिंडसंउपजे है १६ हृदयकुक्षि उदरचतुर्थ पिंड संउपजे है कटि
पृष्ठ गुदा पंचमेंपिंड संउपजेहै जंघाक्रमसे पष्ठम पिंड संउपजे है सातवें पिंडसुंगुल्फनाभि गिरया उपजेहै १८ एकादशपिंड संभरेवे
रकेमंनसंपरे नवम पिंडसंपादउपजेहै दशम पिंडसंक्षुधालगेहै १९ ब्राह्मणके चरणधोदे दीपधूप करै घरके द्वारतथा नदी के तट

चक्षुश्रोत्रं चनाशाश्च द्वितीयेहनिजायते गंडोंचकतथाग्रीवा तृतीयेन हृदेवहि १६ हृदयं कुक्षिउदरं चतुर्थेहनिजा
यते कटिपृष्ठगुदंचैव पंचमेंहनिजायते १७ षष्ठे च ऊरु विज्ञेयो सप्तमे गुल्फसंभव १८ अष्टमे दिवसे चापि जंघे चनवम
वं निर्दिष्टे पादौ चनवमे ज्ञेयौ दशमे च भवेत्क्षुधा १९ एकादशे तु दिनसे दशपिंड समंचकं सिद्धान्नं नस्यदातव्यं सर्वं
त पुष्पगंधितं २० ब्रह्मात्स्य स्याद् द्विजचरणं कुर्याद्दीपंच धूपकं गृहद्वारसमीपे तु नदी गोमुखमाश्रिते २१ द्वादशं
जातिमाषानि श्राद्धान्येकादशानि च एकं कुर्याद्दि चयाथैव विरक्तोसमि मोक्षदा २२ मासश्चानि यदानष्टं यस्मिन्नुप
हन्निजायते मासोसे प्रथमे स्तेपा लिपिगका दर्शनिश्चयात् ॥२३॥

अथवा गोत्रअन्नाणें पिंडभरै २१ द्वादश मासनें जिनकोपदादश श्राद्धभावनेंकुशविरक्तहोयतौ षोडशवालिदेवै २२ वालि
श्राद्धकरैजामासमेंजीवसोपहदोषासजानिये तिथि एकादशीजानिये प्रथममास ॥२३॥ २२॥ २३॥ २०॥ २२॥ २३॥

ग॰पु॰ टी॰ १९४

जाठौर क्रिया करै ताठौर ब्राह्मण जिमावै सो मध्यम श्राद्ध जानियें एकादशौ जानियें नहिं अथवा एकादशौ जानियें नहिं अथवा एकादशो कहियें नहीं प्रथम श्राद्ध कहियें २४ जादिन प्राण छूटें ताई दिन मासिक करै एकादशा तेले कें एक घट कों नित्य दीजै और अन्नमास कों मास दीजै प्राणी के निमित २५ नित्य कों नित्य ब्राह्मण कों दान दीजै सर्व दान मनुष्य के शरीर के फल चुनि कें संचय करै ॥२६

सवस्थानानि चोर्द्धायस्त्वस्थाने भोजने द्विजः तदेव प्रथमं श्राद्धं न सा चैकादशे हनि २४ सानिध्य मासके श्राद्धं मृतो यस्मिन् दिने नरः एकादशाहादारभ्य घटान्नं जलसंश्रयं २५ दिने दिने च दातव्यं श्रद्धया मासि द्विजोत्तमे मनुष्यस्य शरीरस्यास्थीनां चैव संचयं २६ यस्मिन् दिने मृतो वापि श्मशाने विषमे पदा तदा भवेन्नाधस्तकं मृतपूर्वकं २७ तिलपात्रं तथा नाग गंध धूपादिकं तथा एकादशाहे दातव्यं तस्मिन् शुद्धिः प्रजायते २८ एकादशाहात् प्रभृति प्रेतशान्ति वत्सरं याउन्नणा सर्व छायं नेरविरास्मि भिजानतथा २९ एवं तु कृते स्वर्गं प्रेतो वै भवति कश्चित् ॥३०॥

मृतक शरीर में तीन प्रकार के हाड हैं सो जल के घडे में पोषियत हैं जादिन वन में तथा विषम ठौर में नो किजादिन दाह होत दिन सूतक लगै है २७ एकादशा पाछैं तिल अर्घ अन्न गंध धूप मालि शुभ वस्तु दीजै जीव के निमित २८ और एकादशाह सूं लेकें वरष दिन तांई सर्व क्रिया करै जैसे नक्षत्र सूर्य संदकत है तैसें होतां क्रिया सूं प्रेत पण छूटत है निश्रै करिकें ॥३०॥

टी॰ १९५

...सो नाहीं सदद्रव्य वर्तमान है हे गरुड संसार में जीवनो अनित्य है याते सय्या को दान निश्चय दीजै फिर पीछें कौन देवेगो याते वनि आवै तो पहिलेही दीजे ३२ बांधव माता पिता सर्व जीवै तितने ही हैं मृत्यु भये पाछैं अंतर जान करें देह मिले है ३३ अपुन आत्मा को आपही बांधव है ऐसे ही जीव जानें और या को कोई नहीं है अपनो आपही है ३३ मृत्यु भये पाछैं पुत्र सय्यादान कों देता कारण आपने ही आप करै

सय्यादानं प्रसंसंति सर्वे देवा द्विजोत्तमं अनित्यं जीवितं यस्मात् तस्मात् कोपि महास्यति ३२ नावहं धु पिता माता जीवत्स्वपि निसं चिन्त्यं मार्ग धर्ममनुव्रजेत् ३३ आत्मानां च स्वनो यत्सुदयास्य आसत् लिका एवं जानातिदं सर्वं स्वदस्ले नैव दापयेत् ३४ कस्मात् सय्या च दारुदा दंतपुत्र विरमा हेम पादौ रत्नं कनं ३५ हंसतूलिमति कल्लं शुभ श्रीपौप धाम की चक्रदप दिव्यकां च गंध धूपादियासितं ३६ तस्यां सय्याप्य हेमं च हरिल क्ष्मीसमन्विता धृतपूर्णेन कलशं तेनैव परिकल्पयेत् ३७ विजेयो गरुड प्रोक्तो साउधान सयावुधः तांबूलाकुंकुमा मोदक कर्पूरागरु चंदनं

तो भलें होया जीव कों ३८ मा कवर एक सेयादान करै लैकाट की दंत कोया कमल सोनां ध धूप करै सुगंध महत ३६ तासे पाकु पर पतिमा अंगने की वनां वेल लक्ष्मी नारायण कों घृत का कलश तांबौर भं २७ हे गरुड प्रभु कें प्रसन्न कें वास्ते मैं या देम साव धान होय कें देय कलश नां बूल कुंकुम गंधक पूर चंदन सब करें नहीं ॥३८॥

१९५

ग॰पु॰ टी॰ १२२

जितने ताईं इकठोरो करे है श्राद्धसंवत्सरीको एक करै या प्रकार ऋषीश्वर कहत हैं २ अवही पुत्र न्यारे २ होंय तौ पाछें श्राद्ध न्यारे करै ३ यह सोलहै श्राद्ध नहीं होंय तौ वहताइ तनाईं प्रेत रहत है सो श्राद्ध और करै तौ या प्रकार होता है तो जासों पुत्र ही करे श्राद्ध पिताको ४ हे गरुड और पुत्रहीन होय तौ भाई तथा भतीजा अथवा शिष्य करै सपिंडी ५ जाके नहीं होय तौ ईस्त्री करै ऋत्वजं तथा

एकैनैकं तु कार्याणि संविभक्तधनेष्वपि । श्राद्धं कुर्वन्ति वत्स त्वां षतां समुदाहृतः २ विभक्तैश्च पृथक्कुर्यात्क्रिया संवत्सरादिषु एकेनैव च कर्तव्या पुत्रेणापि स्वयं स्वयं ३ यस्यैतानि न दत्तानि प्रेतश्राद्धानि षोडश ॥ पिशाचत्वं दिनात्तस्य कृतैः श्राद्धशतैरपि ४ भ्राता वा भ्रातृपुत्रो वा शिष्यो वा समुदाहृतः सपिंडीकरणं कुर्यात्पुत्रहीनः खगेश्वरः ५ सर्वेषां पुत्रहीनानां पत्नी कुर्यात्सपिंडनं ऋत्विक्कारयेद्वापि पुरोहितमथापि वा ६ मृतं तु चाष्टमध्ये तु न परागो यदा भवेत् पार्वणेन न सैकार्यं श्राद्धं नांदीमुखं वच ७ तीर्थश्राद्धं गया श्राद्धं श्राद्धमन्यच्च पैतृकं अष्टमध्येन कुर्वीत महागुरुनिपत्य वु ८ पद्मके तु गजच्छाया मयनादि युगादिषु ॥

गुरु करे ६ मृत्यु भये पाछें वरषदिन सुं आगे कोई अपर करे तौ पार्वण श्राद्ध करै नांदीमुख करै नहीं ७ तीर्थश्राद्ध गयाश्राद्ध पितरश्राद्ध वर्ष सुं पहिले कोई वडी विपता आवे तौ पण श्राद्ध न करे ८ पद्मके न योग होय गजछाया होय दक्षिणायन होय युगादि तिथि होय तो पण सपिंडी विना करे पिताको

१२४

124

ग॰पु॰ टी॰ १२३

श्राद्ध न करै ९ यत्न पुरुषको नाम लेके देयं वर्तमान को नाम लेके देय पुरोहित तथा [illegible] देवा [illegible] कहि के देय पिंड १० [illegible] पिताको जायतें ११ पितृदेव मनुष्य [illegible] अधिक यत्न [illegible] उपजे है १२ पिता मृत भये पाछें [illegible] पुत्र श्राद्ध करे तो [illegible] जिनकू पिंड [illegible] नहीं होय तो पितर [illegible] कार्य नहीं [illegible] २१ माता मरगई होय तौ पिता जीवतो होय तो मा

125

पितृपिंड न दातव्यं सपिंडीकरणं विना देयं तु पुरुषस्य पदं तदेवानां [illegible] दृष्टमध्ये च पितृभ्य [illegible] देवता १० देवानां पितरो देवाः पितॄणां [illegible] पितरो देवाः पितामह [illegible] ११ पितृदेवमनुष्याणां [illegible] विनिर्दिष्टं नयज्ञानाम् [illegible] सर्वदेहिनां १२ [illegible] पितृयम ध्येयः श्राद्धं च कारयेत्सुतः [illegible] नायः १३ [illegible] सपिंडोदक क्रियाः [illegible] १४ [illegible] माता पिता [illegible] जीवने तु [illegible] सपिंडनं न दातुं [illegible] पिता [illegible] १५ [illegible] सपिंडमेलनं [illegible] पुत्र [illegible] १७ गरुड उवाच [illegible] पुनः

ताका पिंड परदादा सें मेले पिता मृत्यु होय तौ पिता सुं मेले पिंड [illegible] मेलने कं पीछे परदादा सें [illegible] जीवते पिंड

गरुडकहतहैहेमहाराजदादीजीवेपितामरगयोहोयतौपिंडकौनसंमेलेसोकहो २९ हेमहाराजऐसोमसंदेहहै सोमेरोतुमसर्वंदु
खदूरकरोनिश्चैकरिके २० श्रीकृष्णकहेहैंहेगरुडतुमसुनोपिंडमेलनकीविधितुमसोंकहतहोंसोतुमसुनोमाताकोपिंडदादी
जीवतिहोयतौमहालक्ष्मीसंमेले २१ औरदादीजीवतिहोयतौपिताकोपिंडस्यजकजाजकसोमेलेतिनकुंभोगेहै २२ श्रीभगवा

पितामहीजीवतिचतथाचप्रपितामहीनहन्मातामहश्चैवकेनाशोमेस्यतेकथे १९ एतस्केशांहुषीकेशःयथा
वत्तकथयस्वप्रभो २० श्रीभगवानुवाच श्रृणुतार्क्ष्यमहाबाहोसपिंडीकरणंतथामसंलक्ष्मीसेव्यांस्त्रेलितेछवं
त्रयपिंडभुजोज्ञेयोस्त्याजकाश्चत्रयस्मृतात्रयपिंडातुल्येपाश्चदशमापिंडसन्निभौ २२ इत्येतेपुरुषाख्यातापि
त्रमात्रकुलेषुचतास्जेस्वजमानस्तुदशापूर्वान्दशापरान् २३ सपिंडनंभवेदादोसपिंडीकरणंकृतंततस्तु
विजयोत्रेयोवृहस्तुप्रपितामह २४ पिंडभोक्तादक्षुस्त्रीश्वापिंडस्यक्तात्रयोमतात्रयपिंडातुलेपाश्चदशामे
पिंडसन्निभः २५ यमसानोभवेदेकोदशपूर्वेदशापरे इत्येतपितरोज्ञेयाए विंशतिसास्त्रता ॥ २६॥

नकहतहैंऐसीविधिकहीजैसेंमाताकोपक्षकरैतोदशवंशपहिलेतारेहै २३ पिंडमेलेपाछेंविंजकजाणियेवृद्धपरदादेकूं २४
प्रत्यंतव्यंजनकलेयकेप्रथमकीदूसरीपंक्तिसत्यवाहहेपिंडनकोअथवातिसरीकोविपहिमतहे २५ एकयजमानहोतहै
ऐसेपित्रणकविंशहैंसोऐसेहीजानियेंसवनकूंदशआगेदशपीछेके ॥

विधिसंकरिकेंसंसारमेंश्राद्धकरैताकोफलकहुंसोसुनोहेगरुडजातेसंदेहदूरहोनहैं २७ पितापुत्रणकूंदेखदादेगोधनकूंदेय
सोसोवर्णकोदाताहोयपरदादेकोश्राद्धवाहीतेअधिकहोतहे २८ भलोअन्नदेयपितृणकेश्राद्धतर्पणमेंइतनेगुणहैं नरकतें
उद्धारकरतहैं २९ भोजकात्यागकालेपकापंक्तिसन्निभाएतेकुलमैंएकविंशतिपितरहेसोजाणिये ३० जामनुष्यकीसंतान

विधिनाकुरुतेयस्तुसंसारेश्राद्धमुत्तमम्मुजायतेनाचसंदेहोश्रृणुतस्मात्प्रियस्फलम् २७ पितादद्याति
पुत्रान्वैपितामहाश्चगोधनम्हेमदाताभवेत्सोपियमस्यप्रपितामह २८ दद्यात्विपुलमन्नंयंहृद्
स्तुमपितामहकृतेयश्चगुणाहोतेपितृणांतर्पणेस्मृता २९ भोजकात्याजिकाचैवलेपकापंक्तिसंन्निभो
एतावतकुलेज्ञेयापितरोदेकविंशति ३० यस्यपुत्रास्तुमर्त्येयेछिन्नाचनसंततिरवगाःस्वचज्ञेनरकेनि
संपंकेमग्नःकरीयथा ३१ योन्यंतरेषुयोयच्चहंसपक्षीसरीसृपाःनसंततिविनाशोतस्मुच्यतेनरकेध्रुवम् ३२

कौनामहोयसोमनुष्यनरकमेंडूवतहैजैसेंहाथीकीचमेंडूवतहैताकीनेरे ३१ वहुतयोनिविषेंजीवभ्रमतहैंहंसहोयअथ
वापक्षीहोयसर्पहोयजिनकेसंतानसहींहुईहोयसोभ्रमेहैजाकेसंताननाहोयसोनरकमेंडूवतहै ॥३२॥

मु॰
टी॰
१२६

गुरुनयाशिष्यगोत्रीपरगोत्रीजो कोईनारायणवलीकरैतोनरकतेछुटेहै ३३ नारायणिवलिकेमतापसुं सर्वपापसुं छूटैहैनरकसुंनिरेनासउ
हारेस्वर्गलोकमेंवसेहैयावातमेंसंदेहनहीं ३४ धनिष्ठासंआदिलेकेरेवतीताईपांचनक्षत्रपंचककहियेसोअशुभहै ३५ इनपंचकनदा

भावार्थः नस्याशिष्योवायोधरेपिहिगोत्रजनारायणवलिंकुर्यात्तस्योध रणाहेतवे ३३ विमुक्तःसर्वपा
पेभ्योमुच्यतेनरकाअवंस्वर्गेसवसंदिग्धोनात्रकार्य्यंविचारणात् ३४ आदौकृत्वाधनिष्ठाचएतन
क्षत्रपंचकंरेवत्यांचनदाज्ञेयाअशुभंसर्वदाभवेत् ३५ दाहस्तत्रनकर्तव्यंअशुभार्थंसर्वजातिषु दी
यतेचजलंतत्रनअशुभंजायतेनृणां ३६ लोकयात्रानकर्तव्यंदुःखान्तस्वजनोयदिपंचकानंतरयस्य
कर्तव्यंसर्वमन्यथा ३७ पुत्राणांगोत्रिणांतेषांसंस्कारादिअशुभंभवेत् गृहेहानिभवेत्सत्यंपंचकेयो

मृतकीजेनहींअशुभकेवास्तेअंजलीदीजेनहींइनमेंअशुभउपजेहै ३६ लोकाचारणकोदुखीहोयतौपणपंचकनपाछेंसर्वकरै ३७॥
पुत्रपौत्रीनकोसंस्कारनकीजेहानिउपजेघरविषेंपंचकनविषेंमरेमनुष्यनकीनकरें॥

१२६

मु॰
टी॰
१२७

तथानक्षत्रनमेंपंचकनमेंदाहकरैतोविधिसंकरैआदआहुतिकोरीकंशहदेय ३९ आदौदाहब्राह्मणकेमंत्रनसंकरै ४० मृतककेपाछेंसंग
चारपूतलादाभकेवनावैब्राह्मणकेमंत्रसं ४१ हे मृतकसूतकउतरेपाछेंविधिकोनासंगतिपावेपाछेंसांतिकरै ४२ पंचकनमेंमरेताकीगतिना
होयताकीभांतिकेवास्तेदानकरैसोनोघृततिलनामलेकेंदानदेय ४३ ब्राह्मणकूदानदेयतांसूंउपद्रवमिटैतापाछेंसूतकउतरेपाछै

अथवाऽऽस्यमध्येतुदाहश्चविधिपूर्वकंकियतेआनुष्ठानंतुमध्यआहुतीकारणात् ३९ आद्याहुतीकरंप्रणंतदग्धेदाध
मृतकंविप्रेनियत्रतकार्योमेवैतुविधिपूर्वकं ४० सर्वस्वचतनीषेतुक्षिप्यंतेपुत्तलानतः दर्भमय्याश्चचत्वारविप्रमंत्रा
सुमंत्रिता ४१ ततोदाहपकर्तव्यंतेश्चपुत्तलकैसहसूतकांतेतदापुत्रकुर्याच्छांतिकमुत्तमं ४२ पंचकंवैमृतोयस्मैनगच्छति
लभतेनरःतिलागोचाहिरण्यंचतस्मोतस्यघृतंददेत् ४३ विप्रायणदियतेदानंसर्वोपद्रवनाशनंसूतकांतेविधिकुर्यात
चेतोवैत तिगतिं ४४ भाजनोपानहोछत्रंहेमसुद्राचवासांसिदक्षिणादीयतेविप्रेनसर्वपातकमोचनं ४५ वालवृद्ध
अथपूतनश्चपंचकस्यमृतस्यहिविधानंयोनकुर्वीतविघ्नंतस्यप्रजायते ४६ सप्तादशनवस्त्रनिषेतश्चाईविवर्जयेत्वाल
कोद्विगुणादभाषितसाहूहननोच्यते॥४७॥

विधिकौनासुंगतिपावै ४४ वासनजोडीछत्रसुवर्णकीमूं
दरीवस्त्रदक्षिणासहितब्राह्मणकूंदेयपापउतारणेकेवास्ते ४५ वालकवृद्धयुवानुपंचकनमेंमृत्युहोयतौताकीविधिनकरैतौ
विघ्नउपजेसत्यहैमिथ्यानहिं ४६ सतरेसोदससेठारेवरसलोंकेवालककूंद्विगुणाकुशलावैसैसीवानकहै॥४७॥

१२७

128

129

अग्निमें होम करै नहीं बलि वैश्वदेव कर्म श्राद्ध पूजन न करै विकिर पिंड न देय न्यारे पितर को नाम लेय ४९ रुदन करै तौ आवाहन करै तौ अरु प्रदक्षि
णा करै तौ गति नहिं होय तिलन को होम करै पूर्णाश्राद्ध नौ देय दशा दिन ताईं तौ नर्क में न परै एकादशे के दिन श्राद्ध वृषोत्सर्ग को न करै तौ
नरक में पहुंचत नहैं ५० सोल्हे श्राद्ध मलीन हैं जिनके नाम को एक पिंड करै मृतक कूं देय दूसो स्वर्ग विसराम है तीसरो मसान को एक मुंड देकें

अन्यसदनेन कुर्वीत न वाहनमथोल्मकं आशीर्वादं न कुर्वीत न कुर्वीत प्रदक्षिणां ४९ न कुर्यात्तिलहोमं च द्विज
पूर्णाहुतिं तथा न कुर्य्याद्वैश्वदेवान्ने कर्ता गच्छेदधोगतिं ५० मलिनश्राद्धसंज्ञानि पूर्वं षोडश कानि च पञ्चस्थाने
चार्द्धपथे तिचितायां सिंहस्थके ५१ सस्थाने सर्वभूतेभ्यः पंचसंप्रति वेश्मकं पट्ए संचयेमोक्तं दशपिंडानुदशाह्निकं
श्राद्धं षोडशकं चैव प्रथमं च प्रकीर्तितं अन्ये षोडश मध्ये तु द्वितीयं तार्क्ष्य मे शृणु ५२ कर्तव्यानिह विधिना श्राद्धान्ये
कादशे त्वथ ब्रह्मा विष्णु शिवाद्यं च तथानयाह्पंचकं ५४ एवं षोडशकं त्वाहुः पुरातन विदो जनाः द्वादश प्रतिमास्या
न्यश्राद्धान्येकादशं तथा ५५ त्रिपक्षं संभवं चैव हे स्कं स्वग षोडश ः आद्यंतु सर्वसुधार्थं कृत्वा तु पितृ षोडशं ॥५६॥

हाथ देह एक पाय धरे सो आयके देय एकतै एकयह दशा दिन के पिंड दश ऐसे मलीन श्राद्ध है ५२ अैसे सोल्हे मलीन श्राद्ध कहियें दूसरे
और सोले सुनाऊं सो हे गरुड तुम सुनो ५३ या भांति एकादशा पिंड एग्यारह दिन भर कोन से ब्रह्मा विष्णु शिव ऐसे पांच और हैं ५४ ऐ सोल्हे श्राद्ध
और उत्तम सुनि बारह महीना के जिनमें ११ मास कहे सो ५५ एक त्रिपक्षी उनके छमासी उनवासीक एक श्री संवत्सरी एक वार्षी पूरी ऐसे सोल्हे श्रा

इतने श्राद्धन सौं पितरन को भलो होत है ५० श्राद्ध हैं ५७ अथ सर्व की विधिः मृतक को अकेलो न छोडिये नीच छुवै तौ बुरी गति पावै मृतक के आ
गे मदिरा न करै मृतक के आगे रागन करै ५८ वाकी निंदा न करै इतनी बातन सब करै तौ नगर में भय उपजावै ५९ ग्राम में सुदौं पड्यो होय तौ और
अन्न खावै तौ मांस समान है और जल पीवै तौ रुधिर समान है ६० इति श्री टीकायां ५५ ग्राम नगर मुदों पड्यो होय तौ जितने ताईं ता कूं लन
न ताईं श्राद्ध हीने च भेलनं पंक्तिभाक् न हि चत्वारीशानं थे वाणः श्राद्धो येनैं त्वशोधनं ५७ सर्वशून्यं न मुच्येन दृष्टो
दुर्गतिं भवेत् सवाग्रे सयनं विद्वान् न कुर्वीत कदाचन ५८ रागस्तत्र न कर्तव्यो मत्र निंदा कदाचन ः संजायते द्विज
न्यां सर्वे निर्गमनोचरा ५९ ग्राममध्ये स्थिते प्रेत मृते शुक्के बद्धश्च या नदन्यं मास वन्नमेयं ततोयं रुधिरायमं ६० इति
श्रीगरुड॰ पंचकदोष मृतकवार्ता वर्णनो नाम ३५ श्री भगवानुवाच तांबूलदंत काष्ठं च भोजनं कृतसेवनं आम म
ध्ये स्थिते प्रेते वर्जयी यात्पिंड पालनं १ स्नानं दानं जपं होमं तर्पणं सुरपूजनं ग्राममध्ये स्थिते प्रेते ग्रह पार्श्वे न चैवचरस्थाव निरूसा
सिंनं नौ चनावर्तनं पूज्यते २ गरुड उवाच कस्माद्दानं सनां तो कं ब्रह्मयंगाति वायकं त्वयर्दं तु पारम्पर्यानीथै वैसूयने हिय ५

वेदांन न करै भोजन न करै कनुन करै सेवन करै इतने कार्य न करै तथा पिंड न करै १ स्नान दान जप होम देव पूजन इत्यादि न करै और
घर पास होय तौ न स्का में परै करनवरो १ जितने ताईं मुर्दे को निकारै नहीं जितने ताईं कछु न करै ३ अव गरुड बूझत है हे महाराज अन्न
पान मताप न कैसी गति पावै है अपने मृतक कूं नगर के नीचे विषे मरे सो कैसी गति पावत है ॥४॥

तीर्थको मनोर्थ करे और घर मरजाय तो कैसी गति पावे तीर्थ विषें कुटी बर होय के मरे तो कैसी गति होय ५ सन्यासी होय के तीर्थ विषें न- या घर विषें जो मृत्यु होय नहीं अथवा होय तो कैसी गति पावे ६ श्री भगवान कहत हैं हे गरुड तुम सुनो जो मैं कहूं अन्न सनले के प्राण छोडे सो मेरी तुल्य विराजे ७ जितने दिन अन्न छोडे जिन में इ दिन वाको सुख देवे तो एक यज्ञ करे जितनो फल होय ८ तीर्थ में जाय क सन्यास लै के

अप्राप्य तीर्थं म्रियते गृहे मृत्युवसं गतः भूत्वा कुटिचरो यस्तु सकाग्निमवाप्नुयात् ५ सन्यासं कुरुते यस्तु तीर्थे वापि गृहेपि वा कथं तस्य प्रकर्तव्यं प्राप्यं निधनोपि वा ६ श्री भगवानुवाच कृत्वा निरसने यो वै मृत्युमाप्नोति चेद्यतिर्मानुषी तनुं मुत्सृज्य मम तुल्यो विराजते ७ यावंति दिनानि लीयंते वै कोनिरसने कृते क्रतुभिस्तानि तुल्यानि समास वर दक्षिणैः ८ तीर्थे मृत्वा तु सन्यासं नीत्वा चेन्म्रियते नरः प्रत्यहं लभते सोपि पृथ्वी क्रतुगुणं फलं ९ महारोगा गयं तीर्थं च गृहीतेन समे मृते पुनर्न जायते रोगी देववद्दिवि राजते ११ आतुरसन सन्यासं गृह्ल नित्य दिशानवे पुनर्न जान सन्यासो मुच्येद्रोगे अपान कै १२ अहव्य हन्य दानं च ब्राह्मणानां तु भोजनं तिलपात्रं यथा शाक्तादीप दानं सुरार्चने १३

प्राण छोडै जाको विवेक मुनि हैं गुणी पुण्य है १० मोटे रोग अहसि तो अनसन लेय तो फेर रोग न व्यापे देवता तुल्य सो मनुष्य स्वर्ग में विराज- त है ११ आतुर समें सन्यास धारे तो मनुष्य के फेर न जन्म धारे सो बडे रोग सं छूटै १२ नित्य को नित्य ब्राह्मण कुं तीन पात्र देय सपनी शाक्ति होय- जितनो देय दीप दान करे ॥ ३ ॥

132

[illegible] तीर्वे तो अपने उद्धार करै १५ अपने धाम वैकुंठ कि रती थके जाय और मार्ग में मर जाय तो अपवाचन सन तन में मो तो ऋषि लोक कूं जात हैं १६ अपनो कलत्याग के अकेलो वन में फिरे अन्न वस्त्र जल वरो छोड देय १७ एमें घर छोड देय सन्यासी होय तीर्थ करे तो कुं वन देवता गावे हैं

गतेन स्यदे हियं निसुवा चव चनानां हि मृत्यो मुक्तिमवाप्नोति यथा सर्वे सहर्षय १४ तस्मादन सनं नृ णां वैकुंठ पद दायकं तस्मात्त्वमस्थि प्रारिवाक तीर्थे मौसं स लक्षणं १५ यह तीर्थे सन्मुखे वैष्ट न अनशनें कृते मरणाच नराले पिकृ र्षाणां मंडले वर्तीत १६ सकलानि परित्यज्य एकाकी विचरेद्दिवि अन्नं वस्त्रं तथा तोयं परित्यज्य नरो यदा १७ आमान् परित्यज्य न केपुन नंजायते स्त्रिनो मन्या मिनां तीर्थं गतं रंगा निवन देवता १८ ममता रहिता श्चैव मरणा मृत कं नहि तीर्थं सेवी नरो यमु सर्व किल्बिविनाशनं १९ तत्र मृतेन दृष्ट्वा तमसी तीर्थ फलं भानवत सेविते पि सदा तीर्थे सो न्यत्र म्रियते यदि ॥ २० ॥

133

सो भी मरे फेर जन्म न आछो पावै १८ ममता रहित त्याग के मरे ताको सत्त कल्पे नहीं तीर्थ सेवन करे तो सर्व पापन सं छूटत हैं १९ ताठौर प्राण छूटै नहां राग न होय तो पर्या तीर्थं न को फल भोगे है सदां तो यस सेवन करे तो सर्व पापन सं छूटे सदां तीर्थ सेवन ने मृत्यु भलो न होय याने संत समें तीर्थ सेवन करे ॥ २० ॥

शुभदेशमेंभलेकुलमेंवेदकोवक्ताब्राह्मणकोजन्मपावैफेरहेगरुडःतुमसुनोःअन्नशनलेकेंफेरजीवे २१यातेंब्राह्मणकूंबोलकैंसर्वस्वदेयअ
ज्ञालेकेंचंद्रायणकरे २२झूंठबोलैनहींधर्ममेंसदारहैऔरतीर्थकोपुण्यलेकेफेरउलटोघरकूंआवे २३ब्राह्मणपैआज्ञालेकेंप्रायश्चित्तकरा
रकैंसोनोदानकरेगोअश्वदानकरेधरतीदानकरे २४मृत्युसमेंतीर्थपावैसोभाग्यवानकहियेप्राणत्यागनकूंघरछोडिकेंतीर्थजावे२५पदपद

शुभदेशेकुलेधीमान्स्वभवेद्देहविद्विजकस्त्वानिरसनंनाश्यपुनर्जीवतियःपुमान् २१ब्राह्मणश्च समाहूयसर्वस्वंतुप
रित्यजेत्चंद्रायणंचरेकृसंशनिज्ञानश्चनेद्विजे २२अनृतंनवदेत्तत्रसर्वतोधर्ममाचरेत्तीर्थंगत्वानुयकोपिपुन
रायातिवैगृहे २३अनुज्ञातःशुभेर्मंत्रेप्रायश्चित्तमथाददेदत्वास्वावर्णदानानिगोमहिवाजनानिच २४तीर्थंयदि
लभेयस्तुमृत्युकालेसभाग्यवान्गृहाञ्चलितंतीर्थंमरणंप्रमुपस्थिते २५पदेपदेचगोदानंहिसानैवचवर्ततेगृहे
तुयत्कृतंपापंतीर्थस्नानंविशुद्ध्यति २६तत्रदानानिदत्वातुअक्षयफलमश्नुतेकुरुतेतत्रपापंचवज्रलेपासमंभवेत्।
लिप्यतेनात्रसंदेहोयावच्चंद्रार्कतारकेअतुरेमनदानत्वानिधनैरपिसाधने॥२८॥

मेंगरुडकोपुण्यकरैघरविषेंपापकोनांतीर्थस्नानमूंपापउतरेहैं २६तीर्थमेंदानकरेसोअक्षयहोयतीर्थमेंपापकरेसोअक्षयहोयव
ज्रलेपहोयकबहूंछूटेनहीं २७बहुतकष्टपावैजीवतेनांदेनाचंद्रसूर्यतारागणरहेजोलोनरकमेंपड्योरहेसंदेहनहींयाकारणस्वस्था
[illegible]निर्धनहोयतौपणदानकोनिषेधकरिके॥२८॥

गायतिलसुवर्णसप्तधान्यऐसेदानकरैदानवंतमनुष्यकूंदेखकेंदेवताप्रसन्नहोतहैं २९धर्मराजऋषिश्वरनसहितावित्रगुप्तसर्वप्रसन्न
होतहैंताकारणआपनाकमायोद्रव्यपुण्यकरैनिश्चैकरिके ३० मृत्युभयेपाछेंकछुकामआवैनहींयाकारणपुत्रदानकरैतोपिताको
नामलेकेदानदेयब्राह्मणकूंपिताकेनिमित्त ३१पुत्रपितानिमित्तदानकरैतौसौगुनोपुण्यहोयऔरमाताकेनिमित्तकरैतौहजारगुणोहो

गावस्तिलाहिरण्यंचसप्तधान्यंविशेषतःदानवंतंनरंदृष्ट्वाहृष्टाःसर्वेदिवौकसः २९ऋषिभिःसहधर्मेणचित्रगुप्ते
नचैतःसाश्वात्मापन्नंधनंयावत्ताद्द्येसमर्पयेत् ३० पराधीनमृतेसर्वेकृपयापिददातिचेत्पित्रुद्देशनयैपुत्रैर्धनंवि
प्रकरार्पितं ३१पितुःसमगुणंपुण्यंसहस्रंमातुरुच्यते ३२यदिलोभान्नपश्यंतिकालेप्रतुरसंज्ञकेपापनस्तेमराज्ञेया
३४मृत्युशरीरंगोमांसंवसुरक्षंवसुंधरादुश्चारणीश्वसनिस्वपतिपुत्रवत्सलं ३५उदारोधार्मिकःसौम्यश्चाप्या
पिविपुलंधनंत्वाण्वात्मन्यनेनाशैआत्मनंचिंतयंपति ३६

एपहोय ३२पुत्रलोभकरिकेंआतुरसमेंदाननहिंदेयसोकपूतकहियेऔर
पापीहैयह ३३बहुतकष्टसंधनजोखोसोधनस्थिरनहींऐसोहीधनजानरहनदेजदवादानसंतयाभोजनहैअथवाक्षयहोयताका
ऐदानकीजैपुत्रवासकरिकेंपिताकेनिमित्त ३४ग्रहंकारीजीवकेऊपरकालहसेहैधनधरतीमेंराखैताकेऊपरधरतीहसेकेसेंयाकोहस्तां
तरैनहैजेसेंकोईमनुष्यवेश्याकूंअपनीकरिजानैताऊपरवेश्याहसेहै ३५हेगरुडउद्धारहोइद्रव्यकुत्वाणवनजानेहै ३६

इतिश्रीटीकायांसमाप्तं॥जिनकेउपद्रवहोयनहींमोहउपजैनहींमृत्युसमेयमकेदूतनकोभयउपजैनहीं३जोजलकोदानकरेसोसात०००व र्षस्वर्गमेंरहे औरसती२१००० हजारवर्षस्वर्गमेंरहेहैंतीर्थमेंजायकेमरेतो१६००० वर्षस्वर्गमेंरहेहै संग्राममेंक्षत्रीमरेतो१०००० वर्षस्वर्गमेंवा सकरेहै औरगौनकेपीछेमरेतौ८०००० हजारवर्षस्वर्गमेंरहेहै अन्नसनलेकेमरेतौअक्षयगतिपावै गरुडपूछतहैंअहोमहाराजघटदानकीम

इतिश्रीगरुडपुराणे॰पितरनिर्णयोनामषट्‌विंशोध्यायः२६ श्रीभगवानुवाच नचैवोपद्रवानस्यमोहजातंनचैव हि मृत्युकालेभयंयमदूतसमुद्भवं १समासहस्राणिचसप्त वैजलैदश्चौकमन्नेनतपनेनषोडशांप्रदाद्विपष्टिरम् तिगौश्च हैअनासनेभारतचाक्षयागतिः२ताक्ष्यउवाच उदकुंभप्रदानेनकथयस्वयथातथा विधिनाकेनदातव्या कुंभास्तेकतिसंख्यया ३किंरिक्ताकेनपूर्णावाः कस्मैदेवजनार्दनःकस्मिन्कालेप्रदातव्याःअन्नपानीयसंयुता विशेषेणजगन्नाथ प्रेतमुक्तिप्रदायकः ४द्वादशाहेनषडशासेत्रपक्षेवाथवत्सरेउदकुंभप्रदाव्या मार्गेनस्येसु

स्वायवे ६

हिमाकहोकैसीविधिसूंदेयकितनेदेसोकहो३कैसीविधिसूंदेयकोनकूंदेयहेजनार्दनकोनसमेमें अन्नपानीसंयुक्तकरिकेंदेयसोक हो४ गरुडपूछतहैहेमहाराजविशेषसुंकहोहेजगन्नाथमहाराजतुमप्रेतकीमुक्तिकेदाताहोसोकहिये५ श्रीभगवानकहेहैंहेगरु ड द्वादशाकेदिनदेयतथात्रिपक्षीकूंदेयतथाछैमासिकपैदेयजलकेघटयुक्तिसूंतौमार्गविषैसुखसूंजायहे॥६॥

वे५ द्वादशाकेदिनविशेषकरिकेजलकेघटदेयविधिसूंसंकल्पभलेद्वादशघटदेय६विस्नुभगवानकानामलेकेदेयशुभवासणकुं संकल्पकरिकेदेयएकएककुंभसुंधर्मराजसंतुष्टहोतहैमेरुअसछीगतिपावतहै१०एककुंभसुंचित्रगुप्तप्रसन्नहोतहै५सोतुंनरहे

अहन्यहनिदातव्याउदकुंभाश्चिलैर्युताःसलिलेभूमिभागेतुपक्वान्नजलपूरिता७ प्रेतस्यानस्यदातव्याभोजनंच प्रदाक्षयासुखेनाखेनदनेन प्रेतोयान्स्वैसगच्छति८ द्वादशाहेविशेषेणउदकुंभप्रदापयेत्‌विधिनानचसंकल्प घटान्द्वादशसंख्यया९विस्नुमुद्दिस्यदातव्यासंकल्प्यब्राह्मणेभुवेएकोवैधर्मराजायतेनतुष्टेतिसुक्रिभाक१० चित्रगुप्तायचैकंतुतेनसचसुखीभवेत्‌षोडशाद्याप्रदातव्याप्रास्यान्नतिलपूरिता११एकादशाहप्रभृति देयानित्यंघटादयःपक्वान्नजलसंपूर्णायावत्संवत्सरंदिन१२ जलपात्राणिहद्रानिदत्त्वानिघटकानिचएका वैवर्द्धीनत्रयंप्रापात्रोपरिस्थिता१३ यत्नेगच्छादितान्येवसंयुक्तानसुधासुविप्रासणेभ्योविशेषेणजलपू र्णानिदापयेत्‌१४॥

पतिलमेंमाधान्नतिलडालकेदेय११ एकादशसुंआदिलेकेंनित्यकेनित्यघटदेयपक्वान्नजलसंयु क्तदेयबरसदिनताईंनित्यदेय१२ अन्नपात्रपूर्णदानकौघटदानएककूंदेय१३तेरहघरशुभभलेप्रकारकेवस्त्रघटनकेऊपर आच्छादनकरिकेंब्राह्मणकुंविशेषकरिकेदेयजलसंपूर्णकरिके॥१४॥

136

137

नित्यकीनित्यहेगरुडसंकल्पसंदेयविधिपूर्वककरिकेंब्राह्मणश्रेष्ठकुलवंतवेदकेवक्ताकुंदेयदानघटनकों २५वेदवाणीमेंसमर्थहोय
नाकारणतरणकुंसमर्थहोयताकुंदेयमूर्खकुंनदेय २६गरुडपूछतहैमहाराजदानतीर्थकोपुण्यकहोस्वर्गकोफलकहोमोक्षकोनसेपु
ण्यसंपावेसोकहो २७फेरस्वर्गलोकतें मृत्युलोकआवेसोकहोमनुष्यदेहकेसेंपावेनरकमेंकेसेंपहुंचेसोसुनावो २८हेमहाराजएसो

अहन्यहन्यसंकल्पविधिपूर्वंखगेश्वरः ब्राह्मणायकुलीनायवेदव्रतपरायच २६दानतीर्थाश्रितंमोक्षंस्वर्गं
चवदमेप्रभोकेनमोक्षमवाप्नोतिकेनस्वालभतेफलं २७केनोसौच्यवतेजंतुस्वर्गलोकात्सुलोकतः मनुष्यं
केनलभतेनरकेसुविमज्जति २८ एवंतन्मेवदनिश्चित्यभक्तानांमोक्षदायका २९ श्रीभगवानुवाच मानुष्यं
भारतेवर्षेत्रयोदशसुजातिसुनघात्ययमृतेक्षेत्रेपुनर्जन्मनिविद्यते २० अयोध्यामथुरामायाकाशीकां
चीअवंतिकापुरीद्वारावतीज्ञेयासप्तैतामोक्षदायकः २१ सत्यंसत्यंपुनिब्रूयातप्राणेकंठगतेरपिमृते
विष्णुपुरीयांतिपुनर्नजायतेभुवि २२ सकृदुच्चरितंयेनहरिरित्यक्षरद्वयंबद्धपरिकरतेनमोक्षायगमनंप्रति २३

वतांतसुनावोतुमभक्तकीमोक्षकेदाताहो २९ श्रीभगवानकहेहैंहेगरुडमनुष्यदेहसर्वजीवनविषेंश्रेष्ठहैअच्छेक्षेत्रमेंमरेतोफेरजन्म
पावेनहीं २० अयोध्यामथुराकाशीगंगाजीअवंतिकाद्वारकाइनतीर्थनविषेंमरेतोप्राणीमोक्षपावे २१हेगरुडमेंसत्यकहतहूंवारंवार

कृष्णकृष्णऐसीवाणीनित्यमनमेंसुमरणकरेजैसेजलकेऊपरकमलतिरेहैऐसेहीकृष्णनामतेनरकमेंतेतिरेहै २४जहांसालिग्रामद्वा
रकाकीशिलादोनोंधोयकेंपीवेतोमुक्तिकोसंशयनहीं २५जिनकेसंतनमेंसालिग्रामकोजलनहीलगेनयादर्भविछावेतोमुक्तिकोसंदा
यनहींनिश्चेंकरिकेंमुक्तिकोप्राप्तहोय २६तुलसीकोपालनकरेध्यानस्पर्शकीर्तनकरेतोअनेकजन्मकेपापकटेंज्ञानरूपसरोवर

कृष्णकृष्णेतिकृष्णेतियोमांस्मरतिनित्यशःजलंभित्वायथापद्मंनरकादुद्धराम्यहं २४ सालिग्रामसिलायत्रतत्र
द्वारावतिसिलाउभयोसंगमोयत्रमुक्तियत्रनसंशयः २५ सालग्रामशिलायत्रदुर्भस्तंनरणदपितत्विदंसं
धानमरणात्तमुर्जेतोसुनिश्चितं २६रोपणात्पालनात्सेकाध्यानस्पर्शनकीर्तनात्तुलसीहरतेपापंनृणांजन्मा
र्जितंखगः २७ज्ञानिहृदेसत्यजलेरागद्वेषमलापहेयःस्नातोमानसेतीर्थेनाशान्तियातिपातकेः २८ नाकाष्ठेवि
द्यतेदेवोशिलायांकदाचनः भावेहिविद्यतेदेवोतस्माद्भावसमाश्रयेत २९ मोक्षेनपशुपस्यंतिनर्मदामत्स्य
वेधकाः ततेशिवपुरीयांतिचित्तहतिगरीयसी ॥३०॥

सत्यरूपनामेंजलरागद्वेषतामेंऐसेमलनकोधोवेंऔरमानसीतीर्थमेंस्नानकरेतौसर्वपापनसंछूटेपाषाणमेंदेहनहीं २८ काष्ठमेंदे
वतानहींसिलामेंदेवतानहींयातेंभावनाफलहैनाकारणभावनामनसेंराखियेनिश्चेकरिके २९ नित्यमच्छीनकूंमारेसोनर्मदाकेदोष
करिकेंप्राणीशिवलोकमेंजायनहींकाहेसेंनजावेभावनाहीनदिनाकारण ॥३०॥

इतिश्रीगरुडपुराणेटीकायां॥ सप्तविंशः २७ श्रीभगवान्‌कहे हैंजैसीचितकीप्रकृतिजैसीकर्मकोफलहैपरलोकपूर्वकर्मनकेवसहै नामपावेहै १ जैसीब्राह्मणगायस्त्रीअथवाबालक इतनेनकेवास्तेजोकोईप्राणत्यागेतोमोक्षपावे २ अनसनमेंप्राणछोडेसोसर्वबं धनसंछूटैब्राह्मणाकूंनित्यदानकोसोमोक्षपावे ३ इतनेमोक्षस्वर्गकेमार्गकहेकोनसेएकगोनकेपीछेंएकधर्मकीहानिहोयजहां

इतिश्रीगरुड॰ शालिग्राममहिमावर्णनोनामसप्तविंशोध्यायः २७ श्रीभगवानुवाच यादृक्‌चित्तप्रवृत्तिस्ता दृक्‌कर्मफलंनृणां परलोकगतास्ताहक्‌पूर्वकर्मानुसारतः ब्राह्मणार्थेगवार्थेवास्त्रीणांबालवधेषुच प्राणत्यागंकरोतियस्तुसर्वमोक्षमवाप्नुयात् २ अनाशकेमृतोयस्तुविमुक्तःसर्वबंधनैर्दत्वादानानिविप्रेभ्यो स्ततोमोक्षमवाप्नुयात् ३ येवैमोक्षमार्गाश्चस्वर्गमार्गास्तथैवच गोगृहेधर्महानेचमरणंरणतीर्थयो॥ ४ जीवंतिमरणंचैवद्वयसिद्धोतपीद्विजः जीवतिदानभोगाभ्यांमरणंरणतीर्थयोः॥५॥ उत्तमाधममध्य स्थमध्यमानस्यप्राणिनः आत्मानंतत्रसंकल्प्यःस्वर्गवासंलभेच्चिरं॥६॥

एकरणमेंएकतीर्थमेंमरे इतनेमोक्षस्वर्गकेमार्गहैं ७ इतनेमरणभलेहैं कोनसेजीवनेदानभोगकीपीछेमरे अथवारणमेंती र्थमेंमरेजीवतौअथवापंडितहोयतोमोक्षहै ५ उत्तम अधम मध्यम इतनेजीव रणतथातीर्थमेंमरेंतोस्वर्गलोककूंजातहै निश्चैकरिके॥६॥

हरीक्षेत्रभृगुक्षेत्रप्रभासक्षेत्रनर्मदात्रिपुष्करा इतनोंमेंमृत्युपावैतोस्वर्गकूंजावै ७ ब्रह्माकेदिनतांईमृत्युलोकमेंआवेनहींस्वर्गमेंव सेहै ८ वर्षकोलगोमेंदाब्राह्मणकुंदेयतोसमस्तपापनसंछूटेस्वर्गलोककूंजावै ९ ब्राह्मणकोकन्याकोविवाहकरेमोक्षपनेकुलसहित इइलोककेजावेहै १० बडेदाननकोइतनोफलहेकोनसेबावडीकूवाबगीचातलावइतनेबनावेताकोमहादानहै ११ जोकोईकूदान

हरिक्षेत्रेभृगुक्षेत्रेकुरुक्षेत्रेतथैवच प्रभासेश्रीस्थलेक्षेत्रेनर्मदेचत्रिपुष्करे ७ मृतेश्वरेमृतोयस्तुस्वर्गेवसति मानवाब्राह्मणदिवसंयावन्नावान्नायातिभूतले ८ वर्षवृत्तिंनयोदद्याद्ब्राह्मणाहनिसंयुते सर्वकल्मषमुक्तस्त्वस्व र्गलोकेमहीयते ९ कन्याविवाहयद्येस्तुब्राह्मणंवदविनमडइलोकेवसेत्सोपिस्वकुलेपरिवेष्टितः १० महादानानिद त्वातुतत्तत्फलमवाप्नुयात् वापीकूपतडागानिआरामानितथैवच ११ जीर्णोद्धारंप्रकुर्वीणाकुर्वंकर्तुफलंलभे त् जीर्णोधारेणवानेपानस्युणंविगुणंभवेत् १२ सीतवातपरंसमस्तसीचीनंकुटारकंकन्त्वविप्रस्यविदुषेप्रददातिकु टुविने १३ निष्ककोटीसहस्राणिकोटींत्वनरःस्वर्गेमहीयते स्त्रीसूदातुसंसृद्वासानिपानिनववजेत् ॥१४॥

लावचनोंपेफूटेकूआवनावेफूटीबावडीबनवावैइतनेफूटे। फिरसुधारेताकोद्विगुणपुण्यहै और पहलोनाम्ररा खेजोंकास्यों वस्त्रसिमायकेसीतकालमेंब्राह्मणकूंदेयऔरधूपकूमेटतहैऐसीठौरकरायकेंदेब्राह्मणकेकुटंबकूंदेय १३ सोसाढेतीन किरोडवर्षस्वर्गमेंरहेऔरजोस्त्रीभरतारकेसाथमरतीहोयतोस्वर्गमेंरहे॥१४॥

ब्राह्मणछटेमहीनाकरेछःत्रीतीसरेमहीनाकरेवैश्यदेढमहीनापीछैकरेसूद्रतुरतकरै २२ गंगाजायकेमरैस्ययताजमुनातटपैमंत्रय
वाठाकुरकेमंदिरपासमरे काहूकावडीपैकूपऊपरगोसालामेंकरेंअथवाघरकेआगेकरेब्राह्मणकूंवोलकेनारायणीवलिकरे॥
२४ पूर्णतर्पणकरेंनारायणवलिकीयहविधिहैसोकहंपुराणकेमंत्रकरिकेऔरवेदकेमंत्रपासूकरिकेअक्षतनसहितकरिकेवि

षण्मासंब्राह्मणंकुर्यात्त्रिमासंक्षत्रियोततः साईमासस्यवैश्यस्यसद्यःशूद्रेविधीयते २२ गंगायांयमुनायांचनिमि
षपुष्करेतडागेजलपूर्वेवदेवस्थानेचनिर्मले २३ वापीकूपगवांगोष्ठेगृहेचनिदेवालये कुशग्रेकारयेविप्रेविधिना
सहनाधनं २४ पूर्णेतुतर्पणंकार्यंमंत्रैःपौराणिकैर्दिकैः सर्वौषधिक्षतैर्विष्णुरुद्रस्यतर्पयेत् २५ अनादिनिधनोदेवंशाव
चक्रगदाधरअक्षयपुंडरीकाक्षप्रेतमोक्षप्रदोभव २६ वर्णाश्रमस्यावज्ञानेवानि कामगोविमत्सराजितेंद्रियमनाश्च
त्वाशुचिस्नानधर्मतत्परः २७ दानंधर्मरतशांतःश्रणम्यवाग्यतःशुचियजमानोभवेन्नत्रनकुर्वीतःश्राद्धेनैकादशे
नतुसर्वकर्मविधानेनएकैकाथ्रेसमाहितः २८

स्पकोनामलेकेतर्पणकरै २५ औरफिरकहाकरैऐसीवाणीवोलहेमहाराजकृष्णनादितुहीशंखचक्रगदापद्मधारेहैपुंडरीकाक्षते
रेनामहैऐसोतूहेप्रेतकीमुक्तिदयअस्तुतिकरे २७ तर्पणकेसमैरागद्वेषकोनहींक्रोधनकोइंद्रीनकीजीतेधर्मलाहुविषेअर्चिहोय
कैतैवैरतर्पणसमैं २८ दानमेंधर्ममेंशांतिमेंरतिरहेमायावामकरवालिजीतेअशुचिहोयऐसामानबंधनसूहवे २९

ग.पु.
टी.
१४४

जलश्रीराजवमेंहू सूंगराविशालसंपदीपंचामृतदहनतीवसुदेयन्यारिन्यारी ३० इतिश्रीगरुडपुराणभाषाटीकायांएकोनत्रिंशः २९ सर्वशास्त्रकूयम
दिनकपड़ाजोडीगातेनेरहपराहदेवेरसमस्तब्राह्मणकूंबारबारदेयभेदकरेनहीं२ दवंधनदेयधरतीपरपिंडधरकेंगंधपुष्पासत
चढावे २ वेदकीविधिसकरेब्राह्मणकूंदेयऔरतर्पणशंखसूंकरेअथवाताम्रपात्रसूंकरे २ ध्यानधरेमनमैवायोगोडधरतीपरे ५

नोपवीतीयवादयागोश्चमोक्षप्रियंभवान्महाविष्ण्वाचेशुभोदमुद्रांपंचगव्यंसमन्वितः ३० इतिश्रीगरुड० नारा
यणीवलिविधिकथनोनामएकोनविंशोध्यायः २९ श्रीभगवानुवाच दापयेत्सर्वसस्यानिक्षीरसौद्रसम
न्वितावस्त्रोपानहसंयुक्तःत्रयोदशपदानिच २ दारयेत्सर्वविप्रेभ्योनकुर्यात्मंक्तिवंधनं भूमौस्थितेषुपिं
डेषुगंधपुष्पाक्षतान्वितं २ दानव्यंसर्वविप्रेभ्योवेदशास्त्रविधानतः शंखपात्रेणवापात्रेतर्पणंवपृथक्
पृथक् ३ धान्यंधारणसंयुक्ताजानुभ्यावमजीगतःसर्वशास्त्रेतुशरेणएकोदिष्टंपृथक्पृथक् ४ आपोदेवा
मृत्युमतीयादिपिंडेन्नकल्पिना उपायमन्यहीनोषीहिलियिषनिवेदयेत् ५

सर्वशास्त्रनकोमतलेकेएकोदिष्टकरे ४ आपोदेवापृत्युमतीऐसीवेदकीऋचासंप्रथमभरे उपायमग्रहीनोपिया ऋचासं
दूसरीभरे एनस्वारदकचसुस्मयाऋचामंतीसरोभरेयेरवास थाऋचासूंचौथोभरेसर्पुत्रकायाऋचासंपांचवोंभरे ५॥

विस्नुको नाम लैकै एकादशपिंड श्रीभद्रकर्णेयारुचा स्वं विसर्जन करै ८ एकादशाघा भांति भरे फिर दूसरे दिन श्राद्ध को ब्राह्मण शा
स्त्र के जानन हारे कुं बोले ९ विद्यावंत सीलवंत ब्राह्मण कुं बोलि के सोने को विस्नु बनावे ताम्बे कौ शिव बनावे ५ ब्रह्मा रूपे को बनावे
यम लोहे को बनावे साम वेद संगो विंदो को अर्पण करे १० अग्नि मीने याऋचा सं पूर्व दिशा में ब्रह्मा को स्थापन करे इरेवत्या या मंत्र

दद्यात्तु विस्नुरुद्रस्य पिंडं चैकादशं तन भद्रं करणेति रीतिं च कुर्यात् पिंड विसर्जनम् ७ ततश्चैकादशे दैवत्यं श्राद्धं कु
र्यात्परेहनि विप्रानावाहयेत्तत्र श्रुत गुणज्ञानु शास्त्रके । विद्याशीलगुणोपेतान्नात्म विद्या विशारदः वि
ष्णुस्वर्णमयः कार्यो रुद्रं ताम्रं तथैव च ४ ब्रह्मा रौप्यमयस्तत्र यमन्लोहमयस्तथा मद्दिनः साम वेदेन गोविं
दपरिसाहु सत् १० अग्निमले ति मंत्रेण पूर्णो वंच प्रजापति इषेत्त्वा इति मंत्रेण दक्षिणे स्थापयेद्यमं ११ मध्य
चर्ममंडलं कृत्वा स्थाप्याप्योदर्भमयो नरः १२ पृथक् कुंभं ततस्थाप्य पंचरत्न समन्वितः वस्त्रयज्ञोपवीतानि
पृथक् भद्रायुतानि च १३ जयं कुर्यात्तथक तत्र ब्रह्मादौ देवतासु च तदा श्राद्धानि कुर्वीत देवतानां यथाविधि

संदक्षिण दिशा में यम को स्थापन करे ११ दर्भ को एक पुतला बनावे ब्रह्मा विस्नु रुद्र यम इनमें पांच मो प्रेत को पुतला बनावे न्यारे २ कुंभन में पंचरत्न धरे पं
चरत्न संकर तिनके ऊपर पंच वस्त्र यज्ञोपवीत अंगरखी न्यारे २ पहिरावे कलशन कूं १३ जाठौर न्यारे न्यारे जापजाप करे देवतान को श्राद्ध करे भली विधि

तिलन कौ जल सर्वौषधि मिलायके पिंडन कूं जलधारा देय आसन देय छत्र देय अंगरखी देय कमंडल देय १६ भोजन भाजन वस्त्र विधि
सं देय इन ने सर्व दान करै नावे केपात्र में तिलडारके सुवर्ण डारके दक्षिणा डारके देय १७ भगवान कहत हैं हे गरुड भले सुपात्र ब्राह्मण कुं देय वैसो दा
न १८ ऋग्वेद पाठी कुं धाती देय यजुर्वेदी कुं गऊ देय १९ साम वेद कूं अच्छा वस्त्र देय यम को नाम लेके तिल लोह दक्षिणा देय २० पीछे पुतला करे स

तिलोदकं समादाय सर्वौषधि समन्वितं आसने पानहौ श्चैव मुद्रिकां च कमंडलु कुशानामपि दत्तानां विभागं शृणु
काश्यप १६ भाजनं भोजनं चैव वस्त्रं न्यस्य विधं स्वतं नाम पात्रे तिले पूर्णे सहिरण्यमदक्षिणां १७ दद्यात् ब्राह्मण
मुख्याय विधियुक्तं खगेश्वर १८ ऋग्वेद पाठयो दद्यात् जानस्य वसुधरा जजुर्वेदमये विप्रे गां च दद्यात्पयस्वि
नी १९ समागाय सिवो द्वार्यं वदद्यात्कलशो दिकं यमोद्देशे तिला लोहं ततो दद्याच्च दक्षिणां २० यश्च पुत्तल कः का
र्यं सर्वौषधि समन्वितं कुशानामति दत्तानां विभागं शृणु काश्यप २१ कृष्णाजिनं समास्तीर्य कुशैश्च पुरुषाकृति
सतत्रायषष्टियुक्तं दत्ते प्रोक्तो स्थि संचयः २२ विनस्यनानि दत्तानि अंगुष्ठेषु पृथक् पृथक् चत्वारिंशत्सिरो भागं
ग्रीवायां दश विन्यसेत् ॥२३॥

वं सौषधिन संकरै दर्भ के विभाग करिके कौ सो हे गरुड २१ मृगत्वचा लायके कुशा को मनु
ष्य बनावे ३६० कुशन को पुतला बनावे २२ अंगुलिन में लैके सारे शरीर में बांधि ४० डारको सिर करै दश ४० कुशन की ग्रीवा करे २३
वीस २० दर्भकी कटिकी करे वीस दर्भ को पेट करे सो २० दर्भन को दोनो हाथ करौ बीस दर्भ की कटि की ठौर करै ॥२३

दीप॰ कीआरतकरै दोनोंदोनों कीजंघाकरै वानिसकी छातीकरे चारकोसिस्मकरे २५ केदोनोंपावकरै २५ दशनकोपावनकोअंगु
लीवनावैश्रीफलकोसिरवनावै २६ पंचरत्नमुखदेयमूलनकीनासिकाकरैगोमूत्रकोमूत्रकरैमट्ठाकीमज्जाकरै २७ धातु
कीठौरपाराधरै विष्टाकीठौरखलधरैसंधिनमेंतिलकूटकैधरैमेंसिलागात्रमेंधरे २८ जवकेचूनकोमासधरैमद्दितकोरुधिर

उरुद्वये शालवापि त्रिंशजंघाद्वयोन्यसेत्‌ दद्याच्चतुष्टयं सिसेपदद्यापादयोद्वयोः २५ दशापादांगुलिभागे
पंचमस्थिषु मांसे शोतनालिकेरं सिरस्थानेतु दद्याच नालिकेरं २६ पंचरत्नमुखेदत्त्वा मूलकं घ्राणमेव च॥
विशायामृत्तिकां दद्यात्‌ गोमूत्रेणातु मूत्रकं २७ पारकं धातुसंस्थाने पुरुषेविषस्तथा मनःसिलावनयाग
त्रैतिलकल्कंतुसंधिषु २८ यविष्टचन यामासं मधुशोणितमेवच केशेषु चजटाजूटं त्वचापातु मृगत्वचा॥
कर्णयोस्ताडपत्रंतुस्तनयोश्च वगंजकानाशायां सतपत्रं चकमलं नाभिमंडले ३० वृन्ताकंचवृषणेज्ञेयोलिं
गश्रजनजस्मृतं घृतेनाभ्यगमादायकौपानेतु त्रयस्मृतं ३१ कपूरागरुधूपैश्च शुभैर्माल्यसुगंधिभिः

केरकेशजटाजूटकेकरैमृगत्वाचाकीत्वचाकरै २९ ताडकेपातनकेकानकरै पीरीमिट्टीकेस्तनकरैकमलकीनासिकाकरै
कमलकीनाभिकरै ३० वेरणाकेवृषणकरैगाजरकोलिंगकरैवृधमस्नानकरावैकोपीनपहिरावे ३१ कपूरअगरधूप-
पुष्पमालासुगंधचढावैवस्त्रोत्तमचढावै ॥३२॥

150

नेत्रमेंसिंदूरलगावैहोदनमेंतांबूलधरैसर्वऔषधिकहीइनसंपूजन ३३ अग्निकोहोमकरैकुवेरकीऋचासे घृतकोपावनकरैमा
लिथाएकोजललगावै ३४ एकगौकोदानदेयभलीवहनदूधकीतिलदानकरैलोहासोनोंकपासनूणइननेसंपूर्णदानकरैपुनि
सप्तधान्यधरतीगौएकअधिकपावनहैतिलपात्रदानकरैऐसेत्रयोदशपददानदेयतोअधिकफलहै ३६ नापाछेवैतरणीका

सिंदूरलेपकोगोतुनांबूलोष्ठ ३३ इदंतपालवौषधयुतं यो नांकृत्वा पूजां यथोदितां ३३ अग्निकेचापिनिधिनाथऋ
पात्रेन्यसेकपातशी रामेश्रिपुननंतुमेववर्णपुनातु मिवेतंतुपार्श्वेनेकृत्वाशालियामाशिलोदके ३४ कि
मुद्दं च प्रदानव्यासुशीलागोयपस्विनातिलालोहं हिरण्यं चकर्पासं लवणं तथा ३५ सप्तधान्यं क्षितिर्गावः
कं पावनं स्मृतं तिलपात्रं ततो दद्यात्त्रयोदशपदानि च ३६ ततोवैतरणीं दद्यात्सर्वाभरणभूषितां कर्तव्या वै सर्व
भाद्रं प्रेतमुक्तिर्थहेतवे प्रेतमोक्षं ततः कुर्यात्‌ स्नानं तु दिनत्रयं दशाहं चकर्मपिंडकतं पूर्वकं ॥ ३८
इतिश्रीगरुडपुराणेप्रेतकल्पेनारायणबलिनामत्रिंशोध्यायः॥३०॥

निमित्तगौकोदानकरैअच्छेआभरणसर्वकरैतापाछेवैसेदशाहकरैप्रेतकीमुक्तिकेअर्थ ३७ तापाछेप्रेतकीमोक्षकरैतीनदिनकोसूतकलागेदशमेदिनपिंडभरेपूर्वकहियेपहिलेकहेतेसेहीकरिये ३८ इतिश्रीगरुडपुराणटीकायांत्रिंशोध्या॰ ३०

151

श्रीभगवान कहतहैं हेगरुड़ हषोत्सर्गआगेकहाहै तेसेंहूंकरै कार्तिकसूंआदिलेकें मासपूर्णिमासीकेदिनकरै १ विवाहउत्सववर्जे न श्राद्धकोनांदीमुखकौं हषकोसंस्कारकौ अग्निकोस्थापनकौ २ कोनसीठौरकौ बावडी केऊपर कौ तथा गोमनकी शालामेंक रि तथा कूपपै कौ विधिसंहषोत्सर्गकै ३ ब्राह्मणकुं बोलिकैं ३ भोजिनकेपातदे वालेन हिंस अच्छे सुंदर दर्भलायकें बा

श्रीभगवानुवाच हषोत्सर्गं प्रकुर्वीत विधिपूर्वं खगेश्वर कार्तिकादिषु मासेषु पूर्णमास्यां शुभे दिने १ विवाहोत्सर्जनं श्राद्धं नांदीमुखसमन्वितम् २ कुर्यात् हषस्य संस्कारं अग्निस्थापनमेव च २ वाप्यां कूपे गवां गोष्ठे स्थाने वा विधिवत्ततः विवाहविधिना वत्स कुर्याद्ब्राह्मणवाचनं ३ पात्रस्याच्छादनं तत्र उपमानं कुशादिकं प्रणीतं च होमांतं कुर्याद्ब्राह्मणेन तु ४ प्रथमं हरिं मंत्रेण न खड्गाज्यं हुताशने ५ आधाराज्यभागे तु प्रथमे श्लाग देवता ५ अग्ने रुद्राय सर्वाय सर्वोपपशुपतये अग्ने आसनाय भवाय महादेवाय ईशानाय यमाय च ६ पिष्टकेन मसकृतं होमं पुगादिभिश्च मंत्रवित् शुभगौश्रेष्ठ कृतं होमं वरुणाय यमेन च ॥७॥

सश्रेष्ठसूंहोमकरावै ४ पहिलेंहरिहरिकेएसेमंत्रसेंछैआवतीकौ अग्निदेयछोरसंआहूतीदेयदेवतानकुं ५ इतनेदेवतानको नाम लैकें होमकरै ६ आवकोहोमकोसुपारीकोहोमकौ दोनोंश्रेष्ठहोमकरैवरुणकीएसारकीआहूतीकौ ॥७॥

ऐसेश्रेष्ठहोमकरैऐसीवाणीकहेहेमहाराजमेतकीमोक्षहेउ ऐसीभांतिमोक्षकेअर्थहषोत्सर्गकरै ८ अपनेमित्रभाविकब्राह्मणकूंदक्षिणदेयखड्गकोजाप्यकरावैजासुंप्रेतमुक्तिगामीहोय ९ वच्छावाछियाकोएककरंराहोयजिनकोंस्नानकरावैसवच्छाहनेपहिरावे १० पतिष्ठाकरेवस्त्रनसहितपूछकोतर्पणकरैतो प्रेतमोक्षपावे ११ तापाछेंब्राह्मणकूंभोजनकरावैदक्षिणासूंसंतोषैफेरश्राद्धक

अथवा वाहनिहोमधार्यश्च तन्मजापतिसंस्तवमासनं कुर्यात् गणिताय रमोक्षाणां पवित्र अनवितस्य ब्राह्मणेन दक्षिणा ततः षडंगरुद्रजाप्येन प्रेतमोक्षमवाप्नुयात् १० एकुर्वति हृषश्चैव सचैव वत्सरीश्चस्नापयित्वा ततः कुर्यात्सर्वालंकारभूषितां प्रतिष्ठाप्य वस्त्रयुग्मं प्रेतमोक्षमवाप्नुयात् पुच्छे च तर्पणं कार्यं उत्थितं मंत्र पूर्वकं ११ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्दक्षिणाभिस्तु तोषयेत्ततः श्राद्धं समारभ्याएको दिष्टं यथाविधि १२ एवं विधिं समायुक्तं प्रेतमोक्षं करोति यः १३ इति श्रीगरुडे हषोत्सर्गविधिर्नोनाम एकविंशोध्यायः २१ यथा धेनुसहस्त्रेण वत्सो विंदति मातरं तद्वत्पूर्वकृतं कर्म कर्तारमुपगच्छति १ आदित्यो वरुणो विष्णुर्ब्रह्मा सोमहुताशनः शूलपाणिश्च भगवान् अभिनंदति भूमिदं ॥२॥

रेएकोदिष्टकरै १२ ऐसोविधिसूंकरैतो प्रेतमोक्षकोअधिकारीहोयया मेंकुछसंदेहनहीं यहविधिप्राणीकोसुखकीदाताहै १३ इतिश्रीगरुडपुराणेटीकायांएकविंशोध्यायः २१ श्रीभगवानकहतहैंहेगरुडजैसीभांतिहजारगौनमेंवच्छाअपनीमाताकूंपहिचानेयाप्रकारपूर्वकेकियेकर्मयाजीवकेसारे माय सदैरहतहैं १ सूर्यवरुणविष्णुब्रह्मासोमअग्निशिवइतनेसर्वदेवताकहतहैं ॥२॥

धरणी समान दान नहीं सांच समान धर्म नहीं झूंठ समान पाप नहीं भूमि समान और विधि नहीं ३ अग्नि को होम सुवर्ण गऊ धरती इनतीनों समान या संसार में कोई दान नहीं ४ नरक में से ती नों दान उद्धारें हैं गो धरती विद्या ये तीन दान संसार में श्रेष्ठ है ५ अनेक पाप करे पर पृथ्वी के दान ते सब उतरे हैं ६ लोभ करी के हे षकरि कें धरती चोरे सो नरक कुं जावे है ऐसा कोई कर सके नहीं ७ हे गरुड प्राण कं

नास्ति भूमिसमं दानं दानं नास्ति समो विधिर्नास्त्यसत्यसमो धर्मो नानृतात्पातकं परं ३ अग्नेरपत्यं प्रथमं सुवर्णं भूमिश्च सूर्यसुताश्च गावो लोकत्रयं तेन भवेच्च दत्तं यः काञ्चनं गां च महीं च दद्यात् ४ त्रीणि हरदानानि गावः पृथ्वी सरस्वती नरकादुद्धरन्त्येते जपपावनदोहनात् ५ कृत्वा बहूनि पापानि शास्त्राणि विपुलान्यपि अपि गोचर्ममात्रेण भूमिदानेन भुद्धति ६ लोहादूर्मिं च लाभेन लोभदूषादिश्चयः सयाति नरके घोरे ग्रस्तं न परिरक्षति ७ अकर्तव्यं न कर्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि कर्तव्यमेव कर्तव्यं इति धर्मविदो विदुः ८ वरमेकाप्यपहृता कुदत्तं तु गवां सितेन एकहस्ता सतं दत्ता स्वयमेव प्रबाधते स्वयमेव तु राधन्वा स्वयमेव प्रबाधते सयाराज नरकं याति यावदाहुति सम्प्लवं ॥ १०॥

हमें श्रावे जब करे या दान कुं तो अनेक अपराध लगे हैं ऐसें ही धर्म जानन हारे कहत है ८ हे गरुड नूतन गाय एक दे के उलटी लेतो सो गऊ दान देय तो भी प्रायश्चित उतरे नहीं ९ जो मनुष्य गौ को दान दे के फेर ले व्रह मनुष्य ब्रह्मा के परले ताईं नरक में [illegible] दुर्बल होय जाकुं दान दिया दीजे ॥ १०॥

दुर्बल ब्राह्मण को दान के को बडो महात्म है जो ब्राह्मण को विस्वास्वावे सो साठ हजार वर्ष विष्टा के कीडा कीडा होय निपावै १२ जो ब्राह्मण को हक्क खावे सो अपने सात कुल सहित नर्क में पडे है [illegible] जे मनोहर कोसाटो लाय अथवा पत्थर को साटो लाय वह तौ पवि जाय परन्तु ब्रह्मस्व पाप के नहीं १४ देव द्रव्य ब्राह्मण को धन शक्ति करे तो कोई नीजिन के कुल को क्षय होय न घावं घा पान होय निश्चे करिकें

पसुरणं दुर्बलेभ्यश्चैव ब्रह्मस्वं हरते नयः पच्यते षष्टिसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः १२ ब्रह्मस्वं प्रणयाद्भुक्तं दहत्यासप्तमं कुलं न देवचौर्य्यरूपेण दहत्यं चन्द्रतारकं १३ लोहचूर्णसमं मुक्तं च जरयेन्नरः ब्रह्मस्वं त्रिषु लोकेषु कः पुमान् जरयिष्यति १४ देवद्रव्यविनाशो वा ब्रह्मस्वहरणेन च कुलान्यकुलतां यान्ति पापेन ब्रह्मनानि च १५ ब्रह्मदानातिक्रमो नास्ति विधिर्विद्या विवर्जितैर्ज्वलंति मग्निमुल्लङ्घ्य सहि भस्म निहूयते १६ संक्रान्तियानि दानानि हव्यकव्ययुतानि च सप्त कल्पक्षयं यान्ति दद्यात्कर्पुनः पुनः १७ जलानि वं धनं वत्सयेन रा पापसंयुगा तन्न हाभ्यां विशुद्धंति दत्वा धेनुं नथाव्रषं १८ न्यून द्वादश वर्षश्च चतुर्वर्षाधिकस्य च प्रायश्चित्तं चरेन्माता पि

पाप स्र १५ संक्रांति अमावास्या [illegible] हव्य कव्य करिके देय देवता पितर पूजे सो सात कल्प ताईं भोगे है वह दान अक्षय है १७ जो पापी तलाव को जल फोडत है सो धेनु तथा बैल को दान करे जब शुद्ध होत है १८ द्वादश वर्ष संगी ते च्यार वर्ष संउपरांत पाप को तो माता पिता भुक्ते है रा कुं नहीं लगे है १९॥

वालकसंज्ञामें पापकरेसोपापमाताकूंलगेजाकोप्रायश्चितवालककूंनहींहैयमराजकोदंडलगेनहीं२० हेगरुडजिनकूंभक्ष
नेष्रूचांडालसर्पआत्मघातीहोयकेमरे२१ जलमूत्युहोयवाग्निसूंमरेवाद्युसूंमरेलंघनकरिकेमरेइननेपापीकहिये२२ पाषं
डविधवाव्यभिचारींनेसोमहापापीकहिये२३ वाकोश्राद्धसंस्कारपिंडसोले श्राद्धनहोयवाकुंसंस्कारनकरे२४ जिनकोंसंपूर्णवर्ष

आबालान्तजरस्यापि नापराधोनपातकेराजसंदंडेनतस्तिप्रायश्चित्तनविद्यते २० स्वेच्छयानास्यमरणंश्रृंगद
ष्ट्रीसरीसृपैचांडालदात्मघातीचविषवह्निसलाइनैस्तथा २१ जलाग्निराजवानेश्चविरहारादिसत्तथाप्राणानेवंभवेन्म
त्युर्घोरःक्रास्तेपापकर्मणः २२ पाषंडमाश्रिताश्चैवमहापातकनीस्तथास्त्रीयश्चविभिचारण्यस्वैरण्यंपतस्तथा २३
नतेषांस्यान्नवश्राद्धंनसंस्कारंनपिंडनंश्राद्धानिषोडशोक्तानिनभवंतिचनान्यपि २४ पूर्णेसंवत्सरेतेषां
निर्णयंकार्यदिबालभी एकादशीसमासाद्यशुक्लपक्षेचकृष्णपः विष्णुयमंचसंपूज्यगंधपुष्पादिभिस्तथा २५
दशपिंडानघृताक्तांश्चदर्भेतुमधुमर्दनान यज्ञोपवीतसतिलान्ध्यायंविष्णुयमंतथा॥ २६॥

होयजबक्रियाकरे एकादशीकेदिनसुवर्णकीयमकीप्रतिमाकोगंधपुष्पसूंपूजाकरैहेगरुडऐसेंकरेंशुक्लपक्षमेंकरै२५ दशपिं
डभरेवहुनघृतसूंदर्भविछावेसहतडारेयज्ञोपवीतपहरावैतिलककरेतिलडारतर्पणमेंविष्णुकोयमकोध्यानकरे॥ २६॥

[illegible] चंदनसूंपूजाकोरे[illegible]धूपदीपनैवेद्यभक्ष्यभोज्यइनसूंहेगरुडपूजाकरैतापाछेंब्राह्मणनिमंत्रै[illegible]के[illegible] कैसेकुलवंत
विद्यावंतनपसीसाधुशीलवंतऐसेब्राह्मणवोलेनवतथासाततथापांचअपनीसामर्थ्यहोयजितनेब्राह्मणबोलेतापाछेंदूसरेदिन
मध्यान्हविषेंविष्णुयमकोनामलेकेंविष्णुकोयमकोपूजाकरेब्राह्मणकुंउत्तरदिशाकूंबैठावे ३१ ब्राह्मणकेपावधोवेपूजाकरेब्राह्मणकूं

पुनरभ्यर्चयेद्विष्णुयमंकुंकुमचंदनैः २८ धूपदीपसनैवेद्यैर्भक्ष्यभोज्यैसमन्वितैएवंसंपूज्यपक्षीन्द्रविप्रांश्चैवनिमं
त्रयेत्२९ कुलीनविद्यानपांसुकानसाधुसीलसमन्वितानन्नवसप्तचवापचस्वसामर्थानुसारतः ३० अपरेह्निमध्यान्हे
विष्णुयमंतथार्चयेत्उदङ्मुखांस्तानविप्रांस्ताःसम्यगुपवेशयेत् ३१ आवाहनार्घदानाद्यैर्विष्णुंध्यासमर्चयेत्॥
यज्ञोपवीतकुर्वीतचैतनामप्रकीर्तयेत् ३२ चैतंयमंचविष्णुंचस्मरन्श्राद्धंसमाचरेत्अन्नेभ्यश्चापिसर्वेभ्यापिं
डदानार्थमुद्धरेत् ३३ दशपिंडान्पृथक्कुर्यात्त्वंचदद्यात्क्रमेणतु प्रथमंविष्णवेदद्यात्ब्रह्मणेच शिवायच॥
३४ दत्वादानानिविप्रानांतुसतांबूलंसदक्षिणांएकंविप्रंतुसंपूज्यहिरण्येनपन्नगेन्द्र ३५

विष्णुकोनामलेकेंयज्ञोपवीतपहिराएले हेंचैतकोनामलेकैंमुखसूंउच्चारकेंचैत ३३ प्रेतयमविष्णु[illegible]कूं ब्रह्मपाछेंपिंडभरे
समस्तपितृनकोनामलेकेंउद्धारकेअर्थ ३४ दशपिंडन्यारेभरेएकयमकोभरेएकप्रेतकोभरे एक विष्णुकोभरेएकशिवकोभरेए
कब्रह्माकोभरेऐसेपांचपिंडभरे ३५ तापाछेंब्राह्मणकुंतांबूलदक्षिणादेएकनकूंसुवर्णदेएकनकूंगौदेयएककूंधरतीदेयप्रेत

तापाछें ब्राह्मण जिमावे ब्राह्मण जिमायकें अपने बांधवसहित आप जेमे ऐसी भांति प्रेत स्वर्ग कूं जावे ३६ अपत्तान कहत हैं हे गरुड जो कोई गाफिलसों मर गयो होय जाकी ऐसी भांति क्रिया करे और जो कोई सर्प काटे सें मरो होय जाकी ऐसी विधि क्रिया करे सो अब कहत सो अब तुम सुनो ३७ हे गरुड एक नाग बनावे सोने को तथा माटी को पंचमी के दिन पूजा करे वा नाग की ३८ अर्घ करे अक्षत धूप दीप मा

मित्रं बंधुजनैः सार्द्धं सुखं भुंजीत वाग्यतः एवं कृते भविष्यंति स्वर्गलोकाय कामिनः ३६ अथ के प्रिस्त्रमादेव म्रियते शुद्रकादिभिः प्रमादाद्दिच्छया वापि सर्पदष्टः खगेश्वरः ३७ कृत्वानुपक्षयो नागं पंचमीषु प्रपूजयेत् कुर्यात् पिष्टमई तेषां नागा विति कृतं भुवि ३८ अर्घ्यं रक्तां सितैः पुष्पैः गंधवर्धनमेव च नदधो दधूपदीपं तु नं दुलं स्तु सितसये ३९ आम्रपिष्टं तथैवान्नं क्षीरं दक्षिणा वेदयेत् उपस्थाय च दे दे व्यं सुंच मुद्रां सिकोनिधि ४०
सुवर्ण सक्तितो नागं ततो दद्याद्द्विजोत्तमाः गां च धेनुं ततो ब्रूयात् प्रीयतां नागएड ति ४१ स्वशास्त्रोक्तविधानेन इत्थं कुर्यात् तथा तथा प्रेत त्वं मोक्षयत्वानु स्वर्गमार्गं जपेस्त्वहि ४२॥

ला चंदन पूजा करिके भली विधिसं ३९ आटो जो वाको दूधसों करिकें संतोषे फेर ऐसी वाणी कहे नाग कूं हे महाराज गति देउ ४०॥ सुवर्ण को नाग ब्राह्मण कूं देय गऊ देय फेरि ऐसी वाणी कहे जाते नाग प्रसन्न होय ४१ ऐसी विधि सें करे तो हे गरुड प्रेत मोक्ष अधिकारी होय स्वर्ग को जावे अ कछी गति पावे वा संकाइ बस्त को संदेह रहे न हीं निश्चे करिके॥ ४२॥

इति श्री गरुडपुराणे टीकायां द्वात्रिंशो ऽ॰ ३२ श्री भगवान कहत हैं हे गरुड अब सुनो जो कोई मृत्यु को दिन जाने न हीं जिनके दिन मा वस हैं २ हे गरुड जिन को तिथि तथा मास की खबर न हीं होय जिन को मार्ग शिर मास है तथा माघ को मास जानें २ जिन मनुष्यन के मृत्यु की दिन मास की खबर नहीं होय तो इन कहे हुए तिथि मासन में श्राद्ध करे ३ जो कोई परदेश में मरगयो होय तौ वाको सुने न तब स्नान करे तब

इति श्री गरुडे ऽ प्रेतकर्म व्रतिसूतकवर्णनो नाम द्वात्रिंशो ऽ॰ ३२ श्री भगवानुवाच न ज्ञायते मृहं थे तत्प्रेतने ऽपि पित्ते सति मासश्चेत्स्वपरिज्ञातः तदर्शे स्यान्मृतान्तिकं १ यदा मासो न विज्ञातो दिन से न नः नदा मार्गशिरे मासे माघे वात दिने भवेत् २ दिनमास विविज्ञाता मरणस्य यदा पुनः मृत्युर्वा नाश्रुते श्राद्धौ नौ थो क्रम शाकमेण तु ३ भवासं मंतरे वापि स्याता तौ विस्तृतो यदा नदानि मिलनो श्राद्धो पूर्ववत् तु मृतो दिके ४ गृहे सतो मोक्षयेपसो के ग्निविमृयते गृहे संशो चायशमेयत्वे प्रारब्ध श्राद्ध कर्मणा ५ सताग्नो ज्ञातनक्ता तं मृतकं मृतकं न था भोक्तुरेत न तदा दो यो म्पा नो दातापहुष्यति ६ इत्युक्तेन प्रकारेण यः कुर्यान्मृतवासरान् अविज्ञात मृता द्रव्या मृतकेना रघ्येस्य पुतौ॥ ७॥

शुद्ध होय ४ घर के विषें मरे होय तौ सूतक एकादशी ताई लगे है वाके घर को अन्न प्रभु वि है थु विना हैं श्राद्ध करे विना वाको अन्न भोजन करने योग्य है नहीं ५ हे गरुड और दाता भोक्ता कुं सूतक की खबर न हीं होय तौ दोस रवावनवाले कूं लगे हैं एनाकुं दीयन यैं ६ हे गरुड जिनकी दिन मास की खबर न हीं होय सो या भांति सों करे तो प्रेत को तारे है निश्चे करिके॥ ७॥

हे गरुड पुण्यके प्रताप स्वर्गलोककूं जावे सुखभुक्ते है स्वर्गभोगकें फेर मृत्युलोकमें आवे है तौ रूप धंत बलपराक्रम बहुत मिले है ८ हे गरुड वेदक हे हे पुन्यवंत हैं जिनकूं या लोकमें और परलोकमें सुखसमान है हे गरुड यह वचन वारंवार सत्य है ९ असत्य नहिं है ८ कैसें धर्मकी जय अधर्मकी जय नहीं सत्यकी जय है असत्यकी नहीं क्षमाकी जय क्रोधकी जय नहीं विस्नुकी जय दैत्यकी जय नहीं सांच वाले तौ सारी वातया

स्वकृतस्य प्रभावेण स्वर्गो नामविधेनृणां भोग्या सौख्यानि रूपं च बलवुद्धिपराक्रमं ८ सत्यं पुनर्वदाम्येव जायते तत्र पात्रच सत्यं सत्यं पुनः सत्यं वेदवाक्यं न चान्यथा ९ धर्मो जयति नाधर्मो सत्यं जयति नानृतं क्षमा जायति न क्रोधो विष्णुर्जयति नासुरा १० गरुड उवाच भगवन्देवदेवेश कृपया परया वद दानदानस्य माहात्म्यं वैतरण्यां प्रमाणक ११ श्रीभगवानुवाच या सा वैतरणी नाम यममार्गे महासरित् यत प्रमाणेन चक्षा देवी शृणु भयापह १२ पूयशोणिततोयाद्या मांसकर्दमसंकुला पापिनं चागतं दृष्ट्वा नानाभयसमावृता १३ शतयोजनविस्तीर्णा पृथुलेप्ता महासरित् कश्मला दुस्तरा पापैर्दृष्टमात्रभयापहा । १४॥

कुं प्राप्ति है १० अब गरुड पूछे है हे भगवान तुम कृपा करिकें कहो दानको महात्म कहो वैतरणीको प्रमाण कहो ११ श्रीभगवान् कहत हैं
हे गरुड वैतरणी महानदी है यमराजके मार्ग विषें आवत हैं जाको यमाण देखकें महाभय उपजे है १२ जा नदीमें रुधिर वहे मांसकी कीच है पापी जीव देषकें डरे हैं १३ सो जोजनको विस्तार है पापी मनुष्यकूं दुस्तर है देखकें भाजे हैं पापी मनुष्यनकुं वहुत भय उपजे हे ॥१४

वावैतरणीमें पापी डूवे हैं और या मकार वार वार गने ... [illegible] ... कारके जीव हैं वैतरणी नदीमें देखत हैं इन चार प्रकारके जीवनमें मुंजा गैयो ... [illegible] ... है सो ईनरे हैं और सवड वे है १६ माता पिता गुरु आचार्य इनको अनादर करे सो वावैतरणीमें पचे हैं १७ सीलवंत स्वपनेधर्ममें रति हैं ऐसी स्त्रीकूं त्याग देय सो वैतरणीमें पचे है १८ विश्वासतया

पातंति यो मर्त्यो ये च कंदमानस्तु पापिनः हानान पुत्र मामेति मलयंति मुहुर्मुहुः १५ चतुर्विधे प्राणगणो दृष्ट्वा तां महानदीं नरं त्यनस्य दावेन अन्यथा च पतंति वै १६ मातरं ये भवंसंतो आचार्यं गुरुमेव च अवमानंति ये मूढो तिषां स नरणां नदी १७ साधुशीलजदास्य स्वधर्मे निपछ्यां परित्यजंति ये मूढा ते पापपतनक्रवं १८ विश्वासं प्रतिपापन्ने स्वामिमित्रं च पस्विनं स्त्री बालविकलादीनां विदमन्वेयंति ते १९ अग्निदो गारदश्चैव क्रूदस्य सोच मद्यप ... ज विध्वंसकश्चैव राशिणा... श्री कैतुनी कथाभंगकराश्चैव खयं दत्तापहारकः क्षेत्र सेतुविभेदी च पारदारप्रधर्षकः २१ ब्राह्मणो रसविक्रेता नन्यायो विषलिपति यो घनस्य तृषार्तस्य पाली भेद करोति य ॥२२॥

... अपने स्वामीको अथवा अपने मंत्रीको द्रोही होय स्त्री वालक विकल जिनकूं मारे १९ अग्नि लगावे विषदेके मारे भ्रष्ट हीमासवी भरे जज्ञ विध्वंस करे भ्रष्टे ब्रासणकूं भोजन न देय पर्वमें मैथुन करे २० कथाभंग करे देनी करिके न देय नालाव स्वेनकी मरजा दतोडे ... स्त्रीसं भोग करे इतने पाप करनवारे वैतरनीमें पचे हैं २१ वासण रस वेचे नया भोजनमें विष मिलाय दे गौनकूं पानी नहीं पीवन दे

कुमारीकन्याकूंदूषणलगावैतौदानदेकेपीछेकपिलागऊकोदूधपीवैऔरब्राह्मणमांसभोजनकरैतैऐसोपापिवैतरणीमें २३ कृ
पणनास्तिककठोरसदाअहंकारीसदाक्रोधीअपनोवचनपालेनहीं इतनेपापवैतरणीनदीमेंपचेहैं २४ काहूनेआपसूंएमानकिया
नाकूंविसारदेयसंलापउपजावैदेयेपापभीवनरणीमेंपचेहैं २५ ऐसेपापीवैतरणीमेंनरोचाहेसोतिरेनहींयाकोएकउपावहैजोतिलोंचा

कन्याविदूषकश्चैवदानंदत्वातुतावकाःसुद्दस्तुकापिलापायेब्राह्मणेमासभोजनं २३ कृपणोनास्तिकःसुद्दसततस्यानव
सेनवासदामर्षीसदाक्रोधीनिजवाक्यप्रमाणतःकृतघ्नोवर्गमेनापिवैतरणयावसेचिरं २४ कदापिभाग्ययोगेनन
रणेक्षाभवेद्यदिसानुकुलाभवेद्येननदाकर्णयकाश्यपः २६ अपनेविषुवेपुण्येव्यतिपातेदिनक्षयेचंद्रसूर्यग्रहेवापिसंक्रां
तौदर्शवासरे २७ अन्येषुपुण्यकालेषुदीयतेदानमुत्तमंयदानलाभवेद्वापिश्रद्धादानंप्रतिध्रुवं २८ तदेवदानकालस्याघा
नःसंपनिरास्थिरास्थिराणिशरीराणिविभवोलक्ष्मिवास्वतः २९ नित्यंसंनिहितोमृत्युःकर्तव्योधर्मसंचयः ३० कृष्णावापाटलावाधि
कुर्यादिनराणीशुभाःस्वर्णश्रृंगीरूपंखुरीनाम्रपृष्ठिचदोहनी ३१

हैतोवडेपुन्यकरे ३० जोइनकालकेविषेंदानकरेउमकेसंपतिस्थिरहैऔरशरीरलक्ष्मीआनंदसेरहे २९ जिनमेंअपनोमृत्युजानि
केसंचयकरेसोवे।नरानीधर्ममनुष्यउद्धारेहैहेगरुडएकऔरभीतिरणेकोउपायहैसोमेंतोसूंकहतहूं ३० कालीतथापीलीगौश्रम
वनावेमुक्केलक्षणकरिकेंमंयुक्तगऊदेयसुवर्णकेसींगरूपेकेखुरतांबेकीपीठकांसीकीदोहनीदेहैं ३१॥

श्यामवस्त्रउढावैसोतिनकोकृष्णवस्त्रधान्यकपाससुवर्णनांवोइनतीविधिसंकरिकेंदेयतौमनुष्यधैतरणीनेरसुखसेंउति
पनि ३२ अच्छीविधिमंवीकरिकेजलकुशालेकरयमहारेमहाघोरमेंवैतरणसदापकरिये ३३ ऐसीवाणीकहेहैवैतरणीतुमकेंमनम
स्कारकरिकेंविष्णुरूपहेद्विजश्रेष्ठहे ३४ मनदक्षिणसहितवैतरणीकेनिमित्तजोगौदीनीहैसोमेरेपितागाणेरहियो ३५ इतिश्रीगरु

कृष्णवस्त्रयुगाक्त्रांसप्तधान्यसमन्वितांकर्पासद्रोहसिखरैआसनंताम्रभाजने ३२ इदंमुच्चारयेन्मंत्रंसंग्रह्यज
लनांकुशाम्यमद्वारेमहाघोरेकृतावैतरणीनदीम् ३३ तर्तुकामोददाम्येनांतुभ्यंवैतरणीनमःविष्णुरूपद्विजश्रेष्ठमामुद्धर
महिश्वरः ३४ सदक्षिणामयादत्तातुभ्यंवैतरणेद्विगौमावोमयायातसंतुणावेमेसंतुष्टः ३५ इतिश्रीगरुड० प्रे० वैतरणीदा
नविधिनामत्रयस्त्रिंशोध्यायः ३३ गरुडउवाचयथोकप्तनंमेसुणंनथाकष्टतरोभवेत्एवंतुश्रोतुमिच्छामिजायतेपापिनोय
थाशाककर्मविपाकेनयथावितरभागभवेत्यांयांयोनिमवाप्नोतितथारूपं ३ श्रायतेनन्मेवदः भुरश्रेष्ठसमासेनाधिकाद्ध
न २ श्रीभगवानुवाचशुभाशुभंफलंनार्क्षमननोगेनफलहज्जायतेनष्ठवौर्यसुतानिमेश्रृणुभक्तितः ३॥

इतिकायां ३३ अवगरुडपूछनहैअहोमहाराजजैसोवर्णनंतैसोसुणेहैसोमहाराजपापीकहांयकाइजन्मेहैसोकहेमेरीसुनवे
कीइच्छाहे १ हेमहाराजअपनेकर्मनसूंनरकमेंजातहैफेरियोनिमेंआवेहैसोकेसेआवेहैदेवतानमेंसोमोसुसंक्षेपकहो २ श्रीकृ
ष्णकहतहैं हेगरुडतुमसुनोवुरकर्मकरैसोमनुष्यजैसेलक्षणसूंजन्मेसोकहूं ॥३॥

एकनकूं गुरूसमभ्भावै। एकनकूं राजादंड देतहैं। एकनकूं या लोकमेंगुप्तपापकोहै जिनकूं यमराजपीडादेनहै ४ प्रायश्चित्यमलो
कमेंभोग्यकेया संसारमेंश्रावैहै फेरिश्नेकजीवनकीयोनिपावैहै ५ फिरमनुष्ययोनिमेंआवैहै सोपापकीनिसानीलावैहै सोहेगरुड
मेंकहतहूंसोसुणतू ६ सदांभूंठवोलेसोगर्दभहोतहै ७ घांभूंठवोलेगौनविषेंभूंठवोलेसोयरिकिंगूंगोहोतहै ब्राह्मणकुंमारे

गुरुरात्मावतांशास्ताशास्ताराजादुरात्मनायहप्रच्छन्नपापानांशास्तावैदस्वतोयमः४ प्रायश्चित्तेषुचीर्णेषुयमलो
केषुह्यनेकधायातनाभिविमुक्तानाम्नेकजीवसंततिः५ गत्वामानुष्यभावेषुपापचिन्हाभवंतितेनान्यहंतव
चिन्हानिकथयिष्यामिखगेनमः६ पहीत्वानाततनामसर्वागत्वाचैवपुनःपुनःविलीर्णपानतालेषुलोकमायाति
चिन्हिता७ गंधर्वोनृतवादीस्यान्मूकश्चैववावानृतेब्रह्महाजायतेकुष्ठीस्याक्दंतश्वमद्यपः॥८॥ कुनखी
स्वर्णहर्ताचदुश्चिमागुरुतल्पकः संयोगाधीनयोनस्यादरिद्रोदतवानलः॥९॥

सोमनुष्यमरिकेंकुष्टिहोतहै जोमदरापानकरेउनकेदांतकालेहोतहै ८ सुवर्णचोरैसोबिडालकीयोनिपावैहै गुरुकी
स्त्रीसंसंगकरेतोफटेफटेनखहोतहै नीचयोनिपावेउनकीचचाहलीनकीसांहोतहै औरनीचसंगतिकरेतोनीच
योनिपावे॥९॥

ब्राह्मणहोयकेश्रश्रावककेंजाचेसोग्रामसूकरयोनिपावेबहुतजाचेतोगधाकीयोनिपावेविनानोतेभोजनकरेतोकागकीयोनिपा
वे१० परिष्कापिनाभोजनकरेहोयनमेंवानरहोयप्रथोश्रन्नचोरेसोविलावहोयवनमेंश्रग्निलगावेसोपटवीजनाहोय११ विनाबु
लायेकहूंजावेसोवुलवुलकीयोनिपावेभूंठोश्रन्नखायश्रथवाभूंठोश्रन्नब्राह्मणकूंदेयसोस्वानकीयोनिपावैनिषेकरिके१२

ग्रामसूकरतांयातिश्रयाचियाचिकोद्विजखरोचैवहुयानित्नाकाकोनिमंत्रभोजनात्१०श्रपरीक्षत
भोगीस्याद्वानरोविजनेवनेमांजारसन्नहर्ताचखद्योतकृच्छदेहकः११श्रवधांययुगछेनवलिव
र्दोभवेत्नुशःश्रन्नपर्युषितेविप्रदादातुकुब्जकोव१२ मत्सर्यादपिजात्यंधोजन्मांधपुस्तकंहरन्फलान्या
हरितोपत्यंम्रियतेनात्रसंशयः१४ श्रदत्त्वाभक्ष्यमलातिश्ननपत्योभवेन्नरोहूरंवस्त्रंभवेद्गोधागरदःपव
नाशन१४ श्रव्रज्यागमनाद्राजन्नुसमभवेन्नरुविवित्रकःचातकोजलहर्तास्याद्धनहर्तासमूत्रकः१५

सदांसहंकारीहोयसोमरिकेंश्रंधोहोयपुस्तकचोरैसोजन्मभरश्रंधोहोयफलकीचोरीकरेजाकीसंतानजीवैनहीं१३ स्त्रीकुंदियाविदे
खायसोश्रपुत्रीहोयश्रौरवस्त्रकीचोरीकरेसोगोहकीयोनिपावेश्रौरविषदेकेंमारैतोश्रजगरकीयोनिपावे१४ श्रौरकोईश्रापकेपासश्राश्रा१७
हिकेंबाहरजायहेजिनश्रीसदांश्रफविरहतहैश्रन्नचोरेसोश्रन्नकहोयश्रन्नचोरेसोमूषोहोय॥१५॥

यौवनपाये बिना स्त्रीकों सेवै तौ सर्प कीयोनि पावै गुरुकी स्त्रीकी अभिलाषा राखे तौ करकेटा कीयोनि पावै २६ पराई निंदा करे सो म
च्छीकीयोनि पावै अयुक्त वस्तु वेचै तौ विक्रयसहोय २७ हीनजाति सों रति करे तौ हीजरा होय अपने पुत्र नकूं ठगै सो उल्लू कीयोनि पा
वै एकादशीकों जीमै तौ कुत्ता कीयोनि पावै २८ दान दें नां कहिकें न देय तौ स्याल कीयोनि पावै राजा की स्त्री सुं भोग करे सो कछुवा की

अप्राप्तयौवनं सेवन्भवेत्सर्प इति स्मृतः गुरुदाराभिलाषी च कृकलासो भवेद्ध्रुवं २६ जलप्रस्रवणं यानि
विद्यामत्स्यो भवेन्नरः अविक्रियानुविक्रीया विक्रयसो भवेन्नरः २७ अयोनिगुह्यको हिस्यात् उलूकत्वं
चनान्मृतस्यैकादशी हेतु भुंजाश्वानिभिजायते २८ प्रतिश्रुनिहि जेभ्योच दानंदद्बुकं भवेत् राजाग्ना
भवेद्दुष्टसूकरो विटवराहकः २६ परवादी हि जातीनां लभते कांक्ष्या तनुः दुर्भगाफलविक्रेया वृकश्च वृषली
पतिः २० मार्जारिनिपदस्पृष्टदुर्गंधश्च सुमधहृतकन्याघाती भवेद्यास्तु चांडालः शोभिजायते सदा कामी भु
वेद्यस्तु चैनको भवति ध्रुवं २१ वस्त्रचौरोपरं हेषीरजको भवति नरः स्वामिघाती महापापी पाषाणे किरको भवेत्

योनि पावै विधवा स्त्री कूं वेचै सो नाहरकी योनि पावै अथवा वावक्को फल वेचै तौ वृषलीपति होय २० पांवसूं गौ कूं मारे सो विलाव कीयो
निपावै सुगंधि चोरे सो मरिकें दुर्गंधि होय बुरीवासना वैताके शरीर में कंन्याकूं मारे सो चांडाल होत है सदां कामी होय सो मरिकें
चैटकी योनि पावै निश्चै करिके २१ कपरा चोरे सो धोवी की योनि पावै अपने स्वामी कों मारे सो पत्थरको कीडा होता है ॥२२॥

रके फेरी नके सोगीधकीयोनि पावै घृत चोरे सो मरिकें कोढी होइहै २३ हे गरुड वहुन नयाथा योरो चोरे सो सै सो फलपावै ......
नें धि होय २४ भगवान कहत हैं हे गरुड गौ सो दुष्ट कर्म करै सो मनुष्य नरक में परे अनेक कल्पना ईके खाको पापर है फेर यो मी यो
नि पाय के भुक्ते है यां ... ... नहीं २५ सो जन्म नाई है गरुड सम ... योनिमें भुक्ते है अमे हैं अपने किये शुभ अशुभ कर्म भुक्ते हैं

धर्महारी पुरुषो यस्य मानेष्ट घ्रनाभवेत् घृतहारी भवेत्कुष्ठीनास्मिन्न पिजायते २४ महानहापि पानकं
सत्यं वाय दिवा वहुहस्ता दै विदिताऽन्येवः इस्यनै वेश्य मानवा २४ एवं कुकर्म कर्ता हि भुक्त्वा वनरकान्
कर्मान्जायते कर्म शेषेण नृणां चिनायु घोवुषु २५ ततो जन्म शतं मर्त्यं सर्वजंतुषु काश्यपः जायते न
च संदेही तमी मतेशुभे शुभे २६ स्त्रीपुंसो स्तु प्रसंगेन विरुद्ध शाक शोणितं पंचभूत समाजेन सपष्ट
पाम:पुमान् २७ इंद्रियाणि मनप्राण ज्ञानमायुसुखं धृति धारणं प्रेरणा दुःखं मिथ्याहंकारा व
च ... स्वकर्म स्य वहुस्य तदा गर्भे विष्टिभवेदिति पुरमाया याया सो कं तत्र जे तो हिल सणम २८

हे गरुड ऐसें यह मनुष्य स्त्री पुरुष के रुधिर वीर्य एकठौरो होत है पंचमहा भूत आयकें प्राणी होत हैं छटो मन परम पुरुष
रूप ठौर होत हैं हे गरुड ऐसें यह मनुष्य उपजे है इंद्रिय मन प्राण ज्ञान आयु वैसे सुख धीरज धारणा होत अहंकार सम स्त
काम्यकें मातृ ... हैं संग ही २८ अपने कर्मन के योग धर्म गर्भ आवे है प्राणी के पैले जो दीया तिष्णा पके गर्भ में जीव प्रवेश होत है २८

ग॰ पु॰
टी॰
१६६

यांभांनिहेगरुड चारस्थानमेंजीवफिरेहैआगेमेंकह्योजीवकीउत्पतिविनाहेगरुडमेंपहिलेंकह्योतेमेंहीजाणिये ३० धर्मकरि
केऊंचीगतिपावेअपराधकरिकेनीचगतिपावेयाकारणसूंहेगरुडसमस्तवर्णअपनोधर्मछोडेंनहीं ३१ देवयोनितथामनुष्ययो
निदानभोक्तव्यनामभुक्तहैसोहेगरुडकर्मकोफलहै ३२ अकर्ममेंरतिरहैकामक्रोधसूंसंयुक्तरहेसोनरकमेंपहुंचेहै ३३ धर्मोज

एवंमपवर्तनेचक्रं भूतग्रामचतुर्विधं समुत्पत्यविनाशाश्चजायतेनात्र्सदेहिनां ३० ऊर्द्धगतिस्वधर्मेण अधर्मेण
चधोगतिजायतेसर्ववर्णानांस्वधर्मेवलनतवगः ३१ देवत्वंमानुषत्वंचदानंभोगादिकाक्रियापारद्यंतेवे
णतेयनतसर्वंकर्मजं फलं ३२ अकर्मविहिते।घोरेकामक्रोधार्जितेशुभे नरकेपतनेघोरेयस्योनामपित्र
जेत् ३३ लाभस्तेषांजयस्तेषांकुतस्तेषांपराजययेषामंदिवरस्यामोहृदयस्थोजनार्दनः ३४ धर्मोजयति
नाधर्मसत्यंजयतिनानृतंयेषामेवंस्थिराभक्तिनतेषांदुर्गतिर्भवेत् ३५ हरिभागीरथीविप्राविप्राभागी
रथीहरी भागीरथीहरीविप्रासारमेकंजगत्त्रयं॥३६

यतिजिनकीसदांजयहैजिनकेहृदेमेंश्रीजनार्दनभगवानवसेंहैंउनकीहारकवहुनहींहोय ३४ हेगरुडजैसेंधर्मकीजीन
हैपापजीतेनहींसत्यकिजीनहैअसत्यकीजीननहींक्षमाकीजीनहैक्रोधकीजीतनहींजैसेंविष्णुभगवानकीसदांजीनअसु
रनकीसदांहारहैउनकूंसदालभ्यहैनिश्चेकरिके ३५ एकतोहरिगंगाभागीरथीब्राह्मणयेतीनवस्तुसंसारविषेंसारहै॥३६

ग॰ पु॰
टी॰
१६७

जिनकेमनमेंपुंडरीकाक्ष भगवानसोमंगलसदांविनहैं ३७ मंगलरूपी भगवानकोनामहै जिनकेमनमेंपुंडरीकाक्षश्रीगरुडध्वजबसेहैं
उनकेसदामंगलहै ३८ सूतजीसौनकादिकनसोंकहतहैंऐसेंवचनश्रीभगवानकोसुनिकेंगरुडजीकेमनमें[illegible]पज्योनवतीनिश्चक्षि
णकीनीगरुडजीनेंभगवानकोवाणीसुनिसुनिकेंगरुडजीकोज्ञानवहुनउपज्योकथाकुंसुनिकें[illegible]यहप्रेतकीकथाश्रवणक

अपवित्रंपवित्रोवासर्वावस्थांगतोपिवायस्मरेत्पुंडरीकाक्षंसबाह्याभ्यंतरशुचि ३७ मंगलंभगवान्विष्णु
मंगलंगरुडध्वज मंगलंपुंडरीकाक्षंमंगलायतनोहरी ३८ श्रीसूतउवाच इतिविष्णुवचः श्रुत्वा गरुडो
हृष्टमानसः नेविष्णुविधिरिकम्य ज्ञानवान्समजायतः ३९ यस्यस्मरणमात्रेण धर्मंजयचदायनिभग
वानगरुडयाख्यानेकथापापहरापरा ४० अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानिच कथाश्रवणमात्रेण
सर्वधर्मकृतानिते ४१ इतिश्रीगरुडपुराणेप्रेतकल्पेअष्टादशीकसाहस्रसंहितायांउत्तरखंडेकृस्म
वैनतेयसंवादेजन्मदेवासूचनोनामचतुर्त्रिंशोध्यायः ३४

रिजिनकूंयमलोककोभयकहूंव्यापै[illegible]श्रीभगवानगरुडकोसंवादहैयेकथाअनन्तजीनें[illegible]जरूपि
श्वासकूंसौनकादिकनकुंसुना[illegible]याकथाकुंनित्यश्रवण[illegible]कसर्वपापनाशहैऔरदयाउपजैधर्मक
रिकेनयरहेजयहोय ४० सहस्र[illegible]अश्वमेधयज्ञोंकीफलप्रापतहैऔरसेंकडोंबाजपेययज्ञोंकीफल[illegible]

ग॰ पु॰ यज्ञोंकी बराबर फल है कर वाने वाले॰ और कथा के श्रवण मात्र करिकें सम्पूर्ण धर्म करि उन मनुष्योंन निश्चें करिकें न नजानिये

ग॰ पु॰
टी॰
१९८

इति श्री गरुड पुराणे प्रेतकल्पे सटीकायां अष्टादशोक साहस्र संहितायां उत्तर खण्डे कृष्ण वैनतेय संवादे नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४

सम्वत् १९४० माघ शुक्ला ५ भृगौ